# अ़ली ﷺ फि अल-क़ुरआन

(अमीरुल मो'मिनीन के फज़ाइल से मुता'ल्लिक आयाते .क़ुरआनी का हसीन मजमुआ)


मुरत्तब
**खुसरो क़ासिम**

मुतरजिम (हिन्दी)
**डॉ. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी**

अमीरूल मो'मिनीन ﷺ के फज़ाइल से मुता'ल्लिक
आयाते कुरआनी का हसीन मजमूआ

मुरत्तब
खुसरो क़ासिम

हिन्दी लिपियांतर
डॉ. शहेज़ादहुसैन काज़ी

| | | |
|---|---|---|
| **किताब का नाम** | : | अ़ली फिल कुरआन |
| **मुरत्तब** | : | ख़ुसरो क़ासिम<br>असिस्टेंट प्रॉफेसर<br>मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट<br>अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़<br>उत्तरप्रदेश, भारत |
| **हिन्दी लिपियांतर** | : | डॉ. शहेज़ादहुसैन काज़ी<br>फाउन्डर एन्ड चेरमॅन<br>ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),<br>मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत |
| **सन इशाअत** | : | **2018** |
| **हदिया** | : | रु. 200/- |
| **कम्पोझिंग एन्ड प्रिन्टिंग** | : | इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत) (गुजरात) |
| **नाशिर** | : | इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत) (गुजरात) & अली एकेडमी (यु.पी.) |

## मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन(अहले सुन्नत), मोडासा, गुजरात

**Mo. 8511021786**

# पेश लफ्ज़

हज़रत अली ﷺ की शान में क़ुरआन पाक में बहुत सी आयात वारिद हुई हैं, लेकिन अल्लामा इब्न कसीर ने "अलबिदाया वन्निहाया" में ज़िक्र फ़रमाया है के आएं मौसूफ़ की शान में नाज़िल होने वाली आयात से मुता'ल्लिक़ कोई सहीह रिवायत नहीं पाई जाती। इसलिए मैंने मुनासिब समझा के हज़रात मुफ़स्सिरीन ने जिन आयात को हज़रत अली ﷺ की शान में नाज़िल शुदा बताया है उनेह मुख़्तलिफ़ तफ़सीरों से जमा कर दिया जाए, ताकि ये वाज़ेह हो सके के हज़रत अली ﷺ की शान में भी बहुत सी आयात वारिद हुई हैं।

अल्लाह ﷻ मेरी इस काविश को क़ुबूल फ़रमाए और लगज़िशों से दरगुज़र फ़रमाए। आमीन।

तालिब-ए-शफ़ाअत-ए-रसूल ﷺ
**ख़ुसरो क़ासिम**
असि० प्रोफेसर, मैकानिकल इंजिनिरिंग डिपार्टमेंट
अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़

## अर्ज़े मुतरजिम

### (अनुवादक का निवेदन)

अल्लाह ﷻ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ! के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ! के रसूल है। अल्लाह ﷻ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **“अ़ली फिल कुरआन”** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

आज हमारी आँख़ों के सामने एक ऐसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमे नासबीय्यत और ख़ारजिय्यत उरुज़ पकड़ रही है, बुग्ज़े मौला अली رضي الله عنه को कुछ फिरका परस्त लोंगों ने ख़ुद के मस्लक का अहम हिस्सा बना दिया है। ऐसे हालात में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के **Mechanical Engineering Department** के **Assistant Professor हज़रत खुसरो क़ासिम साहब** ने जिम्मा उठाया कि ऐसे नासबी, ख़ारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लके अह्ले सुन्नत में मुहब्बत-ए-अहले बैत عليهم السلام और मुहब्बत-ए-अली رضي الله عنه ये शीयत नहीं है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बलकि ये तो अह्ले सुन्नत का **1400** साल से चला आ रहा मजबूत अक़ीदा है, दीन का मजबूत सतून है। ये बात प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने “शान-ए-अह्ले बैत” में सिर्फ **20** (बीस) सालो में **160** से भी ज़्यादा किताबे लिख़कर बता दिया है। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने इन किताबो में सिर्फ और सिर्फ अह्ले सुन्नत की किताबो के हवाल पेश किये जो मस्लके अह्ले सुन्नत के **1400** साल के मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन मुहक़्क़ीन का इकठ्ठा किया हुआ सरमाया है। **1400** साल के इस समन्दर को एक जगह पर इकठ्ठा करने का काम प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने किया हैं. प्रोफेसर साहब ने ख़ुद को अह्ले सुन्नत कहलाने वाले अह्ल-ए-हदीस और अह्ल-ए-देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबो के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब को हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रज़ा عليه السلام से मिलती है जिसे इस हकीर ने अपने आँख़ों से देख़ी हैं. अल्लाह ﷻ! उनके इस काम का बदला अता फरमाए और ब-रोज-ए-कयामत उन को, उनकी नस्लों को ख़ातमुन्नबी रसूलल्लाह ﷺ के हाथो जाम-ए-कौसर नसीब फरमाये ......... आमीन।

ये किताब **“अ़ली फिल कुरआन”** जिस में मैं ने प्रोफेसर साहब से इजाज़त ले कर इस को हिन्दी और गुजराती में तर्जुमा कम लिपियांतर किया हैं। प्रोफेसर साहब ने मुझे इजाज़त दे कर मुझ नाचीझ को भी अह्ल-ए-बैत का कुछ काम करने का मौका दिया हैं। इस अजीमुश्शान किताब को उर्दू से हिन्दी ज़बान में मुन्तफिक करते वक्त मैं ने अपने तौर पर इस बात की पूरी कोशिश की है कि इस के कलाम की मअ़नवीयत और रुह़ाने फिक्र कहीं से मजरूह न होने पाए।

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **खतीब-ए-अह्ले बैत मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)** का तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले **दीवान मोह्सीनशाह (सांसरोद,गुजरात)** का भी शुक्रगुजार हूँ।

दरअस्ल यह काम कौम की उस नस्ल के लिये किया गया है जो हालाते ज़माना के हाथों अपनी मादरी ज़बान (उर्दू) के रस्मुल ख़त से नाबलद हो गई है अगरचे अभी भी इन अल्फ़ाज से उस के कान मानूस और ज़बान इनकी लज्जत से आशना है ! चुनांचे मैं ने उर्दू अल्फ़ाज के तलफ्फुज़ात की सेहत का ख़ास लिहाज़ रखा है। इस लिए बतौर मुतरजिम मैं ने “पूर्ण हिन्दी तर्जुमा” न कर के ज़ियादातर लिपियांतर ही किया है ताकि उर्दू दीनी अल्फ़ाजो का और उसूल-ए-हदीस के अल्फ़ाजो का वज़न बरकरार रहे। मैं ने निहायत जांफिशानी और ख़ुलूसे नियत के साथ इस अज़ीम क़रीज़े को अंजाम देने की कोशिश की है, इन तमाम बातों और तज्जुहात के बावजूद ग़लतियां मिल सकती है जिन के लिए मैं पहले से मअज़िरत ख़्वाह हूँ।

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह ﷺ व अहल-ए-बैत عليهم السلام की शफाअत नसीब फरमाए !

ग़ुलाम-ए-दरे सैय्यदा ज़हरा-ए-पाक व अली عليهم السلام

**डॉ. शहेज़ाद हुसैन यासीनमीया काज़ी**

# فتح القدير

## الجامع بين فني الرواية والدراية من علم التفسير

تأليف

**محمد بن علي بن محمد الشوكاني**

المتوفى بصنعاء ١٢٥٠هـ

حققه وخرج أحاديثه

**الدكتور عبد الرحمن عميرة**

وضع فهارسه وشارك في تخريج أحاديثه

**لجنة التحقيق والبحث العلمي بدار الوفاء**

الجزء الرابع



اى لا أحد أظلم ممن كذب على الله ، فزعم أن له ولدا أو شريكا أو صاحبة ﴿ وكذّب بالصدق إذ جاءه ﴾ وهو ما جاء به رسول الله ﷺ من دعاء الناس إلى التوحيد ، وأمرهم بالقيام بفرائض الشرع ونهيهم عن محرماته وإخبارهم بالبعث والنشور، وما أعدّ الله للمطيع والعاصى . ثم استفهم سبحانه استفهاما تقريريا فقال : ﴿ أليس فى جهنم مثوى للكافرين ﴾ أى أليس لهؤلاء المفترين المكذبين بالصدق . والمثوى : المقام . وهو مشتق من ثوى بالمكان : إذا أقام به يثوى ثواء وثويا ، مثل مضى مضاء ومضيا . وحكى أبو عبيد أنه يقال أثوى وأنشد قول الأعشى :

أثوى وقَصَّر ليله ليزودا      ومضى وأخلف من قُتَيْلَةَ موعدا

وأنكر ذلك الأصمعى وقال : لا نعرف أثوى . ثم ذكر سبحانه فريق المؤمنين المصدّقين فقال : ﴿ والذى جاء بالصدق وصدّق به ﴾ الموصول فى موضع رفع بالابتداء ، وهو عبارة عن رسول الله ﷺ ومن تابعه وخبره : ﴿ أولئك هم المتقون ﴾ وقيل : الذي جاء بالصدق : رسول الله ﷺ ، والذى صدّق به : أبو بكر . وقال مجاهد: الذى جاء بالصدق : رسول الله ﷺ ، والذى صدّق به : على بن أبى طالب . وقال السدّى : الذى جاء بالصدق : جبريل ، والذى صدّق به : رسول الله ﷺ . وقال قتادة ومقاتل وابن زيد : الذى جاء بالصدق : النبى ﷺ ، والذى صدّق به : المؤمنون . وقال النخعى : الذى جاء بالصدق وصدّق به : هم المؤمنون الذين يجيئون بالقرآن يوم القيامة . وقيل : إن ذلك عام فى كل من دعا إلى توحيد الله وأرشد إلى ما شرعه لعباده ، واختار هذا ابن جرير وهو الذى أختاره من هذه الأقوال ، ويؤيده قراءة ابن مسعود : « والذين جاؤوا بالصدق وصدّقوا به » . ولفظ ﴿ الذى ﴾ كما وقع فى قراءة الجمهور وإن كان مفردا فمعناه الجمع ، لأنه يراد به الجنس كما يفيده قوله : ﴿ أولئك هم المتقون ﴾ أى المتصفون بالتقوى التى هى عنوان النجاة . وقرأ أبو صالح : « وصدق به » مخففا أى صدق به الناس .

ثم ذكر سبحانه ما لهؤلاء الصادقين المصدّقين فى الآخرة فقال : ﴿ لهم ما يشاؤون عند ربهم ﴾ أى لهم كل ما يشاؤونه من رفع الدرجات ودفع المضرات وتكفير السيئات ، وفى هذا ترغيب عظيم وتشويق بالغ ، والإشارة بقوله : ﴿ذلك ﴾ إلى ما تقدم ذكره من جزائهم وهو مبتدأ ، وخبره قوله : ﴿ جزاء المحسنين ﴾ أى الذين أحسنوا فى أعمالهم. وقد ثبت فى الصحيح عن رسول الله ﷺ أن الإحسان أن تعبد الله كأنك تراه ، فإن لم تكن تراه فإنه يراك [1] . ثم بين سبحانه ما هو الغاية مما لهم عند ربهم فقال : ﴿ ليكفر الله عنهم أسوأ الذى عملوا ﴾ فإن ذلك هو أعظم ما يرجونه من دفع الضرر عنهم لأن الله سبحانه إذا غفر لهم ما هو الأسوأ من أعمالهم غفر لهم ما دونه بطريقة الأولى ، واللام متعلقة بـ﴿ يشاؤون ﴾ أو بالمحسنين أو

---

(١) سبق تخريجه .

◈ अल्लामा शौकानी ﷬ अपनी तफ़्सीर **'फत्हुल क़दीर'** में फ़रमाते हैं कि :

→ हज़रत मुजाहिद ﷬ फ़रमाते हैं "**والذی جاء بالصدق وصدق به اولائك هم المتقون**"(और वह जो सच ले कर आया और जिसने इसकी तस्दीक़ की, यही लोग मुत्तकी हैं) में "**الذی جاء بالصدق**"से मुराद हुज़ूर ﷺ हैं, और "**وصدق به**" से हज़रत अली ﷛ ।

وقوله : ﴿ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴾ . يقولُ تعالى ذكرُه : إن الله يفعلُ فى خلقِه ما يشاءُ مِن إهانةِ مَن أراد إهانتَه ، وإكرامِ مَن أراد كرامتَه ؛ لأن الخلقَ خلقُه ، والأمرَ أمرُه ، ﴿ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُونَ ﴾ [الأنبياء : ٢٣] .

وقد ذُكر عن بعضِهم أنه قرأه : ( فَمَا لَهُ مِن مُكْرَمٍ ) بمعنى : فما له مِن إكرامٍ[1] . وذلك قراءةٌ لا أستجيزُ القراءةَ بها ؛ لإجماعِ الحجةِ مِن القرأةِ على خلافِه .

القولُ فى تأويلِ قولِه تعالى : ﴿ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ۝١٩ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ۝٢٠ وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ۝٢١ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝٢٢ ﴾ .

اختلَف أهلُ التأويلِ فى المعنىِّ بهذين الخصمين اللذين ذكَرهما اللهُ ؛ فقال بعضُهم : أحدُ الفريقين أهلُ الإيمانِ ، والفريقُ الآخرُ عبدةُ الأوثانِ مِن مشركى قريشٍ الذين تبارَزوا يومَ بدرٍ .

## ذكرُ مَن قال ذلك

حدَّثنى يعقوبُ ، قال : ثنا هُشَيْمٌ ، قال : أخبَرنا أبو هاشمٍ ، عن أبى مِجلَزٍ ، عن قيسِ بنِ عُبادٍ[2] ، قال : سمِعتُ أبا ذرٍّ يُقْسِمُ قسمًا أن هذه الآيةَ : ﴿ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ﴾ نزَلت فى الذين بارَزوا يومَ بدرٍ ؛ حمزةَ وعلىٍّ وعُبيدةَ بنِ الحارثِ ، وعتبةَ وشيبةَ ابنَى ربيعةَ والوليدِ بنِ عتبةَ[3] .

(١) وهى قراءة ابن أبى عبلة . البحر المحيط ٦/٣٥٩ .

(٢) فى م : « عبادة » . وينظر تهذيب الكمال ٢٤/٦٤ .

(٣) أخرجه البخارى (٣٩٦٩، ٤٧٤٣) ، ومسلم (٣٠٣٣/٣٤) ، والنسائى (٨٦٤٩) من طريق هشيم به . وعزاه السيوطى فى الدر المنثور ٤/٣٤٨ إلى سعيد بن منصور وعبد بن حميد وابن المنذر وابن أبى حاتم وابن مردويه .



قال[1] : وقال علىٌّ : إنى لأولُ - أو مِن أولِ - مَن يَجثو للخصومةِ يومَ القيامةِ بينَ يدَى اللهِ تبارَك وتعالى[2] .

حدَّثنا علىُّ بنُ سهلٍ ، قال : ثنا مؤمَّلٌ ، قال : ثنا سفيانُ ، عن أبى هاشمٍ ، عن أبى مجلزٍ ، عن قيسِ بنِ عُبادٍ ، قال : سمِعتُ أبا ذرٍّ يُقْسِمُ باللهِ قسمًا : لنزَلت هذه الآيةُ فى ستةٍ مِن قريشٍ ؛ حمزةَ بنِ عبدِ المطلبِ ، وعلىِّ بنِ أبى طالبٍ ، وعُبيدةَ بنِ الحارثِ ، رضِى اللهُ عنهم ، وعتبةَ بنِ ربيعةَ ، وشيبةَ بنِ ربيعةَ ، والوليدِ بنِ عتبةَ ، ﴿ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ﴾ إلى آخرِ الآيةِ ، ﴿ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ﴾ . إلى آخرِ الآيةِ[3] .

حدَّثنا ابنُ بشارٍ ، قال : ثنا عبدُ الرحمنِ ، قال : ثنا سفيانُ ، عن أبى هاشمٍ ، عن أبى مجلزٍ ، عن قيسِ بنِ عُبادٍ ، قال : سمِعتُ أبا ذرٍّ يُقْسِمُ . ثم ذكَر نحوَه[4] .

حدَّثنا ابنُ بشارٍ ، قال : ثنا محمدُ بنُ مُحَبَّبٍ[5] ، قال : ثنا سفيانُ ، عن منصورِ ابنِ المعتمرِ ، عن هلالِ بنِ يِسافٍ ، قال : نزَلت هذه الآيةُ فى الذين تبارَزوا يومَ بدرٍ ﴿ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ﴾[6] .

حدَّثنا ابنُ حميدٍ ، قال : ثنا سلمةُ بنُ الفضلِ ، قال : ثنى محمدُ بنُ إسحاقَ ، عن بعضِ أصحابِه ، عن عطاءِ بنِ يسارٍ ، قال : نزَلت هؤلاء الآياتُ ﴿ هَٰذَانِ خَصْمَانِ

(١) القائل قيس بن عباد .

(٢) أخرجه ابن أبى شيبة ٩/٤٢٧ ، والبخارى (٣٩٦٥ ، ٤٧٤٤) ، والنسائى (٨٦٥٠) ، والبيهقى فى الدلائل ٣/٧٢ من طريق أبى مجلز به .

(٣) تفسير سفيان ص ٢٠٩ . ومن طريقه ابن أبى شيبة ١٤/٣٦٥ ، والبخارى (٣٩٦٦ ، ٣٩٦٨) ، والبيهقى فى دلائل النبوة ٣/٧٢ .

(٤) أخرجه مسلم (٣٠٣٣) ، وابن ماجه (٢٨٣٥) من طريق عبد الرحمن به .

(٥) فى ف : « محبب » . وينظر تهذيب الكمال ٢٦/٣٦٥ .

(٦) ينظر فتح البارى ٨/٤٤٤ .



اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ﴾ . فى الذين تبارَزوا يومَ / بدرٍ ؛ حمزةَ ، وعلىٍّ ، وعُبيدةَ بنِ الحارثِ ، وعتبةَ بنِ ربيعةَ ، وشيبةَ بنِ ربيعةَ ، والوليدِ بنِ عتبةَ . إلى قولِه : ﴿ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴾ .

قال : ثنا جريرٌ ، عن منصورٍ ، عن أبى هاشمٍ ، عن أبى مجلزٍ ، عن قيسِ بنِ عُبادٍ[1] ، قال : واللهِ لأُنزِلت هذه الآيةُ : ﴿ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ﴾ . فى الذين خرَج بعضُهم إلى بعضٍ يومَ بدرٍ ؛ حمزةَ ، وعلىٍّ ، وعُبيدةَ ، رحمةُ اللهِ عليهم ، وشيبةَ ، وعتبةَ ، والوليدِ بنِ عتبةَ[2] .

وقال آخرون ممن قال : أحدُ الفريقين فريقُ الإيمانِ : بل[3] الفريقُ الآخرُ أهلُ الكتابِ .

تفسير الطبرى
جامع البيان عن تأويل آى القرآن
لأبى جعفر محمد بن جرير الطبرى
(٢٢٤ - ٣١٠ هـ)
تحقيق
الدكتور عبد الله بن عبد المحسن التركى
بالتعاون مع
مركز البحوث والدراسات العربية والإسلامية
بدار هجر
الدكتور عبد السند حسن يمامة
الجزء السادس عشر

ذكرُ مَن [قال ذلك]

حدَّثنى محمدُ بنُ سعدٍ ، قال : ثنى أبى ، [...] أبيه ، عن ابنِ عباسٍ قولَه : ﴿ هَٰذَانِ خَصْمَانِ [...] الكتابِ قالوا للمؤمنين : نحن أولى باللهِ وأقدم [...] المؤمنون : نحن أحقُّ باللهِ ، آمَنَّا بمحمدٍ ﷺ [...] فأنتم تعرِفون كتابَنا ونبيَّنا ، ثم ترَكتموه و[...] فى ربِّهم[5] .

(١) فى م : « عبادة » .

(٢) أخرجه ابن أبى شيبة ١٤/٣٧٩ ، والبيهقى فى دلائل النبوة ٣/٧٣ من طريق أبى مجلز به .

(٣) فى ت ١ ، ف : « قال » . وفى ت ٢ : « و » .

(٤) بعده فى م : « و » .

(٥) عزاه السيوطى فى الدر المنثور ٤/٣٤٩ إلى المصنف وابن مردويه .

◈ **'तफ़्सीर तिबरी'** में आयत "هذا خصمان اختصموا"(यह हैं दो झगड़ने वाले जिन्होंने झगड़ा किया) के ज़ैल में है :

इन दोनों मद्दे मुक़ाबिल शख़्सों के बारे में मुफ़स्सरीन का इख़्तेलाफ़ है, बाज़ कहते है एक फ़रीक़ से अह्ले ईमान मुराद हैं और दुसरे से क़ुरैश के बूत परस्त मुशरिकीन जो के बदर के दिन मुबारजत करने आए थे ।

→ हज़रत क़ैस उबाद फ़रमाते हैं : मैंने हज़रत अबुज़र ﷺ को क़सम खा कर फ़रमाते हुए सुना के ये आयत हज़रत हम्ज़ा ﷺ , हज़रत अली ﷺ , व हज़रत उबैदा बिन हारिस ﷺ , और उत्बा, शैबा व वलीद बिन उत्बा के बारे में नाज़िल हुई ।

→ हिलाल बिन यसाफ कहते हैं : यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई, जो बदर के दिन मुबारजत पर निकले।

→ अता बिन यसार कहते हैं यह आयत हज़रत हम्ज़ा ﷺ , हज़रत अली ﷺ , व हज़रत उबैदा बिन हारिस ﷺ , और उत्बा शैबा व वलीद बिन उत्बा के बारे में नाज़िल हुई, जिन्होंने बदर के दिन मुबारजत की थी।

→ क़ैस बिन उबाद कहते हैं यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी जो बदर के दिन एक दुसरे के आमने सामने हुए, या'नि हज़रत हम्ज़ा ﷺ, हज़रत अली ﷺ, व हज़रत उबैदा बिन हारिस ﷺ, और उत्बा, शैबा व वलीद बिन उत्बा।

# تفسير القرآن العظيم

للإمام الجليل الحافظ عماد الدين أبي الفداء
إسماعيل بن كثير الدمشقي
المتوفى سنة ٧٧٤ هـ

هذه الطبعة أول طبعة مقابلة على النسخة الأزهرية
وكذلك على نسخة كاملة بدار الكتب المصرية

تحقيق

مصطفى السيد محمد — محمد السيد رشاد
محمد فضل العجماوي — علي أحمد عبد الباقي
حسن عباس قطب

المجلد الثالث عشر


مؤسسة قرطبة
طباعة . نشر . توزيع
جيزة - ت: ٥٨١٥٠٢٧

مكتبة أولاد الشيخ للتراث
٦٢ ش البلدان - عمرانية غربية - جيزة
ت: ٥٦٢٨٣١٨ - ٥٦١١٤٤٢




قال ابن أبي نجيح عن مجاهد قال : نهوا عن مناجاة النبي صلى الله عليه وسلم حتى يتصدقوا ، فلم يناجه إلا علي بن أبي طالب ، قدم دينارًا صدقة تصدق به ، ثم ناجى النبي صلى الله عليه وسلم ، فسأله عن عشر خصال ، ثم أنزلت الرخصة .

وقال ليث بن أبي سليم عن مجاهد : قال علي - رضي الله عنه - : آية في كتاب الله - عز وجل - لم يعمل بها أحد قبلي ، ولا يعمل بها أحد بعدي ، كان عندي دينار فصرفته بعشرة[1] دراهم ، فكنت إذا ناجيت رسول الله صلى الله عليه وسلم تصدقت بدرهم ، فنسخت ولم يعمل بها أحد قبلي ، ولا يعمل بها أحد بعدي ، ثم تلا هذه الآية : ﴿ يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة ... ﴾ الآية(٥١) .

وقال ابن جرير : حدثنا ابن حميد ، حدثنا مهران ، عن سفيان ، عن عثمان بن المغيرة ، عن سالم بن أبي الجعد ، عن علي بن علقمة الأنماري ، عن علي - رضي الله عنه - قال : قال النبي صلى الله عليه وسلم : « ما ترى ؟ دينار ؟ » قال : [لا يطيقون][2] . قال : « نصف دينار ؟ » قال : لا يطيقون[3] . قال : « ما ترى ؟ » ؟ قال : شعيرة . فقال له النبي صلى الله عليه وسلم : « إنك زهيد[4] » . قال[5] : قال علي : فبي خفف الله عن هذه الأمة . وقوله : ﴿ يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة ﴾ فنزلت : ﴿ أأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجواكم صدقات[6] ﴾(٥٢) .

ورواه الترمذي عن سفيان بن وكيع ، عن يحيى بن آدم ، عن عبيد الله الأشجعي ، عن سفيان الثوري ، عن عثمان بن المغيرة الثقفي ، عن سالم بن أبي الجعد ، عن علي بن علقمة الأنماري ، عن علي بن أبي طالب قال : لما نزلت : ﴿ يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة ﴾ . قال لي[7] النبي صلى الله عليه وسلم : « ما ترى ؟ دينار ؟ » قلت[8] : لا يطيقونه[9] . وذكره بتمامه مثله(٥٣) ، ثم قال : هذا

(٥١) - أخرجه الطبري (٢٠/٢٨) . وفي إسناده ليث بن أبي سليم صدوق قد اختلط جدًا ، ولم يتميز حديثه فترك . والحديث أخرجه الحاكم من طريق آخر عن علي وقال : صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه ، ووافقه الذهبي .

(٥٢) - أخرجه الطبري (٢١/٢٨) . وفي إسناده علي بن علقمة الأنماري ، قال الحافظ : مقبول .

(٥٣) - وأخرجه الترمذي في كتاب : التفسير ، باب : ومن سورة المجادلة ، حديث (٣٢٩٧) (٤١/٩)=

---

[1] - في ز،خ : « بعشر » .
[2] - ما بين المعكوفين في ز ،خ: « ما تطيقون » .
[3] - في ز،خ : « تطيقون » .
[4] - في ز : « لن تهد » .
[5] - سقط من : ز،خ .
[6] - في ز ،خ: « صدقة » .
[7] - سقط من : ز،خ .
[8] - في ز،خ : « قال » .
[9] - في ز ،خ: « لا تطيقونه » .

◈ **'तफ्सीर इब्न कसीर'** में है : हज़रत मुजाहिद ﵀ फ़रमाते हैं : लोगों को रसूलल्लाह ﷺ से सरगोशी[1] के लिए सदक़ा का हुक्म दिया गया,तो सबसे पहले हज़रत अली ﵁ ने एक दीनार सदक़ा कर के आपसे सरगोशी[1] की, और आप से दस चीज़ों के बारे में सवाल किया, उसके बाद रुख़्सत नाज़िल हो गई।

→ हज़रत मुजाहिद ﵀ फ़रमाते हैं: हज़रत अली ﵁ का क़ौल है : क़ुरआन में एक आयत ऐसी है जिस पर मुझसे पहले किसी ने अमल नहीं किया, और न मेरे बाद कोई अमल करेगा, मेरे पास एक दीनार था, मैंने उसे दस दिरहम में फरोख़्त किया, फिर जब मैं रसूलल्लाह ﷺ से सरगोशी[1] करता तो एक दिरहम सदक़ा करता, फिर ये आयत मन्सूख़ कर दी गई, चुनाँचे इस पर न मुझसे पहले किसी ने अमल किया और न मेरे बाद कोई करेगा, फिर आपने यह आयत पढ़ी "يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة" ( **ऐ ईमान वालों! जब तुम रसूल से सरगोशी[1] करो तो अपनी सरगोशी से पहले सदक़ा पेश कर दिया करो**) ।

→ हज़रत अली ﵁ फ़रमाते हैं: रसूलल्लाह ﷺ ने पुछा (सदक़ा की मिक़्दार के बारे में) 'तुम्हारा क्या ख़्याल है ? एक दीनार ?' हज़रत अली ﵁ ने कहा: 'लोग इसकी ताक़त नहीं रखते', आप ﷺ ने पुछा: 'निस्फ़ दीनार ?' कहा: 'इसकी ताक़त भी नहीं रखते,' फिर पुछा: 'तुम बताओ,' अर्ज़ किया: 'थोड़ी सी जौ,' तो आप से हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:तुम बड़े ज़ाहिद हो, 'हज़रत अली ﵁ फ़रमाते हैं:' तो अल्लाह ﷻ ने मेरे ज़रिये इस उम्मत से तख़्फ़ीफ़ फ़रमा दी, अल्लाह ﷻ का इरशाद है : "يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة" फिर ये इरशाद नाजिल हुआ "أأشفقتم أن تقدموا بين يدى نجواكم صدقات" (क्या तुम इस से डर गए के अपनी सरगोशी से पहले सदक़ात पेश करो)।

→ हज़रत अली ﵁ फ़रमाते हैं : जब "يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة" उतरी तो मुझ से नबी ﷺ ने फ़रमाया: क्या ख़्याल है, एक दीनार ? 'मैंने कहा:' लोग इसकी ताक़त नहीं रखते । और फिर ये हदीस ज़िक्र है।

1) सरगोशी : A soft- bw noise (धीमी आवाज़ से गुफ़्तगु या सवाल-ओ-जवाब करना।)

لهم ، فعرف النبي ﷺ ما يحملهم على القيام ، فلم يفسح لهم ، فشق ذلك عليه ، فقال لمن حوله من المهاجرين والأنصار من غير أهل بدر : « قم يا فلان وأنت يا فلان » ، فلم يزل يقيمهم بعدة النفر الذين هم قيام من أهل بدر ، فشق ذلك على من أقيم من مجلسه ، فنزلت هذه الآية (١) . وأخرج ابن جرير عن ابن عباس في الآية قال : ذلك في مجلس القتال ﴿ وإذا قيل انشزوا ﴾ قال : إلى الخير والصلاة . وأخرج ابن المنذر والحاكم وصححه ، والبيهقي في المدخل عن ابن عباس في قوله: ﴿ يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين أوتوا العلم درجات﴾ قال: يرفع الله الذين أوتوا العلم من المؤمنين على الذين لم يؤمنوا درجات . وأخرج سعيد بن منصور وابن المنذر وابن أبي حاتم عن ابن مسعود في تفسير هذه الآية قال : يرفع الله الذين آمنوا منكم وأوتوا العلم على الذين آمنوا ولم يؤتوا العلم درجات . وأخرج ابن المنذر عنه قال : ما خص الله العلماء في شيء من القرآن ما خصهم في هذه الآية ، فضل الله الذين آمنوا وأوتوا العلم على الذين آمنوا ولم يؤتوا العلم .

وأخرج ابن المنذر وابن أبي حاتم وابن مردويه عن ابن عباس في قوله : ﴿ إذا ناجيتم الرسول ﴾ الآية ، قال: إن المسلمين أكثروا المسائل على رسول الله ﷺ حتى شقوا عليه ، فأراد الله أن يخفف عن نبيه ، فلما قال ذلك امتنع (٢) كثير من الناس وكفوا عن المسألة . فأنزل الله بعد هذا : ﴿ أأشفقتم ﴾ الآية ، فوسع الله عليهم ولم يضيق . وأخرج ابن أبي شيبة وعبد بن حميد والترمذي وحسنه وأبو يعلى وابن جرير وابن المنذر والنحاس وابن مردويه عن علي بن أبي طالب قال : لما نزلت : ﴿ يأيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة ﴾ قال لي النبي ﷺ : « ما ترى ، دينار ؟ » قلت : لا يطيقونه . قال : « فنصف دينار؟» قلت : لا يطيقونه ، قال : « فكم ؟ » قلت : شعيرة ، قال : « إنك لزهيد » ، قال: فنزلت: ﴿ أأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجواكم صدقات ﴾ الآية ، فبي خفف الله عن هذه الأمة، والمراد بالشعيرة هنا : وزن شعيرة من ذهب ، وليس المراد : واحدة من حب الشعير (٣) . وأخرج عبد الرزاق وعبد بن حميد وابن المنذر وابن أبي حاتم وابن مردويه عنه قال: ما عمل بها أحد غيري حتى نسخت ، وما كانت إلا ساعة ، يعني: آية النجوى . وأخرج سعيد بن منصور وابن راهويه وابن أبي شيبة وعبد بن حميد وابن المنذر وابن أبي حاتم والحاكم وصححه وابن مردويه عنه أيضا قال : إن في كتاب الله لآية ما عمل بها أحد قبلي ولا يعمل بها أحد بعدي آية النجوى ﴿ يأيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة﴾ كان عندي دينار فبعته بعشرة دراهم ، فكنت كلما ناجيت رسول الله ﷺ قدمت بين

(١) القرطبي ٩ / ٦٤٦٦ .

(٢) في المخطوطة : « ظن » والصحيح : امتنع كما في الدر المنثور ٦ / ١٨٥ ليستقيم المعنى .

(٣) ابن أبي شيبة في الفضائل ( ١٢١٧٥ ) والترمذي في التفسير ( ٣٣٠٠ ) وقال : « هذا حديث حسن غريب إنما نعرفه من هذا الوجه » وأبو يعلى ( ٤٠٠ ) وابن جرير ٢٨ / ١٥ .



يدي نجواي درهما ، ثم نسخت فلم يعمل بها أحد ، فنزلت : ﴿ أأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجواكم صدقات ﴾ الآية (١) . وأخرج الطبراني وابن مردويه ، قال السيوطي : بسند ضعيف ، عن سعد بن أبي وقاص قال : نزلت ﴿ يأيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة ﴾ فقدمت شعيرة ، فقال رسول الله ﷺ : « إنك لزهيد » ، فنزلت الآية الأخرى : ﴿ أأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجواكم صدقات﴾ (٢) .

فتح القدير

الجامع بين فني الرواية والدراية من علم التفسير

تأليف

محمد بن علي بن محمد الشوكاني

المتوفى بصنعاء ١٢٥٠هـ

حققه وخرج أحاديثه

الدكتور عبد الرحمن عميرة

وضع فوارسه وشارك في تخريج أحاديثه

لجنة التحقيق والبحث العلمي بدار الوفاء

الجزء الخامس

﴿ ألم تر إلى الذين تولوا

الكذب وهم يعلمون (١٤) أعد

أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل

من الله شيئا أولئك أصحاب

كما يحلفون لكم ويحسبون

الشيطان فأنساهم ذكر الله أو

إن الذين يحادون الله ورسول

قوي عزيز (٢١) لا تجد قوما

كانوا آباءهم أو أبناءهم أو إ

بروح منه ويدخلهم جنات تج

أولئك حزب الله ألا إن حزب

قوله : ﴿ ألم تر إلى الذ

اليهود. وقال السدي ومقاتل :

الله عليهم ﴾ فإن المغضوب ع

منهم ﴾ فإن هذه صفة المنافقين

هؤلاء ﴾ [ النساء : ١٤٣ ] و

أو هي مستأنفة ﴿ويحلفون ع

(١) ابن أبي شيبة في الفضائل ( ١٢١٧٤ ) وصححه الحاكم ٢/ ٤٨٢ على شرط الشيخين ووافقه الذهبي ، وقال الهيثمي في المجمع ٧ / ١٢٥ : « رواه الطبراني في حديث طويل وفيه مسلمة بن الفضل الأبرش وثقه ابن معين وغيره وضعفه البخاري وغيره » .

(٢) الطبراني ١ / ١٤٧ .

→ अल्लामा शौकानी की फत्हुल क़दीर में है: इब्न अबी शैबा,अब्द बिन हमीद, तिर्मिज़ी ने माआ तहसीन, इब्न जरीर, इब्न मुनज़िर, इब्न नुहास और इब्न मरदविया ﷺ ने हज़रत अली ﷺ से रिवायत की है कि जब "يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة" उतरी तो रसूलल्लाह ﷺ ने पूछा (सदके की मिक़्दार के बारे में) 'तुम्हारा क्या ख़्याल है' ? एक दीनार ? 'हज़रत अली ﷺ ने कहा:' लोग उसकी ताक़त नहीं रखते, 'आप ने पूछा:' निस्फ़ दीनार ? 'कहा: उसकी की ताक़त भी नहीं रखते,' फिर पूछा: 'तुम बताओ' अर्ज़ किया: 'थोड़ी सी जौ,' तो आप ﷺ से हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: 'तुम बड़े ज़ाहिद हो,' हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं : 'फिर यह इरशाद नाज़िल हुआ: "أأشفقتم أن تقدموا بين يدى نجواكم صدقات" तो अल्लाह ﷻ ने मेरे ज़रिये इस उम्मत से तख़्फ़ीफ़ फ़रमा दी।

→ सईद बिन मुसव्विर, इब्न रह्वीया, इब्न अबी शैबा, अब्द बिन हमीद, इब्न मंज़र, इब्न अबी हातिम ने माअ तसहीह और इब्न मरदविया ﷺ ने रिवायत की है: हज़रत अली ﷺ का क़ौल है: क़ुरआन में एक आयात ऐसी है जिस पर मुझ से पहले किसी ने अमल नहीं किया, और न मेरे बाद कोई अमल करेगा, वह आयत "يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة" है, मेरे पास एक दीनार था, मैंने उसे दस दिरहम में फ़रोख़्त किया, फिर जब मैं रसूलल्लाह ﷺ से सरगोशी करता तो एक दिरहम सदक़ा करता, फिर यह आयत मन्सूख़ कर दी गई और इस पर किसी ने अमल नहीं किया, : फिर यह इरशाद नाज़िल हुआ: "أأشفقتم أن تقدموا بين يدى نجواكم صدقات"।

# المستدرك على الصحيحين

للإمام الحافظ أبي عبد الله محمد بن عبد الله الحاكم النيسابوري

مع تضمينات الإمام الذهبي في التلخيص والميزان والعراقي في أماليه والمناوي في فيض القدير وغيرهم من العلماء الأجلاء

أول طبعة مرقمة الأحاديث ومقابلة على عدة مخطوطات

دراسة وتحقيق

مصطفى عبد القادر عطا

كتاب البيوع، كتاب الجهاد، كتاب قسم الفيء، كتاب قتال أهل البغي، كتاب النكاح، كتاب الطلاق، كتاب العتق، كتاب المكاتب، كتاب التفسير، كتاب تواريخ المتقدمين من الأنبياء والمرسلين.

## الجزء الثاني

منشورات
محمد علي بيضون
لنشر كتب السنة والجماعة
دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان



أوتوا العلم من المؤمنين على الذين لم يؤتوا العلم درجات.

هذا حديث صحيح الإسناد ولم يخرجاه.

٣٧٩٤/٩٣١ ـ أخبرني عبد الله بن محمد الصيدلاني، ثنا محمد بن أيوب، أنبأ يحيى بن المغيرة السعدي، ثنا جرير، عن منصور، / عن مجاهد، عن عبد الرحمن بن أبي ليلى قال: قال علي بن أبي طالب رضي الله عنه: قال رسول الله ﷺ: «إن في كتاب الله لآية ما عمل بها أحد ولا يعمل بها أحد بعدي آية النجوى» ﴿يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدي نجواكم صدقة﴾ [المجادلة: ١٢] الآية. قال: كان عندي دينار فبعته بعشرة دراهم فناجيت النبي ﷺ فكنت كلما ناجيت النبي ﷺ قدمت بين يدي نجواي درهماً ثم نسخت فلم يعمل بها أحد فنزلت: ﴿أأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجواكم صدقات﴾ [المجادلة: ١٣] الآية.

هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه.

٣٧٩٥/٩٣٢ ـ حدثنا أبو العباس محمد بن يعقوب، أنبأ الحسن بن علي بن عفان، ثنا عمرو بن محمد العنقري، ثنا إسرائيل، ثنا سماك بن حرب، عن سعيد بن جبير، عن ابن عباس رضي الله عنهما قال: كان رسول الله ﷺ في ظل حجرة وقد كاد الظل أن يتقلص فقال رسول الله ﷺ: «إنه سيأتيكم إنسان فينظر إليكم بعين شيطان فإذا جاءكم لا تكلموه فلم يلبثوا أن طلع عليهم رجل أزرق أعور فقال حين رآه دعاه رسول الله ﷺ فقال على ما تشتمني أنت وأصحابك فقال ذرني آتك بهم فانطلق فدعاهم فحلفوا ما قالوا وما فعلوا حتى يخون» فأنزل الله عز وجل ﴿يوم يبعثهم الله جميعاً فيحلفون له كما يحلفون لكم ويحسبون أنهم على شيء ألا انهم هم الكاذبون﴾ [المجادلة: ١٨].

هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه.

٣٧٩٦/٩٣٣ ـ حدثني أبو بكر محمد بن أحمد بن بالويه، ثنا محمد بن أحمد بن النضر، ثنا معاوية بن عمرو، ثنا زائدة، أنبأ السائب بن حبيش الكلاعي، عن معدان بن أبي طلحة اليعمري قال: قال لي أبو الدرداء: أين مسكنك؟ فقلت: في قرية دون حمص. فقال أبو الدرداء رضي الله عنه: سمعت رسول الله ﷺ يقول: «ما من ثلاثة في

٣٧٩٤ ـ قال في التلخيص: على شرط البخاري ومسلم.
٣٧٩٥ ـ سكت عنه الذهبي في التلخيص.
٣٧٩٦ ـ قال في التلخيص: صحيح.

وافقه الذهبي على التصحيح

◈ इमाम हाकिम ﷬ की मुस्तदरक में है: हज़रत अली ﷜ फ़रमाते हैं: क़ुरआन में एक आयत ऐसी है जिस पर मुझ से पहले किसी ने अमल नहीं किया, और ना मेरे बाद कोई अमल करेगा वह आयत "يا أيها الذين آمنوا إذا ناجيتم الرسول فقدموا بين يدى نجواكم صدقة" है । ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूलल्लाह ﷺ से सरगोशी करो तो अपनी सरगोशी से पहले सदक़ा पेश कर दिया करो ), मेरे पास एक दीनार था मैं ने उसे दस दिरहम में फ़रोख़्त किया,फिर जब मैं रसूलल्लाह ﷺ से सरगोशी करता तो एक दिरहम सदक़ा करता, फिर यह आयत मन्सूख़ कर दी गई और इस पर किसी ने अमल नहीं किया, : फिर यह इरशाद नाज़िल हुआ: "أأشفقتم أن تقدموا بين يدى نجواكم صدقات" (क्या तुम उस से डर गए के अपनी सरगोशी से पहले सदक़ात पेश करो)।

◈ इमाम हाकिम ﷬ फ़रमाते हैं: **यह हदीस शैख़ैन (इमाम बुख़ारी ﷬ इमाम मुस्लिम) की शराइत पर सहीह है,लेकिन दोनों ने इस की तख़रीज नहीं की है ।**

◈ अल्लामा ज़हबी ने भी तलख़ीस में कहा है: **'यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम की शर्त पर है'।**

# تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩هـ - ٥٧١هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع



أَنْبَأَنا أبو عَبْد الله مُحَمَّد بن عَلي بن أبي العلاء، أنا أبي، أبو القَاسم، أنا أبو مُحَمَّد بن أبي نصر، أنا خَيْثَمة، نا جعفر بن مُحَمَّد بن عَنْبَسة اليشكري، نا يَحْيَىٰ بن عَبْد الحميد الحِمّاني، نا قيس بن الربيع، عَن أبي هارون العبدي، عَن أبي سعيد الخُدْري قال:

لما نصب رَسُول الله ﷺ علياً بغدير خُمّ فنادى له بالولاية، هبط جبريل عليه السلام عليه بهذه الآية: ﴿اليوم أكملتُ لكم دينكم، وأتممتُ عليكم نعمتي ورضيت لكم الإسلام ديناً﴾[1].

أَخْبَرَنا أبو بكر وجيه بن طاهر، أنا أبو حامد الأزهري، أنا أبو مُحَمَّد المَخْلَدي[2]، أنا أبو بكر مُحَمَّد بن حمدون، نا مُحَمَّد بن إبْرَاهيم الحُلْوَاني[3]، نا الحسَن بن حمّاد سَجّادة، نا عَلي بن عابس، عَن الأعمش، وأبي الجَحّاف، عَن عطيّة، عَن أبي سعيد الخُدْري قال:

نزلت هذه الآية ﴿يا أيها الرسول بلّغ ما أنزل إليك من ربك﴾[4] على رَسُول الله ﷺ يوم غدير خُمّ [في][5] عَلي بن أبي طالب.

أَخْبَرَنا أبو مُحَمَّد بن طاوس، أنا أبو منصور بن شكروية، أنا أبو إسحاق بن خُرّشيد[6] قوله، نا الحسَين بن إسْمَاعيل المحاملي ـ إملاء ـ نا يعقوب ، نا مروان الفَزَاري، عَن مسروق بن ماهان التيمي، قال:

قلت لأبي بسطام مولى أسامة بن زيد: إن ناساً يقولون: وال من والاه وعاد من عاداه، فقال أبو بسطام: ذلك بأنه كان بين علي وبين أسامة[7]، فقال: والله إنّي لأحبه، قال: فكأنه دخل على علي من ذاك، فقال رَسُول الله ﷺ: «ألاَ أراك تتناول عندي علياً؟ مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه»[٨٧٤٤].

أَنْبَأَنا أبو عَبْد الله الفُرَاوي، أنا أبو بكر البيهقي، أنا أبو عَبْد الرّحمن السلمي، نا

(١) سورة المائدة، الآية: ٣.
(٢) من طريقه رواه الواحدي في أسباب النزول ص ١١٢ ط. دار الفكر.
(٣) في أسباب النزول: محمد بن إبراهيم الخلوتي.
(٤) سورة المائدة، الآية: ٦٧.
(٥) زيادة للإيضاح من أسباب النزول.
(٦) في المطبوعة: خورشيد.
(٧) كذا بالأصل وم و« ز »، وثمة سقط في الكلام أخلّ بالمعنى، ووقع الاضطراب فيما يلي من سياق المتن. وقد انتبه محقق المطبوعة إلى هذا الخلل فرممه كما يلي:
كان بين علي وبين أسامة (شيء)، فقال (أسامة): والله إني لا (أ)حبه، قال فكأنه دخل على علي من ذاك. . .

◈ इब्न असाकिर ﷺ की **'तारीख़ दिमश्क़'** में है:

→ हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं: जब रसूलल्लाह ﷺ ने ग़दीर ख़ुम में हज़रत अली ﷺ को खड़ा कर के उन की विलायत (मौला होने का) का ऐलान किया, तो जिब्राईल ﷺ यह आयत लेकर नाज़िल हुए "اليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتى ورضيت لكم الإسلام ديناً" (आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअमत तमाम कर दी और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को बतौरे दीन पसंद कर लिया)।

→ हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ फ़रमाते हैं :"يا أيها الرسول بلغ ماأنزل إليك من ربك" (ऐ रसूल! जो तुम्हारे तरफ रब की जानिब से उतारा गया है उसे पहुँचा दो) ग़दीरे ख़ुम के दिन रसूलल्लाह ﷺ पर नाज़िल हुई, हज़रत अली ﷺ के बारे में ।

وأخرَج ابنُ المُنذرِ عن هارونَ قال : فى قراءةِ ابنِ مسعودٍ : (تكادُ[1] السماواتُ [2]ينفطِرْنَ منه) بالياءِ[2].

قولُه تعالى : ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ ٱلرَّحْمَـٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾﴾.

أخرَج ابنُ جريرٍ ، وابنُ المُنذرِ ، وابنُ مَرْدُويَه ، عن [3]عبدِ الرحمنِ بنِ عوفٍ[3] ، أنه لما هاجرَ إلى المدينةِ ، وَجَدَ فى نفسِه على فراقِ أصحابِه بمكةَ ؛ منهم شيبةُ بنُ ربيعةَ ، وعتبةُ[4] بنُ ربيعةَ ، وأُميةُ بنُ خلَفٍ ، فأنزَل اللهُ : ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ ٱلرَّحْمَـٰنُ وُدًّا﴾[5].

وأخرَج ابنُ مَرْدُويَه ، والدَّيلميُّ ، عن البراءِ قال : قال رسولُ اللهِ ﷺ لعليٍّ : «قُل : اللهمَّ اجعَلْ لى عندَك عهدًا ، و[6] اجعَلْ لى عندَك وُدًّا ، واجعَلْ لى فى صدورِ المؤمنينَ مَوَدَّةً» . فأنزَل اللهُ : ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ

(١) فى ف ١ ، ر ٢ : «يكاد» . وهى قراءة نافع والكسائى من العشرة ، وقرأها بالتاء على التأنيث ابن عامر وابن كثير وعاصم وأبو جعفر وأبو عمرو وحمزة ويعقوب وخلف . النشر ٢/ ٢٣٩.

(٢ - ٢) فى ر ٢ ، م : «ينفطرن بالياء» ، وفى ح ٢ : «تتفطرن منه بالتاء» . وقرأ ابن مسعود فى هذا الموضع : «لَتَتَصَدَّعُ منه» . وفى سورة الشورى : «ينفطرن منه» . المصاحف لأبى داود ص ٦٥ ، ٧٠. وينظر البحر المحيط ٦/ ٢١٨ وفيه : «يتصدعن» . وقال أبو حيان : وينبغى أن يجعل تفسيرا لمخالفتها سواد المصحف المجمع عليه ، ولرواية الثقاة عنه كقراءة الجمهور .

(٣ - ٣) فى ص ، ف ١ ، م : «عبد الله بن عوف» ، وفى ر ٢ : «عبد الرحمن» .

(٤) فى ص : «عيينة» .

(٥) ابن جرير ١٥/ ٦٤٤.

(٦) فى الأصل : «أو» .



﴿سَيَجْعَلُ لَهُمُ ٱلرَّحْمَـٰنُ وُدًّا﴾ . قال : فنزَلت فى عليٍّ[1] .

وأخرَج الطبرانىُّ ، وابنُ مَرْدُويَه ، عن ابنِ عباسٍ قال : نزَلَت فى عليِّ بنِ أبى طالبٍ : ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ ٱلرَّحْمَـٰنُ وُدًّا﴾ . قال : محبةً[2] فى قلوبِ المؤمنينَ[3] .

الدر المنثور في التفسير بالمأثور
لجلال الدين السيوطي
(٨٤٩هـ - ٩١١هـ)
تحقيق
الدكتور عبد الله بن عبد المحسن التركي
بالتعاون مع
مركز هجر للبحوث والدراسات العربية والإسلامية
الدكتور عبد السند حسن يمامة
الجزء العاشر

وأخرَج الحكيمُ الترمذىُّ ، وابنُ مَرْدُويَه ، عن علـ[ـيٍّ] ... ﷺ عن قولِه : ﴿سَيَجْعَلُ لَهُمُ ٱلرَّحْمَـٰنُ وُدًّا﴾ . ما ... صدورِ[5] المؤمنينَ والملائكةِ المقرَّبينَ ، يا عليُّ ، إن ا... المِقَةَ[7] والمحبةَ ، والحلاوةَ ، والمهابةَ فى صدورِ الصالـ...

وأخرَج عبدُ الرزاقِ ، والفريابىُّ ، وعبدُ بنُ حمـ... عباسٍ فى قولِه : ﴿سَيَجْعَلُ لَهُمُ ٱلرَّحْمَـٰنُ وُدًّا﴾ . ... الدنيا[9] .

(١) ابن مردويه - كما فى تخريج الكشاف ٢/ ٣٤١ ، ٣٤٢ - والديلمى (١٩٣٢) .

(٢) فى ح ٢ : «محبته» .

(٣) الطبرانى (١٢٦٥٥) . وقال الهيثمى : وفيه بشر بن عمارة وهو ضعيف . مجمع الزوائد ٧/ ٥٦.

(٤) بعده فى الأصل : «الصادقة» .

(٥) فى ح ١ ، م : «قلوب» .

(٦) سقط من : ح ٢.

(٧) فى ص ، ف ١ ، ح ١ ، م : «المنة» . والمِقَةُ : المحبة . النهاية ٤/ ٣٤٨.

(٨) الحكيم الترمذى ٢/ ٢٢٦.

(٩) عبد الرزاق ٢/ ١٤ مقتصرا على لفظ «محبة» ، وابن جرير ١٥/ ٦٤٢.

◈ अल्लामा सुयूती رحمة الله عليه की **'तफ्सीर दुर्रे मंसूर'** में है:

→ रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली رضي الله عنه से फ़रमाया: 'यह कहो: ऐ अल्लाह ﷻ ! मेरे लिए अपने पास अहद क़ायम कर लीजिये, मेरे लिए अपने पास मुहब्बत क़ायम कर दीजिये और मेरे लिए मो'मिनीन के दिलो में मवद्दत पैदा कर दीजिये, फिर यह आयत नाज़िल हुई "إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات سيجعل لهم الرحمان وداً" (बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किये अनक़रीब रहमान उनके लिए मुहब्बत पैदा कर देगा), रावी फ़रमाते हैं कि यह आयत हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में उतरी।

→ हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه से मरवी है कि : "إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات سيجعل لهم الرحمان وداً" हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में उतरी। इस से मुराद है कि मो'मिनीन के क़ुलूब में मुहब्बत पैदा कर दीजिये।

# كنز العمال

## في سنن الأقوال والأفعال

للعلامة علاء الدين علي المتقي بن حسام الدين الهندي البرهان فوري المتوفى سنة ٩٧٥

### الجزء الثالث عشر

ضبطه وفسر غريبه
الشيخ بكري حياني

صححه ووضع فهارسه ومفتاحه
الشيخ صفوة السقا

مؤسسة الرسالة

---

النعل في الحجرة ، فخرج علينا علي ومعه نعل رسول الله ﷺ يُصلِحُ منها (ش، حم، ع، حب، ك، حل، ص).

٣٦٣٥٢ ـ عن العباس قال : جئتُ أنا وعلي إلى النبي ﷺ فلما رآنا قال : بخٍ لكما ! أنا سيدُ ولدِ آدم وأنتما سيدا العربِ (كر).

٣٦٣٥٣ ـ عن ابن عباس قال : ما أنزل الله سورةً في القرآن إلا كان علي أميرَها وشريفَها ، ولقد عاتبَ اللهُ أصحاب محمدٍ ﷺ وما قال لعلي إلا خيراً (أبو نعيم).

٣٦٣٥٤ ـ عن ابن عباس قال : تصدق علي بخاتمه وهو راكعٌ فقال النبي ﷺ للسائل : من أعطاك هذا الخاتمَ ؟ قال : ذاك الراكعُ فأنزل الله فيه « إنما وليُكم الله ورسولُه » وكان في خاتمه مكتوباً : سبحانَ مَن فخرني بأني له عبدٌ . ثم كتبَ في خاتمه بعدُ : الملكُ للهِ (خط في المتفق وفيه مطلب بن زياد وثقه حم وابن معين ، وقال أبو حاتم : لا يحتج بحديثه).

٣٦٣٥٥ ـ عن ابن عباس قال : لما زوّج النبي ﷺ فاطمة من علي قالت فاطمة : يا رسول الله ! زوجني من رجلٍ فقيرٍ ليس له شيء فقال النبي ﷺ : أما ترضينَ أن الله اختارَ من أهلِ الأرض رجلين :

◈ 'कन्जुल उम्माल' में है की : हज़रत इब्न अब्बास ﷛ फ़रमाते हैं :

→ हज़रत अली ﷛ ने रुकूअ की हालत में अपनी अंगूठी सदक़ा की, तो नबी ﷺ ने साइल से पूछा: 'यह अंगूठी तुम्हे किस ने दी है?' उस ने कहा: 'उस रुकूअ करने वाले ने,' फिर उन के बारे में यह आयत उतरी "إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكاة وهم راكعون" (बेशक तुम्हारे दोस्त अल्लाह ﷻ, उसके रसूल और वह लोग हैं जो ईमान लाए, जो कि नमाज़ क़ायम करते हैं, और ज़कात देते हैं इस हाल में के वह रुकूअ में होते हैं)।

# تفسير القرآن العظيم

مسنداً

عن رسول الله ﷺ والصحابة والتابعين

تأليف

الإمام الحافظ عبد الرحمن بن محمد
ابن إدريس الرازي ابن أبي حاتم

المتوفى سنة ٣٢٧هـ

تحقيق

أسعد محمد الطيب

المجلد الأول

إعداد: مركز الدراسات والبحوث بمكتبة نزار الباز

مكتبة نزار مصطفى الباز
مكة المكرمة - الرياض



قوله تعالى: ﴿ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء﴾

[٦٥٤٥] حدثنا أحمد بن عثمان بن حكيم، ثنا أحمد بن مفضل، ثنا أسباط، عن السدى قوله: ﴿يؤتيه من يشاء﴾ قال: يختص به من يشاء.

قوله تعالى: ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا﴾ آية ٥٥

[٦٥٤٦] حدثنا أبي ثنا أبو صالح كاتب الليث، حدثنا معاوية بن صالح عن علي بن أبي طلحة عن ابن عباس قوله: ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا﴾ يعني: إنه من أسلم تولاه الله ورسوله والذين آمنوا.

قوله تعالى: ﴿والذين آمنوا﴾

[٦٥٤٧] حدثنا أبو سعيد الأشج ثنا المحاربي، عن عبد الملك بن أبي سليمان قال : سألت أبا جعفر محمد بن علي عن قوله: ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا﴾قلت: نزلت في علي[1] قال: علي من الذين آمنوا.

[٦٥٤٨] حدثنا الحسن بن عرفة، ثنا عمر بن عبد الرحمن أبو حفص عن السدى قوله: ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا﴾ قال: هم المؤمنون وعلي منهم

[٦٥٤٩] حدثنا الربيع بن سليمان المرادي، ثنا أيوب بن سويد عن عقبة بن أبي حكيم في قوله: ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا﴾ قال: علي بن أبي طالب.

قوله تعالى: ﴿الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة﴾

[٦٥٥٠] حدثنا علي بن الحسين، ثنا عبد الرحمن بن إبراهيم دحيم، ثنا الوليد ثنا عبد الرحمن بن نمر قال: قال الزهري: إقامتها: أن تصلي الأوقات الخمس لوقتها.

قوله تعالى: ﴿ويؤتون الزكاة وهم راكعون﴾

[٦٥٥١] حدثنا أبو سعيد الأشج ثنا الفضل بن دكين أبو نعيم الأحول، ثنا موسى بن قيس الحضرمي عن سلمة بن كهيل قال: تصدق علي بخاتمه وهو راكع فنزلت ﴿إنما وليكم الله رسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون﴾

(٢) قال ابن كثير : إن هذه الآيات كلها نزلت في عبادة بن الصامت رضي الله عنه حين تبرأ من حلف يهود ورضي بولاية الله ورسوله والمؤمنين .فكل من رضي بولاية الله ورسوله والمؤمنين فهو مفلح في الدنيا والآخرة -٣ / ١٣١ .

◈ अल्लामा राज़ी बिन अबी हातिम ﷺ की **तफ्सीर** में है:

→ उक़्बा बिन हकीम कहते हैं: "**إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا**" हज़रत अली ؓ के बारे में उतरी ।

→ सल्लमा बिन कहील कहते हैं: हज़रत अली ؓ ने रुकूअ की हालत में अपनी अंगूठी सदक़ा की तो यह आयत नाज़िल हुई: "**إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكاة وهم راكعون**" (बेशक तुम्हारें दोस्त अल्लाह ﷻ, उस के रसूल ﷺ और वह लोग हैं जो ईमान लाए, जो के नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं, इस हाल में के वह रुकूअ में होते हैं।)

# أحكام القرآن

للإمام الفقيه

عماد الدين بن محمد الطبري المعروف بالكيا الهراسي

المتوفى سنة ٥٠٤ هجرية

ضبطها وصححها

جماعة من العلماء باشراف الناشر

الجزء الثالث والرابع

دار الكتب العلمية

بيروت - لبنان



(فقل لن تخرجوا معي أبداً ولن تقاتلوا معي عدواً)[١].

ولا يجوز أن يكون المراد به علياً ، لأن الله تعالى قال : تقاتلونهم أو يسلمون ، وعلي ما حارب قوماً في أيامه على أن يسلموا ، ولم يحارب أحد بعد النبي عليه الصلاة والسلام على أن يسلموا غير أبي بكر ، فدلت الآية على صحة إمامته[٢].

قوله تعالى : (إنما وليكم الله ورسوله)[٣] الآية :

يدل على أن العمل القليل لا يبطل الصلاة ، فإن التصرف بالخاتم في الركوع عمل جاء به في الصلاة ، ولا يبطل الصلاة.

وقوله : (ويؤتون الزكاة وهم راكعون)[٤] يدل أيضاً على أن صدقة التطوع تسمى زكاة ، فإن علياً تصدق بخاتمه تطوعاً في الركوع ، وهو نظير قوله تعالى :

(وما آتيتم من زكاة تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون)[٥] ، وقد انتظم النفل والفرض ، فصار إسم الزكاة شاملاً للفرض والنفل ، كاسم الصدقة ، واسم الصلاة ينتظم الأمرين.

قوله تعالى : (يا أيها الذين آمنوا لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزواً ولعباً من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء)[٦].

---

(١) سورة التوبة آية ٨٣ .
(٢) انظر احكام القرآن للجصاص ج ٤ ص ١٠١ .
(٣) سورة المائدة آية ٥٥ .
(٤) سورة المائدة آية ٥٥ .
(٥) سورة الروم آية ٣٩ .
(٦) سورة المائدة آية ٥٧ .

◈ इमाम तिबरी ﷺ की तफ़्सीर **'अहकामुल क़ुरआन में'** है:

→ अल्लाह ﷻ का इरशाद "**إنما وليكم الله ورسوله**" इस बात पर दलालत करता है कि अमल क़लील से नमाज़ बातिल नहीं होती, इस लिए कि रुकूअ की हालत में अंगूठी से तसर्रुफ़ नमाज़ में हुआ और नमाज़ बातिल नहीं हुई। और इरशादे बारी "**ويؤتون الزكاة وهم راكعون**" इस बात पर दलालत करता है के नफ्ली सदक़े को भी (लुग़त में) ज़कात कहा जाता है इसलिए कि हज़रत अली ﷺ ने बहालते रुकूअ नफ्ली तौर पर अंगूठी का सदक़ा किया था, और उसी की नज़ीर यह क़ौल है "**وما آتيتم من زكاة تريدون به وجه الله فاولائك هم المضعفون**" (और जो कुछ सदक़ा व ज़कात तुम अल्लाह ﷻ की ख़ुशनूदी के लिए दो, तो ऐसे ही लोग अपना दो चन्द करनेवाले हैं)। और यह आयत में नफल व फ़र्ज़ दोनों को शामिल है, इस तरह ज़कात का लफ्ज़ फर्ज़ो नफल दोनों सदको पर मुश्तमिल है, जिस तरह सदक़ा और सलात का लफ्ज़ दोनों के लिए इस्तेमाल होता है।

# الدر المنثور في التفسير بالمأثور

لجلال الدين السيوطي

(٨٤٩هـ - ٩١١هـ)

تحقيق

الدكتور عبد الله بن عبد المحسن التركي

بالتعاون مع

مركز هجر للبحوث والدراسات العربية والإسلامية

الدكتور عبد السند حسن يمامة

الجزء الخامس



راكعٌ . قال : وذلك عليُّ بنُ أبى طالبٍ . فكبَّر رسولُ اللهِ ﷺ عندَ ذلك وهو يقولُ : « ﴿وَمَن يَتَوَلَّ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَإِنَّ حِزْبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْغَـٰلِبُونَ﴾ »[1].

وأخرَج الطبرانىُّ ، وابنُ مردُويَه ، وأبو نعيمٍ [2]فى « المعرفةِ »[2] ، عن أبى رافعٍ قال : دخَلتُ على رسولِ اللهِ ﷺ وهو نائمٌ ، [3]أو يُوحى إليه ، فإذا حيَّةٌ[3] فى جانبِ البيتِ ، فكرِهتُ أن أثِبَ عليها فأُوقِظَ النبىَّ ﷺ ، وخفتُ أن يكونَ يُوحى إليه ، فاضطَجعتُ بينَ الحيَّةِ وبينَ النبىِّ ﷺ ، لئن كان منها سوءٌ كان بى دونَه ، فمكَثتُ ساعةً واستيقظَ النبىُّ ﷺ وهو يقولُ : « ﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُمْ رَٰكِعُونَ﴾ . الحمدُ للهِ الذى أتمَّ لعلىٍّ نعمَه ، وهنيئًا لعلىٍّ بفضلِ اللهِ إيَّاه »[4].

وأخرَج ابنُ مَردُويه عن ابنِ عباسٍ قال : كان علىُّ بنُ أبى طالبٍ قائمًا يصلِّى ، فمرَّ سائلٌ وهو راكعٌ ، فأعطاه خاتمَه ، فنزَلت هذه الآيةُ : ﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ﴾[5].

وأخرَج ابنُ مردُويه عن ابنِ عباسٍ فى قولِه : ﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟﴾ الآية . قال : نزَلت فى الذين آمنوا ، وعلىُّ بنُ أبى طالبٍ أوَّلُهم[6] .

وأخرَج ابنُ جريرٍ ، وابنُ أبى حاتمٍ ، عن ابنِ عباسٍ فى قولِه : ﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ

---

(١) ابن مردويه - كما فى تفسير ابن كثير ١٣٠/٣ .

(٢ - ٢) سقط من : م .

(٣ - ٣) فى الأصل ، ص ، ف ٢: « أوحيه » ، وفى ب ١: « أى يوحى إليه وإذا حية » .

(٤) الطبرانى (٩٥٥) - وابن مردويه - كما فى تفسير ابن كثير ١٣٠/٣ .

(٥) ابن مردويه - كما فى تفسير ابن كثير ١٣٠/٣ . وقال ابن كثير : الضحاك لم يلق ابن عباس . ثم قال عن هذه الأحاديث والآثار : وليس يصح شىء منها بالكلية ، لضعف أسانيدها وجهالة رجالها .

(٦) ابن مردويه - كما فى تفسير ابن كثير ١٣٠/٣ .

◈ अल्लामा सुयूती ؒ की **'तफ्सीर दुर्रे मंसूर'** में है:

→ हज़रत अबू राफेअ ؓ फ़रमाते हैं: मैं रसूलल्लाह ﷺ के पास आया उस वक़्त आप सो रहे थे, या आप ﷺ पर वही उतर रही थी, मैंने देखा कि घर के कोने में सांप है, मैं ने यह नापसंद किया कि उस की तरफ छलांग लगाऊ, जिस से रसूलल्लाह ﷺ बेदार हो जाएँ, और मुझे यह भी डर था के (हो सकता है) आप ﷺ पर वही उतर रही हो तो मैं सांप के और रसूलल्लाह ﷺ के दरमियान लेट गया, कि अगर इसकी तरफ से कोई तकलीफ पहुँचती है तो मुझे पहुँचे, मैं थोड़ी देर ऐसे ही रहा, और फिर आप ﷺ यह पढ़ते हुए बेदार हुए "**إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكاة وهم راكعون**" ( बेशक तुम्हारे दोस्त अल्लाह ﷻ, उस के रसूल और वह लोग हैं जो ईमान लाए, जो की नमाज़ क़ायम करते हैं, और ज़कात देते हैं, इस हाल में कि वह रुकूअ में होते हैं)। तमाम तारीफें अल्लाह ﷻ ही के लिए हैं जिसने अली ؑ के लिए अपनी नेअमते पूरी कर दीं, अली ؑ को अल्लाह ﷻ का यह खुसूसी फ़ज़ल मुबारक हो।

أبو طاهر إبْرَاهيم بن مُحَمَّد بن عمر بن يَحْيَىٰ العلوي، أنا أبو المُفَضَّل مُحَمَّد بن عَبْد اللّه بن مُحَمَّد الشيباني، نا مُحَمَّد بن محمود ابن بنت الأشج الكندي الكوفي نزيل اسكران[١] سنة ثماني عشرة وثلاثمائة، نا مُحَمَّد بن عَنْبَس بن هشام الناشري، نا إسحاق بن يزيد، حدّثني عَبْد المؤمن بن القاسم، عَن صالح بن ميثم، عَن بليم[٢] بن العلاء، عَن أبي ذرّ قال:

قال رَسُول الله ﷺ: «مَثَل علي فيكم ـ أو قال: في هذه الأمة ـ كَمَثَل الكعبة المستورة[٣]، النظر إليها عبادة، والحج إليها فريضة»[٨٩٤٨].

أخْبَرَنا أبو عَبْد الله الفُرَاوي، أنا أبو الحسَين الفارسي، أنا أبو سُلَيْمَان الخطابي، قال: معناه والله أعلم أن النظر إلى وجهه: يدعو إلى ذكر الله لما يتوسم فيه من نور الإسلام، ويُرى عليه من بهجة الإيمان، ولما يتبين فيه من أثر السجود وسيماء الخشوع، وبذلك نعته الله فيمن معه من صحابة الرسول ﷺ فقال: ﴿سيماهم في وجوههم من أثر السجود﴾[٤]. وهذه كما يُروى لابن سيرين أنه دخل السّوق، فلما نُظر إليه[٥] ـ وقد جهدته العبادة ونهكته ـ سبّحوا.

أخْبَرَنا أبو الحسَن السُّلَمي، أنا أبو القاسم بن أبي العلاء، أنا أبو جابر زيد بن عَبْد الله، أنا مُحَمَّد بن عمر الجعابي، نا عَبْد اللّه بن يزيد أبو مُحَمَّد، نا الحسَن بن صابر الهاشمي، نا وكيع، عَن هشام بن عروة، عَن أبيه، عَن عائشة قالت: قال رَسُول الله ﷺ: «ذكر عَلي عبادة»[٨٩٤٩]

أخْبَرَنا أبو سعد[٦] المطرز، وأبو عَلي الحداد، وأبو القاسم غانم بن مُحَمَّد بن عُبَيْد الله، ثم أخبرنا أبو المعالي عَبْد اللّه بن أحْمَد بن مُحَمَّد، أنا أبو عَلي الحداد قالوا: أنا أبو نُعَيم الحافظ، نا سُلَيْمَان بن أحْمَد[٧]، نا عَبْد الرَّحمن بن مُحَمَّد بن سالم الرازي[٨]، نا مُحَمَّد بن يَحْيَىٰ بن ضُرَيس العَبْدي، نا عيسى بن عَبْد اللّه بن عُبَيْد اللّه بن عمر بن عَلي بن أبي طالب، حدّثني أبي، عَن أبيه، عَن جده، عَن عَلي قال:

(١) كذا بالأصل والمطبوعة، والذي في معجم البلدان: إسكاف؟ وفيه أيضاً: أسكر؟ والذي في م: إسكراذ.
(٢) في م: «بولم».
(٣) كذا بالأصل وم، وفي المطبوعة: المنشورة.
(٤) سورة الفتح، الآية: ٤٨.
(٥) كذا بالأصل وم والمختصر: «نظر إليه» وفي المطبوعة: نظروا إليه.
(٦) الأصل وم: أبو سعيد المطرز، تصحيف، والتصويب عن « ز »، والسند معروف.
(٧) من طريقه رواه ابن كثير في البداية والنهاية ـ ٧/ ٣٩٤.
(٨) في البداية والنهاية: عبد الرحمن بن مسلم الرازي.



نزلت هذه الآية على رَسُول الله ﷺ ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصّلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون﴾[١] فخرج رَسُول الله ﷺ، فدخل المسجد والناس يصلون بين راكع وقائم يصلّي، فإذا سائل، فقال: «يا سائل هل أعطاك أحدٌ شيئاً؟» فقال: لا إلاّ هذاك الراكع ـ لعَلي ـ أعطاني خاتمه[٨٩٥٠].

أخْبَرَنا[٢] خالي أبو المعالي القاضي، أنا أبو الحسَن الخِلَعي، أنا أبو العباس أحْمَد بن مُحَمَّد الشاهد، نا أبو الفضل مُحَمَّد بن عَبْد الرَّحمن بن عَبْد اللّه بن الحارث الرملي، أنا القاضي جملة بن محمد[٣]، نا أبو سعيد الأشج، نا أبو نُعيم الأحوَل، عَن موسى بن قيس، عَن سَلَمة قال:

تصدق علي بخاتمه وهو راكع فنزلت: ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصّلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون﴾.

تاريخ مدينة دمشق
وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها
تصنيف
الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي
المعروف بابن عساكر
الجزء الثاني والأربعون
دار الفكر

أخْبَرَنا أبو القَاسم عَلي بن إبْرَاهيم العلوي قال ...
عقيل بن العبّاس قلت له: أخبركم الحسَين بن عَبْد ال...
ح وأخْبَرَنا أبو مُحَمَّد عَبْد الكريم بن حمزة ...
عَبْد اللّه بن هشام بن سِوَار العبسي[٤] الداراني، أنا ...
مُحَمَّد بن إسحاق، أنا أبو عَلي أحْمَد بن مُحَمَّد بن ...
عيسى بن يزيد البلوي ـ بمصر ـ نا يَحْيَىٰ بن سُلَيْمَان ...
عَن أنس أنه قال:

قعد العبّاس وشيبة صاحب البيت يفتخران، فـ...
رَسُول الله ﷺ، ووصيّ أبيه، وساقي الحجيج، فقال ...
بيته، وخازنه، أفلا ائتمنك كما ائتمنني؟ فهما على ذلـ...
فقال له العبّاس: على رسلك يا ابن أخ، فوقف عليّ ...
فاخرني، فزعم أنه أشرف مني، فقال: فما قلت لـ...

(١) سورة المائدة، الآية: ٥٥.
(٢) رواه ابن كثير نقلاً عن ابن عساكر: البداية والنهاية ٧/ ٣٠٩٥.
(٣) كذا بالأصل، وم، و« ز »، والمطبوعة، وفي البداية والنهاية: جملة بن محمد.
(٤) كذا بالأصل، وم، و« ز »، والمطبوعة: العبسي، بالباء.
(٥) كذا بالأصل والمطبوعة، وفي م: جبرون.

◈ इब्न असाकिर ﷫ की **'तारीख़ दिमश्क़ में'** है:

→ रसूलल्लाह ﷺ पर "**إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكاة وهم راكعون**" नाज़िल हुई तो आप मस्जिद में तशरीफ़ लाए, लोग नमाज़ पढ़ रहे थे, कोई रुकूअ में था और कोई क़याम में, उसी दौरान आप ने एक साइल देखा, उस से पूछा: 'क्या तुझे किसी ने कुछ दिया?' उस ने कहा: 'नहीं,' मगर उस रुकूअ करने वाले-या'नी अली ﷜ ने, उसने मुझे अपनी अंगूठी दी है।

→ हज़रत सल्लमा ﷜ फ़रमाते हैं: हज़रत अली ﷜ ने बहालते रुकूअ अपनी अंगूठी सदक़ा की तो यह आयत "**إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكاة وهم راكعون**" नाज़िल हुई।

# جامع الأصول في أحاديث الرسول

تأليف

الإمام مجد الدين أبي السعادات المبارك بن محمد، ابن الأثير الجزري

٥٤٤ - ٦٠٦هـ

جمع فيه المؤلف الأصول الستة المعتمدة عند الفقهاء والمحدثين: الموطأ، البخاري، مسلم، أبو داود، الترمذي، النسائي
ورتبها، وهذبها، وذلل صعابها، وشرح غريبها، ووضح معانيها. قال ياقوت: أقطع قطعاً أنه لم يصنف مثله قط

حقق نصوصه، وخرج أحاديثه، وعلق عليه

عبد القادر الأرناؤوط

## الجزء الثامن

نشر وتوزيع

مكتبة الحلواني — حسين ناظم الحلواني
مطبعة الملاح — عبد الله الملاح
مكتبة دار البيان — بشير عيون

٦٥١٥ (عبد الله بن سلام رضي الله عنه) قال: «أتيتُ رسول الله ﷺ، ورَهطٌ من قومي، فقلنا: إن قومنا حادُّونا لما صدَّقنا الله ورسوله، وأقسموا لا يُكلِّمونا، فأنزل الله تعالى (إنما وَلِيُّكُمُ اللهُ وَرَسُولُهُ والذين آمَنُوا) [المائدة: ٥٥] ثم أذَّن بلال لصلاة الظهر، فقام الناس يُصلُّون، فمن بين ساجدٍ وراكعٍ وسائل، إذا سائلٌ يسأل، فأعطاه عليٌّ خاتَمه وهو راكع، فأخبر السائلُ رسولَ الله ﷺ، فقرأ علينا رسولُ الله ﷺ (إنما وليُّكم اللهُ ورسولُه والذين آمنوا، الذين يُقيمون الصَّلاةَ، ويُؤتون الزكاةَ، وهم راكِعُون. ومَنْ يتولَّ اللهَ ورسولَهُ والذين آمنوا، فإنَّ حِزْبَ اللهِ هُم الغالِبُون) [المائدة: ٥٥، ٥٦]» أخرجه ...[1]

[شرح الغريب]

(المحادّة): المخالفة والمنازعة.

تم - بعون الله تعالى وتوفيقه - الجزء الثامن من «جامع الأصول في أحاديث الرسول ﷺ» ويليه الجزء التاسع، وأوله مناقب طلحة ابن عبيد الله رضي الله عنه

(١) كذا في الأصل بياض بعد قوله: أخرجه، وفي المطبوع: أخرجه رزين، وقد رواه بنحوه ابن مردويه من طريق الكلبي عن أبي صالح عن ابن عباس، وإسناده ضعيف.

◈ अल्लामा इब्न असीर जिज़री ﷫ की **‘जामे अलउसूल’** में है:

→ हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम फ़रमाते हैं: मैं और मेरी क़ौम की एक जमाअत रसूलल्लाह ﷺ के पास आये और कहा: हमारी क़ौम ने हम से इस वजह से दुश्मनी की है कि हम ने अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ की तस्दीक़ की, और उन्होंने यह क़सम खाई है कि हम से बात नहीं करेंगे,’ तो अल्लाह ﷻ ने यह आयत नाज़िल की “إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا”, फिर हज़रत बिलाल ؓ ने जुहर की अज़ान दी, लोग नमाज़ पढ़ने लगे, कोई सजदा कर रहा था कोई रुकूअ, के इतने में एक साइल सवाल करने लगा, तो हज़रत अली ؓ ने बहालते रुकूअ उसे अपनी अंगूठी दे दी, साइल ने रसूलल्लाह ﷺ को ख़बर दी, तो आप ﷺ ने यह आयत पढ़ी

”إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة ويؤتون
الزكاة وهم راكعون، ومن يتول الله ورسوله والذين آمنوا ،فإن
حزب الله هم الغالبون“۔

(सुरह माइदह : 55-56)

“إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكاة وهم راكعون” (बेशक तुम्हारे दोस्त अल्लाह ﷻ, उसके रसूल ﷺ और वो लोग हैं जो ईमान लाए , जो कि नमाज़ क़ायम करते हैं, और ज़कात देते हैं, इस हाल में कि वह रुकूअ में होते हैं और जो शख़्स अल्लाह ﷻ, उसके रसूल ﷺ और ईमानवालों से दोस्ती रखता है, तो बेशक अल्लाह ﷻ की जमात ही ग़ालिब आने वाली है।)

# المحرر الوجيز

## في تفسير الكتاب العزيز

للقاضي أبي محمد عبد الحق بن غالب بن عطية الأندلسي

المتوفى سنة ٥٤٦ هـ

تحقيق

عبد السلام عبد الشافي محمد

طبعة محققة عن نسخة آيا صوفيا - استانبول، رقم (١١٩)

المحفوظة صورتها في مكتبة مرعشي نجفي - قم

الجزء الثاني

منشورات

محمد علي بيضون

لنشر كتب السنة والجماعة

دار الكتب العلمية

بيروت - لبنان



قال القاضي أبو محمد: وهذا على أن يكون قوله تعالى: ﴿يا أيها الذين آمنوا﴾ خطاباً للمؤمنين الحاضرين يعم مؤمنهم ومنافقهم. لأن المنافقين كانوا يظهرون الإيمان، والإشارة بالارتداد إلى المنافقين، والمعنى أن من نافق وارتد فإن المحققين من الأنصار يحمون الشريعة ويسد الله بهم كل ثلم، وقرأ أبو عمرو وابن كثير وحمزة والكسائي وعاصم «يرتد» بإدغام الدال في الدال، وقرأ نافع وابن عامر «يرتدد» بترك الإدغام، وهذه لغة الحجاز، مكة وما جاورها، والإدغام لغة تميم، وقوله تعالى ﴿أذلة على المؤمنين﴾ معناه متذللين من قبل أنفسهم غير متكبرين، وهذا كقوله تعالى: ﴿أشداء على الكفار رحماء بينهم﴾ [الفتح: ٢٩]. وكقوله عليه السلام «المؤمن هين لين»، وفي قراءة ابن مسعود «أذلة على المؤمنين غلظاء على الكافرين»، وقوله تعالى: ﴿ولا يخافون لومة لائم﴾ إشارة إلى الرد على المنافقين في أنهم كانوا يعتذرون بملامة الأخلاق والمعارف من الكفار ويراعون أمرهم، وقوله تعالى: ﴿ذلك فضل الله﴾ الإشارة بذلك إلى كون القوم يحبون الله ويحبهم، وقد تقدم القول غير مرة في معنى محبة الله للعبد وأنها إظهار النعم المنبئة عن رضاه عنه وإلباسه إياها. و ﴿واسع﴾ معناه ذو سعة فيما يملك ويعطي وينعم.

قوله عز وجل:

﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ (٥٥) وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ (٥٦) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ (٥٧)﴾

الخطاب بقوله: ﴿إنما وليكم الله﴾ الآية للقوم الذين قيل لهم ﴿لا تتخذوا اليهود والنصارى أولياء﴾ [المائدة: ٥١]، و ﴿إنما﴾ في هذه الآية حاصرة يعطي ذلك المعنى، وولي اسم جنس، وقرأ ابن مسعود «إنما موليكم الله» وقوله: ﴿والذين آمنوا﴾ أي ومن آمن من الناس حقيقة لا نفاقاً وهم ﴿الذين يقيمون الصلاة﴾ المفروضة بجميع شروطها ﴿ويؤتون الزكاة﴾، وهي هنا لفظ عام للزكاة المفروضة وللتطوع بالصدقة ولكل أفعال البر، إذ هي تنمية للحسنات مطهرة للمرء من دنس الذنوب، فالمؤمنون يؤتون من ذلك كل بقدر استطاعته، وقرأ ابن مسعود «وآمنوا والذين يقيمون» بواو، وقوله تعالى: ﴿وهم راكعون﴾ جملة معطوفة على جملة، ومعناها وصفهم بتكثير الصلاة وخص الركوع بالذكر لكونه من أعظم أركان الصلاة، وهو هيئة تواضع فعبر به عن جميع الصلاة. كما قال ﴿والركع السجود﴾ [البقرة: ١٢٥] وهي عبارة عن المصلين، وهذا قول جمهور المفسرين، ولكن اتفق أن علياً بن أبي طالب أعطى صدقة وهو راكع، قال السدي: هذه الآية في جمع المؤمنين ولكن علياً بن أبي طالب مر به سائل وهو راكع في المسجد فأعطاه خاتمه، وروي في ذلك أن النبي صلى الله عليه وسلم خرج من بيته وقد نزلت عليه الآية فوجد مسكيناً فقال له هل أعطاك أحد شيئاً فقال نعم، أعطاني ذلك الرجل الذي يصلي خاتماً من فضة، وأعطانيه وهو راكع، فنظر النبي صلى الله عليه وسلم فإذا الرجل الذي أشار إليه علي بن أبي طالب، فقال النبي صلى الله عليه وسلم، الله أكبر وتلا الآية على الناس.

◈ क़ाज़ी अबू मुहम्मद अब्दुलहक़ इंदलूसि ﷬ की तफ्सीर ''المحرر الوجيز'' में आयत

''إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون،ومن يتول الله ورسوله والذين آمنوا ،فإن حزب الله هم الغالبون ، يا أيها الذين آمنوا لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء ،واتقوا الله إن كنتم مؤمنين''

के जेल में है:

''وهم راكعون'' जुमला मातूफा है ''الذين آمنوا والذين يقيمون'' पर, मतलब यह है कि अल्लाह ﷻ ने सहाबा की सिफ़त नमाज़ की कसरत को ज़िक्र किया, और ख़ास कर रुकूअ का ज़िक्र इसलिए किया कि यह नमाज़ के अज़ीम अरकान में से है, और यह तवाज़े की हय्यत पर होता है, तो अल्लाह ﷻ ने रुकूअ से पूरी नमाज़ की ताबीर की है,जैसा के एक जगह है ''والركع السجود'' [बक़रह : 125] इस आयत में मुराद नमाज़ी हैं । जम्हूरे मुफ़स्सिरीन का यही क़ौल है और लेकिन इत्तेफ़ाक़ यही हुआ कि हज़रत अली ﷺ ने रुकूअ की हालत में अपनी अंगूठी सदक़ा की।

→ इमाम सुद्दी ﷬ कहते हैं: यह आयत तमाम मो'मिनीन के बारे में है, लेकिन हज़रत अली ﷺ के पास से एक साइल गुज़रा, आप (रदि.) रुकूअ में थे, तो आप ने उसे अपनी अंगूठी दे दी और इस सिलसिले में यह रिवायत भी बयान की गई है के: रसूलल्लाह ﷺ अपने घर से निकले, यह आयत आप ﷺ पर नाज़िल हो चुकी थी, एक साइल देखा तो पूछा: 'क्या किसी ने तुझे कुछ दिया?' उस ने कहा: 'हाँ उस आदमी ने जो नमाज़ पढ़ रहा है मुझे चांदी की अंगूठी दी है, और बहालते रुकूअ दी है,' रसूलल्लाह ﷺ ने देखा तो वह शख़्स जिसकी तरफ उसने इशारा किया था हज़रत अली ﷺ थे, तो आप ﷺ ने कहा: 'अल्लाहु अकबर' फिर लोगों के सामने यह आयत पढ़ी।

# تفسير البغوي

## «معالم التنزيل»


للإمام محيي السنة أبي محمد الحسين بن مسعود البغوي

( المتوفى - ٥١٦هـ)


## المجلد الثالث


حققه وخرج أحاديثه

محمد عبد الله النمر — عثمان جمعة ضميرية — سليمان مسلم الحرش


دار طيبة للنشر والتوزيع

الرياض - شارع عسير - ص.ب: ٧٦١٢




﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ (٥٧) وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ (٥٨) قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقِمُونَ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ (٥٩)﴾

راكعون﴾، صلاة التطوع بالليل والنهار، قاله ابن عباس رضي الله عنهما.

وقال السدي: قوله: «والذين آمنوا الذين يُقيمون الصلاةَ ويُؤتونَ الزكاةَ وهم راكعُون»، أراد به علي بن أبي طالب رضي الله عنه، مرّ به سائل وهو راكع في المسجد فأعطاه خاتمه[1].

وقال جُويبر عن الضحاك في قوله: ﴿إنّما وليُّكم الله ورسولُه والذين آمنوا﴾، قال: هم المؤمنون بعضهم أولياء بعض، وقال أبو جعفر محمد بن علي الباقر: ﴿إنما وليُّكُمُ الله ورسولُهُ والذينَ آمنوا﴾، نزلت في المؤمنين، فقيل له: إنّ أُناساً يقولون إنها نزلت في علي رضي الله عنه، فقال: هو من المؤمنين[2].

﴿ومنْ يتولَّ الله ورسولَهُ والذينَ آمنُوا﴾، يعني: يتولّى القيام بطاعة الله ونصرة رسوله والمؤمنين، قال ابن عباس رضي الله عنهما: يريد المهاجرين والأنصار، ﴿فإنّ حزبَ الله﴾، يعني: أنصار دين الله، ﴿هم الغالبون﴾.

قوله عزّ وجلّ: ﴿يا أيها الذينَ آمنُوا لا تتخذوا الذينَ اتخذوا دينَكم هُزُواً ولعباً﴾ قال ابن عباس كان رفاعة بن زيد بن التابوت وسويد بن الحارث قد أظهرا الإسلام، ثم نافقا وكان رجال من المسلمين يوادُّونهما، فأنزل الله عزّ وجلّ هذه الآية[3]: «ياأيها الذين آمنُوا لا تتخذوا الذين اتخذوا دينَكم هُزواً ولعباً»، بإظهار ذلك بألسنتهم قولاً وهم مستبطنون الكفر، ﴿من الذين أوتُوا الكتابَ من قبلكم﴾، يعني: اليهود، ﴿والكفار﴾، قرأ أهل البصرة والكسائي «الكفارِ»، بخفض الراء، [يعني:

(١) أخرجه الطبري: ١٠/٤٢٥-٤٢٦. وفيه عن السدي: هؤلاء جميع المؤمنين، ولكن علي بن أبي طالب مرّ به سائل وهو راكع.. وانظر: الدر المنثور: ٣/١٠٤-١٠٥.

(٢) أخرجه الطبري: ١٠/٤٢٥. وانظر: الدر المنثور: ٣/١٠٦.

(٣) انظر: سيرة ابن هشام: ١/٥٦٨، تفسير الطبري: ٦/٢٩٠، أسباب النزول للواحدي ص (٢٣١)، الدر المنثور: ٣/١٠٧.

**'तफ्सीर बगावी'** में है:

→ सुद्दी ﷺ कहते हैं: इरशाद बारी

**"إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكاة وهم راكعون"** ( बेशक तुम्हारे दोस्त अल्लाह ﷻ, उसके रसूल ﷺ और वह लोग हैं जो ईमान लाए, जो कि नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं, इस हाल में कि वह रुकूअ में होते हैं) से मुराद हज़रत अली ﷺ हैं, उनके पास से एक साइल गुज़रा, आप मस्जिद में रुकूअ की हालत में थे तो आप ने उसे अंगूठी दी।

# صحيح مسلم

للإمام أبي الحسين مسلم بن الحجاج القشيري النيسابوري

٢٠٦-٢٦١هـ

لو أن أهل الحديث يكتبون مائتي سنة الحديث فمدارهم على هذا المسند

صنفت هذا المسند الصحيح من ثلاثمائة ألف حديث مسموعة

مسلم بن الحجاج

طبعة معتنى بها مرقمة

الأحاديث مع الفهارس

دار المغني

٣٣-(٠٠٠) وحدثنا أبو كريب. أخبرنا ابن إدريس. حدثنا أبو حيان عن الشعبي عن ابن عمر قال: سمعت عمر بن الخطاب، على منبر رسول الله ﷺ، يقول: أما بعد. أيها الناس فإنه نزل تحريم الخمر وهي من خمسة: من العنب، والتمر، والعسل، والحنطة، والشعير. والخمر ما خامر العقل. وثلاث، أيها الناس وددت أن رسول الله ﷺ كان عهد إلينا فيهن عهداً ننتهي إليه: الجد، والكلالة، وأبواب من أبواب الربا.

(٠٠٠) وحدثنا أبو بكر بن أبي شيبة. حدثنا إسماعيل بن علية. ح وحدثنا إسحق بن إبراهيم. أخبرنا عيسى بن يونس. كلاهما عن أبي حيان بهذا الإسناد، بمثل حديثهما. غير أن ابن علية في حديثه: العنب. كما قال ابن إدريس. وفي حديث عيسى: الزبيب كما قال ابن مسهر.

(٧) باب في قوله تعالى: هذان خصمان اختصموا في ربهم

٣٤-(٣٠٣٣) حدثنا عمرو بن زرارة. حدثنا هشيم عن أبي هاشم، عن أبي مجلز، عن قيس بن عباد، قال: سمعت أبا ذر يقسم قسماً إن: {هذان خصمان اختصموا في ربهم} [٢٢/الحج الآية: ١٩] إنها نزلت في الذين برزوا يوم بدر: حمزة، وعلي، وعبيدة بن الحارث، وعتبة وشيبة ابنا ربيعة، والوليد بن عتبة [خ:٣٩٦٦].

(٠٠٠) حدثنا أبو بكر بن أبي شيبة. حدثنا وكيع. ح وحدثني محمد بن المثنى. حدثنا عبد الرحمن. جميعاً عن سفيان، عن أبي هاشم، عن أبي مجلز، عن قيس بن عباد قال: سمعت أبا ذر يقسم لنزلت: هذان خصمان. بمثل حديث هشيم.

١٦١٦

◈ **‘सहीह मुस्लिम’** में है :

→ हज़रत क़ैस उबाद ﷺ फ़रमाते हैं: मैंने हज़रत अबुज़र ﷺ को क़सम खा कर फ़रमाते हुए सुना कि यह आयात هذا خصمان اختصموا فی ربهم (यह हैं दो झगड़ा करनेवाले जिन्होंने अपने रब के बारे में झगड़ा किया) हज़रत हम्ज़ा ﷺ, हज़रत अली ﷺ, व हज़रत उबैदा बिन हारिस ﷺ और उत्बा, शैबा व वलीद बिन उत्बा के बारे में नाज़िल हुई, जिन्होने बदर के दिन मुबारजत की थी।

العربُ (١ من الهندِ ١) وغيرِهم ، فإذا حُبِسُوا فعليكم أن تُطْعِمُوهم ، وتُسقُوهم حتى يُقتَلُوا أو يُفدَوا .

وأخرَج ابنُ أبى شيبةَ عن أبى رزينٍ (٢ قال : كنتُ مع شقيقِ بنِ سلمةَ ٢) فمَرَّ عليه أُسارَى من المشركين ، فأمَرنى أن أتصَدَّقَ عليهم . ثم تلا هذه الآيةَ : ﴿وَيُطْعِمُونَ ٱلطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا﴾ (٣) .

(٤ وأخرَج ابنُ أبى شيبةَ عن سعيدِ بنِ جبيرٍ ، وعطاءٍ : ﴿وَيُطْعِمُونَ ٱلطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا﴾ ٤) . قالا (٥) : من أهلِ القبلةِ وغيرِهم (٦) .

وأخرَج ابنُ مَردُويَه ، وأبو نعيمٍ ، عن أبى سعيدٍ ، عن النبيِّ ﷺ فى قولِ اللهِ : ﴿مِسْكِينًا﴾ . قال : « فقيرًا » . ﴿وَيَتِيمًا﴾ . قال : « لا أبَ له » . ﴿وَأَسِيرًا﴾ . قال : « المملوكَ والمسجونَ » (٧) .

وأخرَج ابنُ مَردُويَه عن ابنِ عباسٍ فى قولِه : ﴿وَيُطْعِمُونَ ٱلطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ﴾ الآيةَ . قال : نزَلت هذه الآيةُ فى علىِّ بنِ أبى طالبٍ وفاطمةَ بنتِ رسولِ اللهِ ﷺ .

وأخرَج ابنُ سعد عن أمِّ الأسودِ سُرِّيَّةِ الربيعِ بنِ خُثَيمٍ (٨) قالت : كان الربيعُ

---

(١ - ١) ليس فى : الأصل ، ح ٣.

(٢ - ٢) سقط من : ص ، ف ١ ، وفى مصدر التخريج : « قال كنت مع سفيان بن سلمة » .

(٣) ابن أبى شيبة ٣/ ١٧٧.

(٤ - ٤) ليس فى : الأصل ، ص ، ف ١ ، ح ٣.

(٥) فى الأصل ، ح ٣ ، ن : « قال » .

(٦) ابن أبى شيبة ٣/ ١٧٧ ، ١٧٨.

(٧) أبو نعيم ٥/ ١٠٥. وقال : غريب من حديث عمرو ، تفرد به عباد عن عمه .

(٨) فى ص ، ح ١ ، ن ، م : « خيثم » ، وفى ف ١ : « خثعم » .

الجزء الخامس عشر
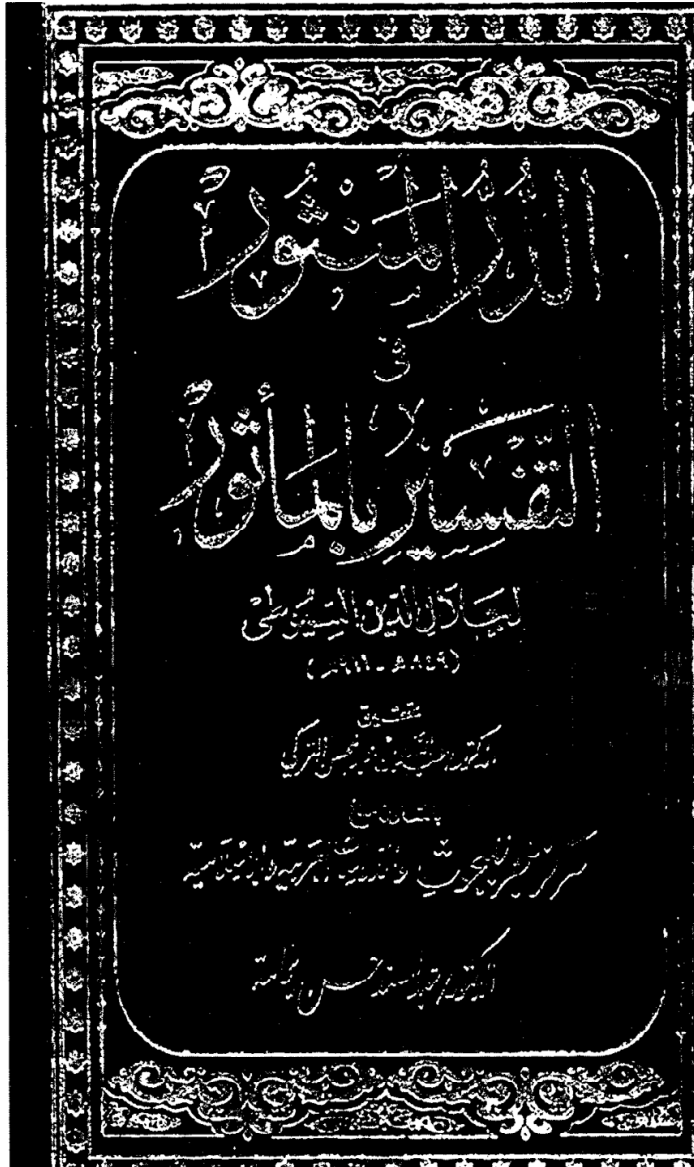
◈ इमाम सुयूती رحمه الله की **'दुर्रे मंसूर'** में है:

→ इब्ने मरदविया رحمه الله ने हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه से रिवायत की है कि अल्लाह تعالى का इरशाद "**ويطعمون الطعام على حبه**" अल-आयत (और वह खाना खिलाते हैं उसकी मुहब्बत के बावजूद मिस्कीनों को यतीम को और क़ैदी को) हज़रत अली رضي الله عنه और हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها के बारे में नाज़िल हुआ।

قال لبيد:

حتى تهجر في الرواح وهاجه    طلب المعقب حقه المظلوم[1]

﴿وهو سريع الحساب * وقد مكر الذين من قبلهم﴾ يعني من قبل مشركي مكة ﴿فلله المكر جميعاً﴾ يعني له أسباب المكر وبيده الخير والشر وإليه النفع والضر فلا يضر مكر أحد أحداً إلاّ من أراد الله ضره، وقيل: معناه له جزاء إليكم.

﴿يعلم ما تكسب كل نفس وسيعلم الكفار﴾ سيعلم: قرأ ابن كثير وأبو عمر: الكافر على الواحد، والباقون على الجمع.

﴿لمن عقبى الدار﴾ عاقبة الدار الآخرة ممن يدخلون النار ويدخل المؤمنون الجنة ﴿ويقول الذين كفروا لست مرسلا قل كفى بالله شهيداً بيني وبينكم﴾ إني رسوله إليكم، ﴿ومن عنده علم الكتاب﴾ أيضاً يشهدون على ذلك. هم مؤمنو أهل الكتاب.

وقرأ الحسين وسعيد بن جبير: ﴿ومن عنده﴾ بكسر الميم والدال. علم الكتاب مبني على[2] الفعل المجهول.

وروى أبو عوانة عن أبي الخير قال: قلت لسعيد بن جبير ﴿ومن عنده علم الكتاب﴾ أهو عبد الله بن سلام؟ قال: كيف يكون عبد الله بن سلام وهذه السورة مكية

وكان سعيد يقرأها ﴿ومن عنده علم الكتاب﴾، ودليل هذه القراءة قوله ﴿وعلمناه من لدنا علماً﴾[3] وقوله ﴿الرحمن علم القرآن﴾[4].

وأخبرنا عبد الله بن يوسف بن أحمد بن بابويه أخبرنا أبو رجاء محمد بن حامد بن محمد المقرئ بمكة حدثنا محمد بن حدثنا عبد الله بن عمر حدثنا سليمان بن أرقم عن الزهري عن سالم بن عبد الله بن عمر عن أبيه أن النبي ﷺ قرأها ومن عنده علم الكتاب.

وبه عن السمري حدثنا أبو توبه عن الكسائي عن سليمان عن الزهري عن نافع عن ابن عمر قال: قال: وذكر الله أشدّ فذكر إنه حيث جاء إلى الدار ليسلم سمع النبي ﷺ يقرأ ﴿ومن عنده علم الكتاب﴾ بكسر الميم وسمعه في الركعة الثانية يقرأ ﴿بل هو آيات بينات في صدور الذين﴾ الآية.

أخبرني أبو محمد عبد الله بن محمد القاسي حدثنا القاضي الحسين بن محمد بن عثمان

(١) تفسير الطبري: ١٣ / ١٦١، ولسان العرب: ١ / ٦١٤.
(٢) هكذا في الأصل.
(٣) سورة الكهف: ٦٥.
(٤) سورة الرحمن: ١ . ٢.



النصيبي أخبرنا أبو بكر محمد بن الحسين السبيعي بحلب حدثني الحسين بن إبراهيم بن الحسين الجصاص. أخبرنا الحسين بن الحكم حدثنا سعيد بن عثمان عن أبي مريم حدثني بن عبد الله ابن عطاء قال: كنت جالساً مع أبي جعفر في المسجد فرأيت ابن عبد الله بن سلام جالساً في ناحية فقلت لأبي جعفر: زعموا أنّ الذي عنده علم الكتاب عبد الله بن سلام. فقال: إنما ذلك علي بن أبي طالب (ﷺ).

وفيه عن السبيعي: حدثنا عبد الله بن محمد بن منصور بن الجنيد الرازي عن محمد بن الحسين بن الكتاب.

أحمد بن مفضل حدثنا مندل بن علي عن إسماعيل بن سلمان عن أبي عمر زاذان عن ابن الحنفية ﴿ومن عنده علم الكتاب﴾ قال: هو علي بن أبي طالب (ﷺ)[1]
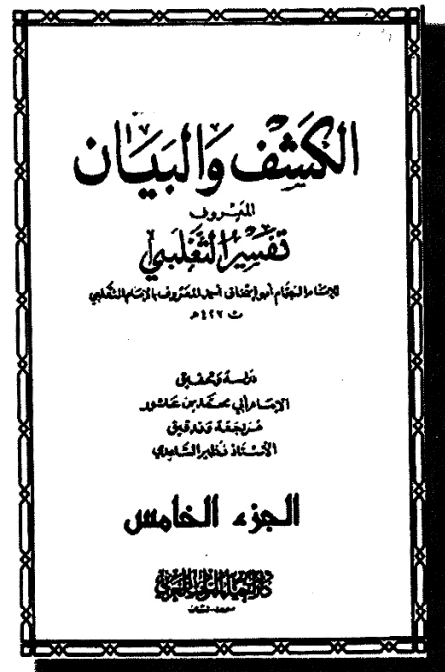
(١) زاد المسير لابن الجوزي: ٤/ ٢٥٢، وتفسير القرطبي: ٩/ ٣٣٦، شواهد التنزيل: ١/ ٤٠١.

◈ **तफ्सीर सआलबी में है:**

→ अबू अल ख़ैर ﷺ कहते हैं: मैंने सईद बिन जुबेर से पूछा: ''ومن عنده علم الكتاب'' से कौन मुराद हैं? क्या अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ मुराद हैं? फ़रमाया : 'अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ कैसे मुराद हो सकते हैं जब कि यह सूरत मक्की है।'

→ अब्दुल्लाह बिन अता ﷺ कहते हैं: मैं अबू जाफ़र ﷺ के साथ मस्जिद में बैठा हुआ था, मैं ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ को एक कौने में बैठा देखा तो मैंने अबू जाफ़र ﷺ से कहा: लोग कहते हैं कि इस से मुराद " जिसके पास किताब का इल्म " अब्दुल्लाह बिन सलाम ﷺ हैं, तो उन्होंने फ़रमाया: 'इस से मुराद हज़रत अली ﷺ हैं'।

# كنز العمال

## في سنن الأقوال والأفعال

للعلامة علاء الدين علي المتقي بن حسام الدين الهندي
البرهان فوري المتوفى سنة ٩٧٥

الجزء الثاني

ضبطه وفسر غريبه
الشيخ بكري حياني

صححه ووضع فهارسه ومفتاحه
الشيخ صفوة السقا

مؤسسة الرسالة

حين أفشَتْ حفصةُ إلى عائشةَ الذي أسرَّ إليها رسولُ الله ﷺ ، وكان قد قال ما أنا بداخل عليكُن شهراً مَوْجِدَةً عليهن ، فلما مضتْ تسعٌ وعشرون دخل على أم سلمةَ ، وقال : الشهرُ تسع وعشرون ، وكان ذلك الشهرُ تسعاً وعشرين . (ابن سعد) .

٤٦٧٤ ـ عن أنس قال قال عمر : بلغني بعضُ ما آذَيْنَ رسولَ الله ﷺ نساؤُه ، فدخلتُ عليهن فجعلتُ أستقريهنّ ، وأعظهنّ ، فقلتُ : فيما أقولُ لتنتهِينَ أو ليبدلنه اللهُ أزواجاً خيراً منكن ، حتى أتيتُ على زينبَ فقالت : يا عمرُ أما كان في رسولِ الله ﷺ ما يَعِظُ نساءه حتى تعظَنا أنت ؟ فأنزل اللهُ تعالى : ﴿عسى ربه إن طلقكن﴾ إلى آخر الآية . (ابن منيع وابن أبي عاصم في السنة كر) وصحح .

٤٦٧٥ ـ عن علي قال قال رسول الله ﷺ في قوله تعالى : ﴿وصالح المؤمنين﴾ قال هو علي بن أبي طالب . (ابن أبي حاتم) .

٤٦٧٦ ـ عن علي في قوله تعالى : ﴿قوا أنفسكم وأهليكم ناراً﴾ قال : علموا أنفسكم وأهليكم الخيرَ وأدّبوهم . (عب والفريابي ص وعبد بن حميد وابن جرير وابن المنذر ك ق في المدخل) .

٤٦٧٧ ـ عن علي قال : ما استقصى كريمٌ قطّ ، إن الله تعالى يقول: ﴿عرّف بعضه وأعرض عن بعض﴾ . (ابن مردويه) .

◈ **‘कन्जुल उम्माल’** में है:

→ हज़रत अली ﷜ फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ का इरशाद है: “وصالح المؤمنين” से मुराद हज़रत अली ﷜ हैं। पूरी आयत यह है “وإن تظاهرا عليه فإن الله هو مولاه وجبرئيل وصالح المؤمنين،والملائكة بعد ذلك ظهير” (और अगर तुम नबी के ख़िलाफ़ एक दूसरे की मदद करोगी, पस यक़ीनन उसका कारसाज़ अल्लाह ﷻ है, और जिब्राईल ﵇ हैं, और नेक अह्ले ईमान, और उनके अलावा फ़रिश्ते भी मदद करनेवाले हैं।)

تاريخ مدينة دمشق

تصنيف

الجزء الثاني والأربعون

أنا عاصم بن الحسَن، أنا أبو عمر بن مهدي، أ
سف بن زياد، نا حسين بن حمّاد، عَن أبيه، عَ
الذين آمنوا اتقوا الله وكونوا مع الصّادقين﴾(١) قال

بن أحْمَد الفقيه، أنا أبو الحسَن عَلي بن أحْمَد بـ
يعني أحْمَد بن الحارث ـ أنا عَبْد اللّه بن مُحَمّد بـ
ري، نا بشر بن آدم، نا عَبْد اللّه بن الزبير، قال
بُرَيْدة.

، أنا أبو بكر الخطيب، أنا الحسَن بن أبي بكر، أ
زياد القطان، نا مُحَمّد بن غالب تَمْتَام، نا بشر بـ
صالح بن ميثم قال: سمعت بُرَيْدة الأسلمي يقول:
أمرني أن أدنيك ولا أقصيك، وأن أعلّمك وتعي
أن تعي فنزلت ـ وقال الواسطي: قال: ونزلت

أخْبَرَنا أبو الحسَن عَلي بن المُسَلّم الفقيه، نا أبو مُحَمّد عَبْد العزيز بن أحْمَد الحافظ أنا أبو نصر عَبْد الوهاب بن عَبْد اللّه بن عمر المُرّي، نا عَبْد الرّحمن بن عمر الشّيباني(٥) نا أبو قُتَيبة المسلم بن الفضل، نا مُحَمّد بن يونس الكُدَيمي، نا أحْمَد بن معمر الأسدي، الحكم بن ظهير، عَن السُّدّي، عَن ابن عباس في قوله عزّ وجلّ ﴿وصَالح المؤمنين﴾(٦) قال: هو: عَلي بن أبي طالب.

أخْبَرَنا أبو المعالي عَبْد اللّه بن مُحَمّد بن سهل بن المحب العمري الصوفي، أنا أ بكر أحْمَد بن عَلي بن عَبْد اللّه بن عمر بن خلف(٧)، أنا الحاكم الإمام أبو عَبْد الـ

(١) سورة التوبة، الآية: ١١٩.
(٢) رواه الواحدي في أسباب النزول ص ٢٤٥ طبعة دار الفكر - بيروت.
(٣) كذا بالأصل وم والمطبوعة، وفي أسباب النزول: صالح بن هشيم.
(٤) سورة الحاقة، الآية: ١٢.
(٥) في « ز »: «عمر المسلي» وفي م: «ابن عمر السيلي» وفي المطبوعة: ابن عمران الشيباني.
(٦) سورة التحريم، الآية: ٤.
(٧) ترجمته في سير أعلام النبلاء ١٨/٤٧٨.



الحافظ، أنا أبو جعفر مُحَمّد بن عُبَيْد اللّه بن عَلي العلوي النقيب ـ بالكوفة ـ نا أبو الحسَن عَلي بن إبْرَاهيم الحرار، نا مُحَمّد بن أبي السوداء النهدي، عَن وكيع، عَن الأعمش، عَن زيد بن وَهْب، عَن حُذَيفة قال [دخلت على](١) النبي ﷺ فقال: «كيف أنتم إذا اختصم السلطان والقرآن؟» فقلنا: وأنى يكون ذلك؟ [قال:](٢) «إذا قالوا القرآن مخلوق بريء الله منهم ـ وأنا منهم بريء ـ وصالح المؤمنين» قال النبي ﷺ: «صالح المؤمنين عَلي بن أبي طالب».

أخْبَرَنا أبو الحسَن بن قُبَيس، نا ـ وأبو منصور بن خيرون: [أنا ـ أبو بكر](٣) الخطيب(٤).

ح وأخْبَرَنا أبو القَاسِم بن السّمَرْقَنْدي، أنا عاصم بن الحسَن.

قالا: أنا أبو عمر [بن مهدي](٥)، أنا أبو العبّاس بن عقدة، نا يعقوب بن يوسف بن زياد، نا نصر بن مُزَاحم، نا مُحَمّد بن مروان [عن الكلبي](٦)، عَن أبي صالح، عَن ابن عبّاس ﴿قُلْ بفضلِ الله﴾(٧) النبي ﷺ، ﴿وبرحمته﴾(٧) علي رضي الله عنه.

أخْبَرَنا أبو نصر منصور بن أحْمَد بن منصور الطُّرَيْثيثي، وأبو القاسم الشّحامي، أنا أبو الحسَن عَلي بن مُحَمّد بن جَعْفَر اللحياني، نا أبو معاذ شاه بن عَبْد الرّحمن بن مُحَمّد بن مأمون، نا أبي(٨)، نا أبو الحسَن عَلي بن عَبْد اللّه بن دينار بن مُبَشّر الواسطي، نا مُحَمّد بن حرب، نا إسْمَاعيل بن عُبَيْد اللّه، نا يَحْيَى، عَن ابن جُرَيج، عَن عطاء، عَن ابن عباس قال: ما أنزل الله من آية [فيها] ﴿يا أيها الذين آمنوا﴾ دعامم [فيها](٩) إلا وعَلي بن أبي طالب كبيرها وأميرها.

أخْبَرَنا أبو غالب بن البنّا، أنا مُحَمّد بن أحمد(١٠) بن الآبنوسي، أنا أبو الحسَن الدارقطني، نا مُحَمّد بن القاسم بن زكريا المحاربي، نا عبّاد بن يعقوب، نا موسى بن

(١) ما بين معكوفتين سقط من الأصل وم واستدرك للإيضاح من المختصر، قارن مع المطبوعة.
(٢) بياض بالأصل وم، واللفظة استدركت عن المختصر والمطبوعة.
(٣) بياض بالأصل وم، والمستدرك قياساً إلى أسانيد مماثلة.
(٤) رواه الخطيب البغدادي في تاريخ بغداد ٥/١٥ ضمن ترجمة أحمد بن محمد بن سعيد الحافظ.
(٥) بياض بالأصل وم والمستدرك عن تاريخ بغداد وقياساً إلى أسانيد مماثلة.
(٦) بياض بالأصل، والمستدرك عن تاريخ بغداد وم، و«عن» ليست في م.
(٧) سورة يونس، الآية: ٥٨.
(٨) «نا أبي» بياض مكانها في م.
(٩) بياض بالأصل وم و« ز »، والمستدرك عن المطبوعة لإقامة المعنى، واللفظة مستدركة فيها بين معكوفتين.
(١٠) تقرأ بالأصل: احمد وفي المطبوعة: «حمدان» والمثبت عن م.

◈ इब्न असाकिर ﷫ की **'तारीख़ दिमश्क़'** में है:

→ हज़रत इब्न अब्बास ﷠ फ़रमाते हैं "وصالح المؤمنين" से मुराद हज़रत अली ﷠ हैं।

→ हज़रत हुज़ैफ़ा ﷠ फ़रमाते हैं: मैं हुज़ूर ﷺ के पास आया... आप ने फ़रमाया: "وصالح المؤمنين" से मुराद हज़रत अली ﷠ हैं।

→ पूरी आयत यह है :

"وإن تظاهرا عليه فإن الله هو مولاه وجبرئيل وصالح المؤمنين،والملائكة بعد ذلك ظهير" (और अगर तुम नबी के ख़िलाफ़ एक दूसरे की मदद करोगी, पस यक़ीनन उस का कारसाज़ अल्लाह ﷻ है, और जिब्राईल ؑ हैं, और नेक अहले ईमान, और उनके अलावा फ़रिश्ते भी मदद करने वाले हैं।)

# تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر

للطباعة والنشر والتوزيع



أخبرنا أبو علي بن السبط، أنا أبو محمد الجوهري،

ح وأخبرنا أبو القاسم بن الحصين، أنا أبو علي بن المذهب، قالا: أنا أبو بكر القطيعي، نا عبد الله بن أحمد ، حدثني عثمان بن أبي شيبة، نا مطلب بن زياد، [عن السدي][1] عن عبد خير، عن علي في قوله: ﴿إنما أنت منذر ولكل قوم هاد﴾[2] قال رسول الله ﷺ: «المنذر والهادي رجل من بني هاشم»[٨٩٥١].

أخبرنا[3] أبو العز بن كادش، أنا أبو الطيب طاهر بن عبد الله، أنا علي بن عمر بن محمد الحربي، نا أحمد بن الحسن بن عبد الجبار، نا عثمان بن أبي شيبة، نا المطلب بن زياد، عن السدي، عن عبد خير، عن علي في قول الله عز وجل: ﴿إنما أنت منذر ولكل قوم هاد﴾ قال رسول الله ﷺ: [«المنذر][4] والهادي علي».

أخبرنا أبو طالب علي بن عبد الرحمن، أنا أبو الحسن الخلعي، أنا أبو محمد بن النحاس، أنا أبو سعيد بن الأعرابي، نا أبو سعيد عبد الرحمن بن محمد بن منصور الحارثي، نا حسين بن علي الأشقر، نا منصور بن أبي الأسود، عن الأعمش، عن المنهال، عن عباد بن عبد الله، عن علي قال: ﴿إنما أنت منذر ولكل قوم هاد﴾ قال علي: رسول الله ﷺ المنذر، وأنا الهاد.

وأخبرناه أبو طالب، أنا أبو الحسن[5]، أنا أبو محمد، أنا أبو سعيد بن الأعرابي، أنا أبو العباس الفضل بن يوسف بن يعقوب بن حمزة الجعفي، نا الحسن بن الحسين الأنصاري في هذا المسجد ـ وهو مسجد حبة العرني ـ نا معاذ بن مسلم، عن عطاء بن السائب، عن سعيد بن جبير، عن ابن عباس قال: لما نزلت: ﴿إنما أنت منذر ولكل قوم هاد﴾ قال النبي ﷺ: «أنا المنذر، وعلي الهادي، بك يا علي يهتدي المهتدون».

أخبرنا أبو عبد الله بن أبي العلاء، أنا أبي أبو القاسم، أنا أبو محمد بن أبي نصر، أنا خيثمة بن سليمان، نا إبراهيم بن سليمان بن حزازة، نا الحسن بن الحسين الأنصاري، نا علي بن القاسم، عن ابن مجاهد، عن أبيه في قوله عز وجل: ﴿والذي جاء بالصدق وصدق به﴾ قال [الذي جاء بالصدق] رسول الله ﷺ، «وصدق به» علي بن أبي طالب.

وفي قوله تعالى: ﴿إنما أنت منذر ولكل قوم هاد﴾ قال: [الهادي:] «علي بن أبي طالب».

(١) ما بين معكوفتين سقط من الأصول، واستدركنا لتقويم السند من المسند.

(٢) سورة الرعد، الآية: ٨. (٣) الخبر التالي سقط من م.

(٤) ما بين معكوفتين سقط من الأصل، واستدرك من المطبوعة.

(٥) في م هنا: أبو الحسين، تصحيف، وقد مرّ السند قريباً.

◈ इब्न असाकिर ﷺ की **‘तारीख़ दिमश्क़’** में है:

→ हज़रत अली ؓ से मरवी है कि ‘‘إنما أنت منذر ولكل قوم هاد’’ ( बेशक आप आगाह करनेवाले हैं, और हर क़ौम के लिए एक रहनुमा है) में ‘हादी’ से मुराद अली ؓ हैं।

→ दूसरी रिवायत में है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: **‘मंज़र’ से मैं मुराद हूँ और ‘हादी’ से अली, ऐ अली ؓ ! रहनुमाई पानेवाले तेरे ज़रिए रहनुमाई पायेंगे।**

ـ كما روى عن الربيع ـ وهم الذين أسلموا منهم وتابعوا النبي صلى الله تعالى عليه وسلم ـ كما قال مجاهد . والسدى، وابن زيد ـ واختاره الجبائي ، وأولئك ـ كعبد الله بن سلام وأضرابه من اليهود ـ وثمانية وأربعون من النصارى ، وقيل : المراد بهم النجاشي . وأصحابه رضي الله تعالى عنهم والجملة مستأنفة مبنية على سؤال نشأ من مضمون الشرطيتين المصدرتين بحرف الامتناع الدالتين على انتفاء الإيمان والاتقاء والاقامة المذكورات كأنه قيل : هل كلهم مصروف على عدم الإيمان وأخويه ؟ فقيل : (منهم) الخ وتفسير الاقتصاد بالتوسط في العداوة بعيد ، ( وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ ) وهم الأجلاف المتعصبون ـ ككعب بن الأشرف . وأشباهه . والروم ـ .

( سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ٦٦ ) من العناد والمكابرة وتحريف الحق والاعراض عنه .

وقيل : من الإفراط في العداوة ( وكثير ) مبتدأ ، و ( منهم ) صفته ، و ( ساء ) كبئس القوم .

وعن بعض النحاة أنفيها معنى التعجب ـ كقضو زيد ـ أى ما أقضاه ، فالمعنى هنا ما أسوأ عملهم ، وبعضهم يقول : هي لمجرد الذم والتعجب مأخوذ من المقام ، وتمييزها محذوف ، و(ما) موصولة فاعل لها أى ساء عملا الذي يعملونه ، ويجوز أن تكون (ما) نكرة في موضع التمييز ، والجملة الانشائية خبر المبتدأ . والكلام في ذلك شهير .

هذا ( ومن باب الاشارة في الآيات ) ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون الصلاة﴾ أى صلاة الشهود والحضور الذاتي (ويؤتون الزكاة) أى زكاة وجودهم (وهم راكعون) أى خاضعون في البقاء بالله . والآية عند معظم المحدثين نزلت في علي كرم الله تعالى وجهه ، والامامية ـ كما علمت ـ يستدلون بها على خلافته بعد رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم بلا فصل ، وقد علمت ما رد تم ـ والحمد لله سبحانه ـ ذكلام ، وكثير من الصوفية قدس الله تعالى أسرارهم يشير إلى القول بخلافته كرم الله تعالى وجهه بعد الرسول عليه الصلاة والسلام بلا فصل أيضا إلا أن تلك الخلافة عندهم هي الخلافة الباطنة التي هي خلافة الارشاد والتربية والامداد والتصرف الروحاني لا الخلافة الصورية التي هي عبارة عن إقامة الحدود الظاهرة ، وتجهيز الجيوش وحماية بيضة الإسلام . ومحاربة أعدائه بالسيف والسنان ، فإن تلك عندهم على الترتيب الذي وقع كما هو مذهب أهل السنة ، والفرق عندهم بين الخلافتين كالفرق بين القشر واللب ، فالخلافة الباطنة لب الخلافة الظاهرة ، وبها يذب عن حقيقة الإسلام ، وبالظاهرة يذب عن صورته ، وهي مرتبة القطب في كل عصر ، وقد تجتمع مع الخلافة الظاهرة كما اجتمعت في علي كرم الله تعالى وجهه أيام امارته ، وكما تجتمع في المهدي أيام ظهوره ، وهي والنبوة رضيعا ثدي ، وإلى ذلك الاشارة بما يروونه عنه عليه الصلاة والسلام من قوله : « خلقت أنا وعلي من نور واحد » وكانت هذه الخلافة فيه كرم الله تعالى وجهه على الوجه الأتم .

ومن هنا كانت سلاسل أهل الله عز وجل منتهية اليه إلا ما هو أعز من بيض الانوق ، فانه ينتهي إلى الصديق رضي الله تعالى عنه كسلسلة ساداتنا النقشبندية قدس الله تعالى بعلومهم ، ومع هذا ترد عليه كرم الله تعالى وجهه أيضاً ، وبتقسيم الخلافة إلى هذين القسمين جمع بعض العارفين بين الأحاديث المشعرة . أو المصرحة بخلافة الأئمة الثلاثة رضي الله تعالى عنهم بعد رسول الله ﷺ على الترتيب المعلوم ، وبين الأحاديث المشعرة . أو المصرحة بخلافة الأمير كرم الله تعالى وجهه بعده عليه الصلاة والسلام بلا فصل ، فحمل الأحاديث الواردة في خلافة الخلفاء
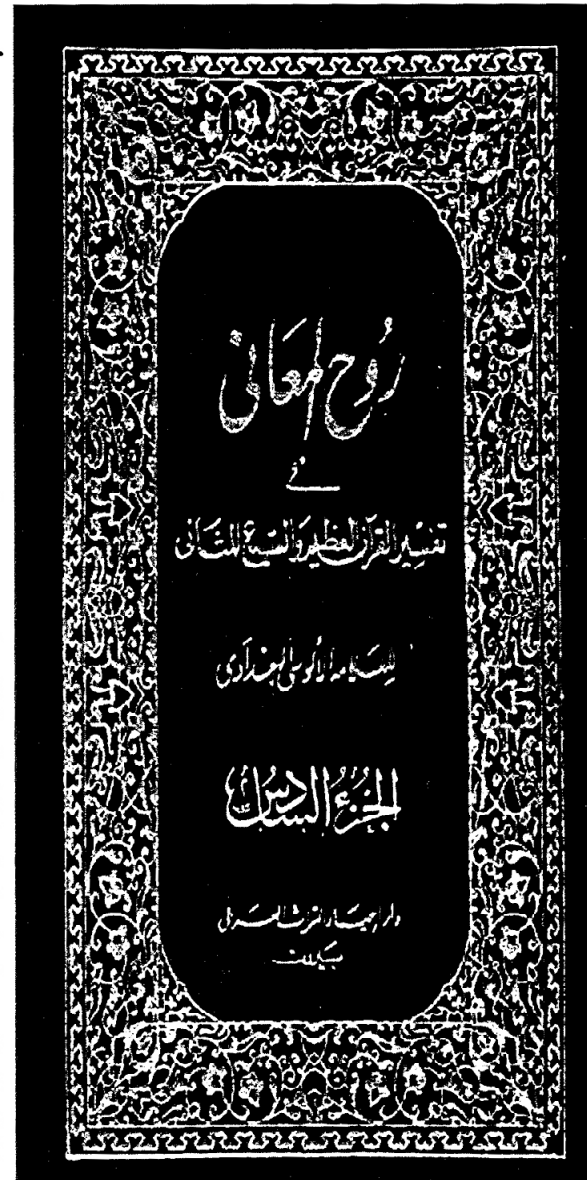
→ यह बात मन्दरजा ज़ेल आयात से ताल्लुक़ रखती है। अल्लाह ﷻ ने फ़रमाया: "हक़ीक़त में तुम्हारे दोस्त अल्लाह ﷻ, उसके रसूल ﷺ और अह्ले ईमान हैं,जो नमाज़ (शहूद व हुज़ूर की ज़ाति नमाज़) क़ायम करते हैं और (अपने वजूद की) ज़कात अदा करते हैं, और जो रुकूअ करते हैं या'नी बक़ा बिल्लाह में मुस्तग़र्रिक़ रहते हैं"।

→ मुहद्दिसीन की अक्सर और एक बड़ी तादाद के नज़दीक यह आयत सय्यदना अली عليه السلام के सिलसिले में नाज़िल हुई है। इमामिया जैसा के तुम्हे मालूम है, इसी आयत से रसूलल्लाह ﷺ के बाद सय्यदना अली عليه السلام को ख़लीफ़ा बिला फसल तस्लीम करते हैं । अल्लाह ﷻ का शुक्र व एहसान है कि तुम्हे यह भी मालूम है कि हमारे तरफ से इनकी तरदीद की जा चुकी है।

→ बहुत से सूफ़िया-ए-किराम क़ुदसअल्लाह इसरारहम का कलाम भी रसूलल्लाह ﷺ के बाद सय्यदना अली عليه السلام के ख़लीफ़ा बिला फसल होने की तरफ इशारा करता है। मगर यह खिलाफ़त उनकी नज़र में खिलाफ़ते बातिनी है जो इरशाद, तरबियत, इमदाद और रुहानी तसर्रुफ़ की ख़िलाफ़त है, वह ज़ाहिरी ख़िलाफ़त नहीं जो ज़ाहिरी हुदूद की तन्फीज़, इस्लामी फ़ौज को तय्यार करने और उसे मुहाज़ जंग की तरफ जाने का हुक्म देने, इस्लाम के शफ़ाफ़ चेहरे का दिफ़ाअ करने और इस्लाम के दुश्मनो से सेफ़ व सना से जंग करने से इबारत है। यह ज़ाहिरी ख़िलाफ़त इसी तरतीब से ज़ाहिर हुई है जो हक़ीक़त में है जैसा कि अह्ले सुन्नत का मसलक है। सूफ़ियाए किराम की नज़र में इन दोनों खिलाफ़तों में वही फ़र्क़ है जो छिलके और गूदे में फ़र्क़ होता है। ख़िलाफ़त बातिनी, ख़िलाफ़त ज़ाहिरी की रूह और उसका असल गूदा है। ख़िलाफ़त बातिनि से हक़ीक़त इस्लाम का दिफ़ा किया जाता है और ख़िलाफ़त ज़ाहिरी से इस्लाम के ज़ाहिर का दिफ़ा किया जाता है। हर ज़माने में क़ुतुब का मक़ाम यही होता है। बसा औक़ात यह बातिनी ख़िलाफ़त, ज़ाहिरी ख़िलाफ़त के साथ जमा हो जाती है जैसा के सय्यदना अली عليه السلام के दौरे ख़िलाफ़त में हुई थी और जैसा के उस वक्त होगी जब इमाम मेहदी का ज़हूर होगा यह ख़िलाफ़त बातिनी और नबुव्वत दो रज़ाई भाईयों की तरह है। इसी बात की तरफ इस हदीस में इशारा किया गया है जिसे राविआने हदीस नबी अकरम ﷺ से रिवायत किया है कि "मैं और अली رضي الله عنه एक ही नूर से पैदा किये गए हैं"। सय्यदना अली عليه السلام में यह ख़िलाफ़त बदर्जे उत्तम पाई जाती थी।

→ यही वजह है कि अहलुल्लाह के तमाम सिलसिले सय्यदना अली عليه السلام तक पहुँचते हैं, हाँ एक सिलसिला है जो उक़ाब के अंडे की तरह नादिर है, वह हजरत सिद्दीक़ رضي الله عنه तक पहुँचता है जैसे हमारे सादात नक्शबंदिया का सिलसिला। अल्लाह ﷻ हमें उनके उलूम से पहुँचाए। इस के बावजूद यह सिलसिला भी सय्यदना अली عليه السلام तक किसी तरह पहुँच ही जाता है।

→ ख़िलाफ़त को दो किस्मो में तक़सीम कर के बाज़ आरिफीन बिल्लाह ने इन मुतारीज़ अहादीस के दरमियान ततबीक़ दी है जो एक तरफ अगर यह इशारा देती या सराहत करती हैं कि रसूलल्लाह ﷺ के बाद आइम्मा सलासा इसी मालूम तरतीब के साथ खलीफ़ा हैं और बाज़ दूसरी अहादीस यह इशारा देती या सराहत करती हैं कि नबी अकरम ﷺ के बाद सय्यदना अली عليه السلام ख़लीफ़ बिला फ़सल हैं। उन्होंने खुल्फ़ए सलासा की ख़िलाफ़त को ख़िलाफ़त ज़ाहिरी पर और अमीर उल-मो'मिनीन عليه السلام की ख़िलाफ़त को ख़िलाफ़त बातिनी पर महमूल किया है। दोनों क़िस्म की अहादीस में से किसी को रद्द नहीं किया है और खुलफ़ाए अरबा की ख़िलाफ़त की हक़ीक़त को वाज़ेह कर दिया है"।

# تفسير الطبري

## جامع البيان عن تأويل آى القرآن

لأبى جعفر محمد بن جرير الطبري
( ٢٢٤هـ - ٣١٠هـ )

تحقيق
الدكتور عبد الله بن عبد المحسن التركي
بالتعاون مع
مركز البحوث والدراسات العربية والإسلامية
بدار هجر

الدكتور عبد السند حسن يمامة

الجزء الثامن عشر

هجر
للطباعة والنشر والتوزيع والإعلان



الفُسّاقِ ، وجميعُ المؤمنين باللَّهِ . فإذا كان الاثنانِ غيرَ مصمودٍ لهما ، ذهَبتْ بهما العربُ مذهبَ الجمعِ .

وذُكِر أن هذه الآيةَ نزَلتْ في عليِّ بنِ أبى طالبٍ رضوانُ اللَّهِ عليه ، والوليدِ بنِ عُقبةَ .

### ذكرُ مَن قال ذلك

حدَّثنا ابنُ حميدٍ ، قال : ثنا سلمةُ بنُ الفضلِ ، قال : ثنى ابنُ إسحاقَ ، عن بعضِ أصحابِه ، عن عطاءِ بنِ يَسارٍ ، قال : نزَلتْ بالمدينةِ في عليِّ بنِ أبى طالبٍ ، والوليدِ بنِ عُقبةَ بنِ أبى مُعَيطٍ ، كان بينَ الوليدِ وبينَ عليٍّ كلامٌ ، فقال الوليدُ بنُ عُقبةَ : أنا أبسطُ منك لسانًا ، وأحدُّ منك سِنانًا ، وأردُّ منك للكتيبةِ . فقال عليٌّ : اسكتْ ، فإنك[1] فاسقٌ . فأنزَل اللَّهُ فيهما : ﴿ أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ﴾ إلى قولِه : ﴿ بِهِۦ تُكَذِّبُونَ ﴾[2] .

حدَّثنا بشرٌ ، قال : ثنا يزيدُ ، قال : ثنا سعيدٌ ، عن قتادةَ قولَه : ﴿ أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ﴾ . قال : لا واللَّهِ ما استوَوْا[3] في الدنيا ، ولا عندَ الموتِ ، ولا في الآخرةِ[4] .

وقولُه : ﴿ أَمَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّـٰلِحَـٰتِ فَلَهُمْ جَنَّـٰتُ الْمَأْوَىٰ ﴾ . يقولُ تعالى ذكرُه : أما الذين صدَّقوا اللَّهَ ورسولَه ، وعمِلوا بما أمَرهم اللَّهُ ورسولُه ، ﴿ فَلَهُمْ جَنَّـٰتُ الْمَأْوَىٰ ﴾ . يعنى : بساتينُ [5]المساكنِ التى[5] يسكُنونها في الآخرةِ ، ويأْوُون

(١) في ت٢ : « أنت » ، والمثبت من مصادر التخريج .
(٢) عزاه السيوطى في الدر المنثور ١٧٨/٥ إلى المصنف وابن إسحاق ، وذكره القرطبى في تفسيره ١٠٥/١٤ ، وابن كثير في تفسيره ٣٧٠/٦ مقتصرًا على أوله .
(٣) في ت٢ : « استوى » .
(٤) عزاه السيوطى في الدر المنثور ١٧٨/٥ إلى المصنف وعبد بن حميد وابن المنذر وابن أبى حاتم .
(٥ - ٥) سقط من : ت١ .

◈ **'तफ्सीर तिबरी'** में है: अता बिन यसार ﷺ कहते हैं :

→ मदीना में अली बिन अबू तालिब ﷺ, वलीद बिन उक़्बा के बारे में यह आयत नाज़िल हुई, वलीद और हज़रत अली ﷺ के दरमियान कुछ बात हो गई थी, तो वलीद ने कहा: 'मैं तुम से ज़्यादा तेज़ ज़बान और तेज़ दांतो वाला हूँ,' हज़रत अली ﷺ ने फ़रमाया: 'ख़ामोश रह,तू फ़ासिक़ है,' तो अल्लाह ﷻ ने दोनों के बारे में यह आयत नाज़िल फ़रमाई "أفمن كان مؤمناً كمن كان فاسقاً،لا يستون..إلى قوله...به تكذبون"। (क्या वह जो मोमिन हो मिस्ल उसके है जो फ़ासिक़ हो? यह बराबर नहीं हो सकते, जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और नेक आमाल भी किये उन के लिए हमेशगीवाली जन्नतें हैं, मेहमानदारी है उनके आमाल के बदले जो वह करते थे, लेकिन जिन लोगों ने हुक्म उदूली की, उनका ठिकाना दोज़ख़ है, जब कभी वह उससे बहार निकलना चाहेंगे उसी में लोटा दिये जाएँगे, और कह दिया जायेगा कि अपने झुटलाने के बदले आग का अज़ाब चखो)।

# الدر المنثور في التفسير بالمأثور

لجلال الدين السيوطي

(٨٤٩هـ - ٩١١هـ)

الجزء الثامن



وأخرج ابنُ جريرٍ ، وابنُ مَرْدُويَه ، وأبو نعيمٍ في « المعرفةِ » ، والدَّيلميُّ ، وابنُ عساكرَ ، وابنُ النجارِ ، عن ابنِ عباسٍ قال : لما نزَلت : ﴿إِنَّمَآ أَنتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ﴾ . وضَع رسولُ اللهِ ﷺ يدَه على صدرِه ، فقال : « أنا المنذِرُ » . وأومأ بيدِه إلى مَنكِبِ عليٍّ ، فقال : « أنت الهادى يا عليُّ ، بك يَهتدى المهتدون مِن بعدِى » .

وأخرج ابنُ مَرْدُويَه عن يَعْلَى بنِ مُرَّةَ قال : قرَأ رسولُ اللهِ ﷺ : ﴿إِنَّمَآ أَنتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ﴾ . فقال : « أنا المنذرُ ، وعليٌّ الهادِ » .

وأخرج ابنُ مَرْدُويَه عن أبى بَرْزَةَ الأَسْلَميِّ : سَمِعتُ رسولَ اللهِ ﷺ يقولُ : « ﴿إِنَّمَآ أَنتَ مُنذِرٌ﴾ » . ووضَع يدَه على صدرِ نفسِه ، ثم وضَعها على صدرِ عليٍّ ويقولُ : « لكلِّ قوم هادٍ » .

وأخرج ابنُ مَرْدُويَه ، والضياءُ في « المختارةِ » ، عن ابنِ عباسٍ في الآيةِ : قال رسولُ اللهِ ﷺ : « المنذِرُ أنا ، والهادى عليُّ بنُ أبى طالبٍ » .

وأخرج عبدُ اللهِ بنُ أحمدَ في زوائدِ « المسندِ » ، وابنُ أبى حاتمٍ ، والطبرانيُّ في « الأوسطِ » ، والحاكمُ وصحَّحه ، وابنُ مَرْدُويَه ، وابنُ عساكرَ ، عن عليِّ بنِ أبى طالبٍ في قولِه : ﴿إِنَّمَآ أَنتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ﴾ . قال : رسولُ اللهِ ﷺ المنذِرُ ، وأنا الهادى . وفى لفظٍ : الهادى رجلٌ مِن بنى هاشمٍ . يعنى نفسَه .

◈ **'दुर्रे मंसूर'** में है ''إنما أنت منذر ولكل قوم هاد'' (बेशक आप आगाह करनेवाले हैं, और हर क़ौम के लिए रहनुमा है) के बारे में: रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: 'मैं मंज़र हूँ, और हज़रत अली رضي الله عنه की तरफ इशारा करते हुए फ़रमाया: ऐ अली رضي الله عنه! तुम हादी हो, मेरे बाद तुम्हारे ज़रिये लोग रहनुमाई हासिल करेंगे।'

# الكشف والبيان

المعروف

## تفسير الثعلبي

للإمام الهمام أبو إسحاق أحمد المعروف بالإمام الثعلبي

ت ٤٢٧ هـ

دراسة وتحقيق

الإمام أبي محمد بن عاشور

مراجعة وتدقيق

الأستاذ نظير الساعدي

الجزء الرابع

دار إحياء التراث العربي

بيروت - لبنان



وقال أبو جعفر محمد بن علي: معناه: بلّغ ما أنزل إليك في فضل علي بن أبي طالب، فلما نزلت الآية أخذ (عليه السلام) بيد علي، فقال: «من كنت مولاه فعلي مولاه»(1) [١٠٠].

أبو القاسم يعقوب بن أحمد السري، أبو بكر بن محمد بن عبد الله بن محمد، أبو مسلم إبراهيم ابن عبد الله الكعبي، الحجاج بن منهال، حماد عن علي بن زيد عن عدي بن ثابت عن البراء قال: لما نزلنا مع رسول الله ﷺ في حجة الوداع كنّا بغدير خم فنادى إن الصلاة جامعة وكسح رسول الله عليه الصلاة والسلام تحت شجرتين وأخذ بيد علي، فقال: «ألست أولى بالمؤمنين من أنفسهم»؟ قالوا: بلى يا رسول الله، قال: «ألست أولى بكل مؤمن من نفسه»؟ قالوا: بلى يا رسول الله، قال: «هذا مولى من أنا مولاه اللهم والِ من والاه وعاد من عاداه»(2).

قال: فلقيه عمر فقال: هنيئاً لك يا ابن أبي طالب أصبحت وأمسيت مولى كل مؤمن ومؤمنة.

روى أبو محمد عبدالله بن محمد القايني نا أبو الحسن محمد بن عثمان النصيبي نا: أبو بكر محمد ابن الحسن السبيعي نا علي بن محمد الدّهان، والحسين بن إبراهيم الجصاص قالانا الحسن بن الحكم نا الحسن بن الحسين بن حيان عن الكلبي عن أبي صالح عن ابن عباس في قوله ﴿يا أيها الرسول بلغ﴾ قال: نزلت في علي (رضي الله عنه) أمر النبي ﷺ أن يبلغ فيه فأخذ (عليه السلام) بيد علي، وقال: «من كنت مولاه فعلي مولاه اللهم والِ من والاه وعادِ من عاداه»(3) [١٠١].

وبلغ ما أنزل إليك في حقوق المسلمين فلما نزلت الآية خطب رسول الله ﷺ أي يوم هذا الحديث في خطبة الوداع، ثم قال: هل بلّغت؟

﴿وإن لم تفعل فما بلّغت رسالته﴾ قرأ ابن محيصن وابن قفال وأبو عمرو والأعمش وشبل: رسالته، على واحدة، وهي قراءة أصحاب عبد الله. الباقون جمع.

فإن قيل: فأي فائدة في قوله: ﴿وإن لم تفعل فما بلّغت رسالته﴾ ولا يقال: كل من هذا الطعام وإن لم تأكل فما أكلته.

(1) مسند أحمد: ١ / ٨٤.

(2) البداية والنهاية: ٥ / ٢٢٩.

(3) مسند أحمد: ٥ / ٣٧٠.

◈ **'तफ्सीरे सआलबी'** में है:

"يا أيها الرسول بلغ ماأنزل إليك من ربك" (ऐ रसूल! जो तुम्हारी तरफ तुम्हारे रब की जानिब से उतारा गया है उसे पहुँचा दो) हज़रत अली ﵁ के बारे में उतरी, जब आयत उतरी तो आप ﷺ ने हज़रत अली ﵁ का हाथ पकड़कर फ़रमाया: मैं जिस का मौला हूँ अली ﵁ उसका मौला है।

→ आपने फ़रमाया: **'यह (अली) उस का मौला है जिसका मैं मौला हूँ, ऐ अल्लाह ﷻ! तू उस से दोस्ती रख जिस से अली दोस्ती रखे, और उस से दुश्मनी रख जिससे अली की दुश्मनी हो।'** रावी कहते हैं की हज़रत अली ﵁ से हज़रत उमर ﵁ की मुलाक़ात हुई तो उन्होंने फ़रमाया: ऐ इब्न अबी तालिब! मुबारक हो, तुम ने इस हाल में सुबह व शाम की कि तुम हर मोमिन मर्द व औरत के मौला थे।

→ हज़रत इब्न अब्बास ﵁ फ़रमाते हैं: "يـا أيها الرسول بلغ" हज़रत अली ﵁ के बारे में उतरी, रसूलल्लाह ﷺ को हुक्म दिया गया के उनके बारे में पहुँचा दें तो आप ﷺ ने हज़रत अली ﵁ का हाथ पकड़कर फ़रमाया: 'मैं जिसका मौला हूँ अली ﵁ उसका मौला है, ऐ अल्लाह ﷻ! तू उस से दोस्ती रख जिस से अली ﵁ दोस्ती रखे, और उस से दुश्मनी रख जिस से अली ﵁ की दुश्मनी हो।

...ﭐلْمَيْمَنَةِ﴾ . قال : ماذا لهم ، وماذا أعدَّ لهم ، ﴿وَأَصْحَـٰبُ ٱلْمَشْـَٔمَةِ
... قال : ماذا لهم ، وماذا أعدَّ لهم ، ﴿وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلسَّـٰبِقُونَ﴾ .
... كلِّ أمةٍ[1] .

... حميدٍ[2] ، وابنُ جريرٍ ، عن الحسنِ في قوله : ﴿وَكُنتُمْ أَزْوَٰجًا
... وَثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْـَٔاخِرِينَ﴾ . قال : سوَّى بينَ أصحابِ اليمينِ من
... أصحابِ اليمينِ من هذه الأمةِ ، وكان السابقون من الأوَّلين
... الأمةِ[3] .

وأخرَج ابنُ أبي حاتمٍ ، وابنُ مَرْدُويَه ، عن ابنِ عباسٍ في قوله : ﴿وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلسَّـٰبِقُونَ﴾ . قال : يوشعُ بنُ نونٍ سبَق إلى موسَى ، ومؤمنُ آلِ «يس» سبَق إلى عيسَى ، وعليُّ بنُ أبي طالبٍ سبَق إلى محمدٍ رسولِ اللهِ ﷺ[4] .

وأخرَج عبدُ بنُ حميدٍ عن الحسنِ قال : قال رسولُ اللهِ ﷺ : «السابقون يومَ القيامةِ أربعةٌ ؛ فأنا سابقُ العربِ ، وسلمانُ سابقُ فارسَ ، وبلالٌ سابقُ الحبشةِ[5] ، وصهيبٌ سابقُ الرومِ»[6] .

وأخرَج أبو نعيمٍ ، والديلميُّ[7] ، عن ابنِ عباسٍ قال : قال رسولُ اللهِ ﷺ :

---

(١) عبد الرزاق ٢/ ٢٦٩ مختصرا ، وابن جرير ٢٢/ ٢٨٦، ٢٨٨.
(٢) بعده في م : «وابن المنذر» .
(٣) ابن جرير ٢٢/ ٢٨٧، ٢٨٨ مرفوعا .
(٤) ابن أبي حاتم - كما في تفسير ابن كثير ٧/ ٤٩٠. وتقدم مرفوعا في ١٢/ ٣٤٠ مفردا لابن مردويه .
(٥) في ف ١، ح ١: «الحبش» .
(٦) ضعفه الألباني في السلسلة الضعيفة (٢٩٥٣) .
(٧) في م : «البيهقي» .



« ﴿وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلسَّـٰبِقُونَ ۝ أُوْلَـٰٓئِكَ ٱلْمُقَرَّبُونَ﴾ : أوَّلُ مَن (١) يُهَجِّرُ إلى (١) المسجدِ وآخِرُ من يَخرُجُ منه»[2] .

وأخرَج عبدُ بنُ حميدٍ ، وابنُ المنذرِ ، عن عثمانَ بنِ أبي سَوْدةَ مولَى عبادةَ بنِ الصامتِ قال : بلَغنا في هذه الآيةِ : ﴿وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلسَّـٰبِقُونَ﴾ أنهم السابقون إلى المساجدِ والخروجِ في سبيلِ اللهِ .

وأخرَج ابنُ مَرْدُويَه عن ابنِ عباسٍ : ﴿وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلسَّـٰبِقُونَ﴾ . قال : من كلِّ أمةٍ .

وأخرَج عبدُ بنُ حميدٍ عن قتادةَ ، مثلَه .

وأخرَج ابنُ مَرْدُويَه عن [٤٠٣و] ابنِ عباسٍ في قوله : ﴿وَٱلسَّـٰبِقُونَ ٱلسَّـٰبِقُونَ﴾ . قال : نزَلت في حِزقيلَ مؤمنِ آلِ فرعونَ ، وحبيبٍ النجارِ الذي ذُكِرَ في «يس» ، وعليِّ بنِ أبي طالبٍ ، وكلُّ رجلٍ[3] منهم سابقُ أمتِه ، وعليٌّ أفضلُهم سَبْقًا .

وأخرَج ابنُ أبي حاتمٍ ، وابنُ مَرْدُويَه ، عن النعمانِ بنِ بشيرٍ قال : قال رسولُ اللهِ ﷺ : « ﴿وَإِذَا ٱلنُّفُوسُ زُوِّجَتْ﴾ [التكوير : ٧] . قال : الضُّرَباءُ[4] ؛ كلُّ رجلٍ مع قومٍ كانوا يعملون بعملِه ؛ وذلك أنَّ اللهَ يقولُ : ﴿وَكُنتُمْ أَزْوَٰجًا ثَلَـٰثَةً ۝ فَأَصْحَـٰبُ ٱلْمَيْمَنَةِ مَآ أَصْحَـٰبُ ٱلْمَيْمَنَةِ ۝ وَأَصْحَـٰبُ ٱلْمَشْـَٔمَةِ مَآ

---

(١ - ١) في م : «يدخل» . ويهجر : يبادر إلى الصلاة في أول وقتها . ينظر النهاية ٥/ ٢٤٦.
(٢) أبو نعيم ٦/ ١٠٩ عن عثمان بن أبي سودة ، والديلمي (٣٥٧٤) .
(٣) ليس في : الأصل .
(٤) الضرباء : جمع ضريب ، وهو المِثْل والشبيه . ينظر اللسان (ض ر ب) .

→ **‘दुर्रे मन्सूर’** में है: हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं: आयत ‘‘والسابقون الاولون’’ के बारे में फ़रमाते हैं: यूशा बिन नून ने हज़रत मूसा ﷺ की तरफ सबक़त की मोमिन आल यासीन ने हज़रत ईसा ﷺ की तरफ़ सबक़त की और हज़रत अली ﷺ ने रसूलल्लाह ﷺ की तरफ़ सबक़त की।

→ दूसरी रिवायत में है कि हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ फ़रमाते हैं : आयत ‘‘والسابقون الاولون’’ मोमिन आल फ़िरौन हज़कील, हबीब नज्जार जिनका ज़िकर सूरह यासीन में है, और हज़रत अली ﷺ के बारे में नाज़िल हुई, उनमें से हर एक अपनी उम्मत में सबक़त करनेवाला है, और अली ﷺ इनमें सबसे अफ़ज़ल हैं।

# تفسير القرآن العظيم

للإمام الجليل الحافظ عماد الدين أبي الفداء
إسماعيل بن كثير الدمشقي
المتوفى سنة ٧٧٤ هـ

هذه الطبعة أول طبعة مقابلة على النسخة الأزهرية
وكذلك على نسخة دار الكتب المصرية

تحقيق
مصطفى السيد محمد — محمد السيد رشاد
محمد فضل العجماوي — علي أحمد عبد الباقي
حسن عباس قطب

المجلد السابع

مؤسسة قرطبة
طباعة . نشر . توزيع
جيزة - ت : ٥٨١٥٠٢٧

مكتبة أولاد الشيخ للتراث
٦١ ش اليابان - عمرانية غربية - جيزة
ت : ٥٦٢٨٣١٨ - ٥٦١١٤٤٢



ونحجب البيت ، ونسقي الحاج فأنزل الله ﴿ أجعلتم سقاية الحاج ﴾ الآية .

وقال عبد الرزاق : أخبرنا ابن عيينة ، عن إسماعيل ، عن الشعبي ، قال : نزلت في علي والعباس - رضي الله عنهما - تكلما في ذلك .

وقال ابن جرير[47] : حدثني يونس ، أخبرنا ابن وهب ، أخبرت[1] عن أبي صخر ، قال : سمعت محمد بن كعب القرظي يقول : افتخر طلحة بن شيبة من بني عبد الدار ، وعباس بن عبد المطلب ، وعلي بن أبي طالب ، فقال [ ][2] طلحة : أنا صاحب البيت معي مفتاحه ولو أشاء[3] بت فيه ، وقال العباس : أنا صاحب السقاية والقائم عليها ولو أشاء بت في المسجد ، فقال علي - رضي الله عنه - : ما أدري ما تقولان[4] ، لقد صليت إلى القبلة ستة أشهر قبل الناس وأنا صاحب الجهاد ، فأنزل الله - عز وجل - ﴿ أجعلتم سقاية الحاج ﴾ . الآية كلها .

وهكذا قال السدي إلا أنه قال : افتخر علي ، والعباس ، وعثمان[5] وشيبة بن عثمان ، وذكر نحوه .

وقال عبد الرزاق[48] : أخبرنا معمر ، عن عمرو ، عن الحسن ، قال : نزلت في علي ، وعباس وعثمان ، وشيبة تكلموا في ذلك ، فقال العباس : ما [ أراني [إلا] تارك سقايتنا ، فقال رسول الله ﷺ : « أقيموا على سقايتكم فإن لكم فيها خيرًا » .

ورواه محمد بن ثور ، عن معمر ، عن الحسن فذكر[6] نحوه [ ][7] .

وقد ورد في تفسير هذه الآية حديث مرفوع فلابد من ذكره ها هنا :

قال عبد الرزاق[49] : أخبرنا معمر ، عن يحيى بن أبي كثير ، عن النعمان بن بشير - رضي الله عنه : أن رجلًا قال : ما أبالي أن أعمل عملًا بعد الإسلام [ إلا أن أسقي الحاج .

---

(47) - تفسير الطبري (171/14) رقم (16563) .

(48) - تفسير عبد الرزاق (243/1) وهو عند ابن جرير برقم (16561) .

(49) - تفسير عبد الرزاق (243/1) وهو عند ابن جرير برقم (16560) .

---

[1] - في ز ، خ : « أخبرني ابن لهيعة .... » .

[2] - في حاشية ز : « لعله عثمان بن طلحة » .

[3] - في ز : « لشأ » .

[4] - في ز : « يقولان » .

[5] - سقط من : ز .

[6] - في ت : « فذكره » .

[7] - ما بين المعكوفين في ز : « إلا أنه قال : فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم : « أقيموا على سقايتكم فإن لكم فيها خيرًا » .

◈ **'तफ्सीर इब्न कसीर'** में है:

→ शाअ़बी कहते हैं: ''أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله واليوم الآخر وجاهد في سبيل الله، لا يستوٗن عند الله'' ( क्या तुम ने हाजियों को पानी पीला देना और मस्जिदे हराम की ख़िदमत करना इस के बराबर कर दिया है जो अल्लाह ﷻ पर और आख़िरत के दीन पर ईमान लाऐ, और अल्लाह ﷻ की राह में जिहाद किया यह अल्लाह ﷻ के नज़दीक बराबर नहीं) हज़रत अब्बास ؓ और हज़रत अली ؓ के बारे में उतरी।

→ एक रिवायत में हैं: तल्हा बिन शैबा जो अब्द अलदार में से थे, हज़रत अब्बास ؓ और हज़रत अली ؓ ने एक दूसरे पर फ़ख्र जताया, तल्हा ने कहा: 'मैं काबा का मालिक हूँ, चाबियाँ मेरे पास हैं, अगर मैं चाहूँ तो इसमें रात बसर कर सकता हूँ,' अब्बास ؓ ने कहा 'मैं सीक़ाया का ज़िम्मेदार व निगरा हूँ, अगर चाहूँ तो मस्जिद (हराम) में रात बसर कर सकता हूँ,' अली ؓ ने फ़रमाया: 'मैं नहीं जानता कि तुम दोनों क्या कहते हो, मैंने तो लोगों से 6 (छे) महीने पहले क़िब्ले की तरफ रुख़ करके नमाज़ पढ़ी है और मैं जिहादवाला हूँ,' तो अल्लाह ﷻ ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई ''أجعلتم سقاية الحاج''।

→ यही बात इमाम सुद्दी ؒ ने भी बयान की है, अलबत्ता उन्होंने अली ؓ, अब्बास ؓ, उस्मान और शैबा बिन उस्मान के नाम बताये हैं।

→ हसन ؓ कहते हैं: यह आयत अली ؓ , अब्बास ؓ , उस्मान और शैबा के बारे में नाज़िल हुई।

# المُسْنَد

للإمام

أحمد بن محمد بن حنبل

١٦٤ - ٢٤١

شرحه وصنع فهارسه

أحمد محمد شاكر

الجزء الأول

من الحديث ١

إلى الحديث ٩٢٠

دار الحديث

القاهرة

١٠٣٨ - حدثنا عبدالرحمن عن سفيان عن الأعمش عن سعد ابن عبيدة عن أبي عبدالرحمن عن علي قال: قلت: يا رسول الله ما لي أراك تتوّق في قريش وتدعنا أن تزوّج إلينا؟ قال: «وعندك شيء؟» قال: قلت: ابنة حمزة، قال: «إنها ابنة أخي من الرضاعة».

١٠٣٩ - حدثنا عبدالرحمن حدثنا شعبة عن عمرو بن مُرّة عن أبي البَخْتَريّ عن أبي عبدالرحمن السُّلَمي قال: قال علي: إذا حدثتكم عن رسول الله ﷺ حديثا فظنُّوا برسول الله ﷺ أهياه وأهداه وأتقاه.

١٠٤٠ - حدثنا وكيع عن سفيان وشعبة عن حبيب بن أبي ثابت عن عبد خيْر عن علي أنه قال: ألاَ أنبئكم بخير هذه الأمة بعد نبيها ﷺ؟ أبو بكر، ثم عمر.

١٠٤١ - [قال عبدالله بن أحمد]: حدثني عثمان بن أبي شيبة حدثنا مُطّلب بن زياد عن السُّدّيّ عن عبد خيْر عن علي في قوله ﴿إنما أنتَ منذرٌ ولكلِّ قومٍ هادٍ﴾ قال: رسول الله ﷺ المنذر، والهاد رجل من بني هاشم.

(١٠٣٨) إسناده صحيح، وهو مكرر ٦٢٠. وانظر ٧٧٠، ٩٣١.

(١٠٣٩) إسناده صحيح، وهو مختصر ٩٨٧.

(١٠٤٠) إسناده صحيح، وهو مختصر ١٠٣٢.

(١٠٤١) إسناده صحيح، المطلب بن زياد بن أبي زهير الثقفي الكوفي: ثقة، وثقه أحمد وابن معين وغيرهما، وترجمه البخاري في الكبير ٨/٢/٤ فلم يذكر فيه جرحاً. والحديث في مجمع الزوائد ٧: ٤١ وقال: «رواه عبدالله بن أحمد والطبراني في الصغير والأوسط، ورجال المسند ثقات». وذكره ابن كثير في التفسير ٤: ٤٩٩ عن ابن أبي حاتم عن =

(٤٨)

◈ **'मुस्नद अहमद'** में है:

हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं ''إنما أنت منذر ولكل قوم هاد'' (बेशक आप आगाह करनेवाले हैं, और हर क़ौम के लिए एक रहनुमा है) में मंज़र से मुराद रसूलल्लाह ﷺ हैं, और 'हादी' से मुराद बनु हाशिम का एक शख़्स है।

→ मुहक़्क़िक़ अहमद शाकिर कहते हैं: **'इस की सनद सहीह है।'**

◈ **नोट:** बनु हाशिम का यह शख़्स सय्यदना अली ﷺ हैं, जैसा के दूसरी रिवायत से साबित है।

# تفسير القرآن العظيم

مسنداً

عن رسول الله ﷺ والصحابة والتابعين

تأليف
الإمام الحافظ عبدالرحمن بن محمد
ابن إدريس الرازي ابن أبي حاتم
المتوفى سنة ٣٢٧هـ
تحقيق
أسعد محمد الطيب

المجلد
السابع

إعداد: مركز الدراسات والبحوث بمكتبة نزار الباز

مكتبة نزار مصطفى الباز
مكة المكرمة - الرياض



سفيان عن عطاء بن السائب عن سعيد بن جبير في قوله: ﴿ ولكل قوم هاد ﴾ قال: الهاد الله عزّ وجل .

ورواه عطية عن ابن عباس مثله، وروى عن الضحاك أيضاً مثله .

والوجه الثاني :

[١٢١٥٠] حدثنا محمد بن عبدالرحمن، ثنا أبو داود الحفري، عن سفيان الثوري، عن السدى، عن عكرمة، عن ابن عباس ﴿ إنما أنت منذر ولكل قوم هاد ﴾ قال : هو المنذر وهو الهاد .

[١٢١٥١ ] حدثنا أبو سعيد الأشج، ثنا يعلى عن عبدالملك بن قيس عن مجاهد ﴿ ولكل قوم هاد ﴾ قال : نبي .

وروى عن أبي الضحى وعكرمة نحو ذلك .

والوجه الثالث :

[١٢١٥٢ ] حدثنا علي بن الحسين، ثنا عثمان بن أبي شيبة، ثنا المطلب بن زياد عن السدى عن ( عبد خير )[(١)] عن علي ﴿ لكل قوم هاد ﴾ قال : الهاد رجل من بني هاشم .

قال ابن الجنيد : هو علي بن أبي طالب رضي الله عنه .

وروى عن عبدالله بن عباس في إحدى الروايات وعن أبي جعفر محمد بن علي نحو ذلك .

والوجه الرابع :

[١٢١٥٣] حدثنا كثير بن شهاب، ثنا محمد بن سعيد بن سابق، ثنا أبو جعفر الرازي، ثنا إبراهيم بن أنس عن أبي العالية في قوله : ﴿ إنما أنت منذر ولكل قوم هاد ﴾ قال : الهاد القائد، والقائد، الإمام، والإمام العمل .

[ ١٢١٥٤] حدثني أبي، ثنا أبو صالح، حدثني معاوية ابن صالح عن علي بن أبي طلحة عن ابن عباس قوله : ﴿ لكل قوم هاد ﴾ قال : داع .

(١) إضافة عن ابن كثير ٤ / ٤٥٦ .

◈ अल्लामा राज़ी बिन अबी हातिम ﷺ की तफ़्सीर में "إنما أنت منذر ولكل قوم هاد" (बेशक आप आगाह करनेवाले हैं, और हर क़ौम के लिए एक रहनुमा है) के तहत लिखा:

→ हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं: 'हादी' से मुराद बनु हाशिम का एक शख़्स है।

→ इब्न जुनैद कहते हैं: इस से मुराद अली ﷺ हैं।

→ यही बात इब्न अब्बास ﷺ से एक रिवायत में और अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली ﷺ से भी नक़ल की गई है।

# تفسير الطبري

## جامع البيان عن تأويل آي القرآن


لأبي جعفر محمد بن جرير الطبري

(٢٢٤هـ - ٣١٠هـ)

تحقيق

الدكتور عبد الله بن عبد المحسن التركي



بالتعاون مع

مركز البحوث والدراسات العربية والإسلامية

بدار هجر

الجزء التاسع عشر

هجر

للطباعة والنشر والتوزيع والإعلان




جأر إلى اللهِ ، ثم قال : « هؤلاء أهلُ بيتي » . قالت أمُّ سلمةَ ، فقلت : يا رسولَ اللهِ أدخِلْني معهم . قال : « إنَّكِ مِن أهلي »[١] .

حدَّثني أحمدُ بنُ محمدٍ الطوسيُّ ، قال : ثنا عبدُ الرحمنِ بنُ صالحٍ ، قال : ثنا محمدُ بنُ سليمانَ الأصبهانيُّ ، عن يحيى بنِ عُبيدٍ المكيِّ ، عن عطاءٍ ، عن عمرَ بنِ أبي سلمةَ ، قال : نزلَت هذه الآيةُ على النبيِّ ﷺ وهو في بيتِ أمِّ سلمةَ : ﴿ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ﴾ . فدعا حسنًا وحُسينًا وفاطمةَ ، وأجلَسَهم بينَ يديه ، ودعا عليًّا فأجلَسه خلفَه ، فتجلَّل هو وهم بالكساءِ ، ثم قال : « هؤلاءِ أهلُ [٢]بيتي ، فأذهِبْ عنهم الرِّجسَ وطهِّرْهم تطهيرًا » . قالت أمُّ سلمةَ : أنا معهم[٢] ؟ قال[٣] : « مكانَكِ ، وأنتِ على خيرٍ »[٤] .

حدَّثني محمدُ بنُ عُمارةَ ، قال : ثنا إسماعيلُ بنُ أبانٍ ، قال : ثنا الصَّبَّاحُ بنُ يحيى المرِّيُّ ، عن السديِّ ، عن أبي الديلمِ ، قال : قال عليُّ بنُ الحسينِ لرجلٍ من أهلِ الشامِ : أما قرأتَ في الأحزابِ : ﴿ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ﴾ ؟ قال : ولأنتم هم ؟ قال : نعم[٥] .

حدَّثنا ابنُ المثنى ، قال [٢/٦٢٥و] : ثنا أبو بكرٍ الحنفيُّ ، قال : ثنا بُكيرُ بنُ مِسمارٍ ، قال : سمعتُ عامرَ بنَ سعدٍ ، قال : قال سعدٌ : قال رسولُ اللهِ ﷺ حينَ نزَل عليه الوحيُ ، فأخَذ عليًّا وابنيه وفاطمةَ ، وأدخَلهم تحتَ ثوبِه ، ثم قال : « ربِّ

---

(١) ذكره ابن كثير في تفسيره ٦/٤٠٩ عن المصنف ، وأخرجه الطبراني (٢٦٦٣) ، ٢٣/٣٠٨ (٦٩٦) من طريق موسى بن يعقوب به .

(٢ - ٢) سقط من : ت ١ .

(٣) سقط من النسخ ، والمثبت من مصادر التخريج .

(٤) ذكره ابن كثير في تفسيره ٦/٤٠٩ عن المصنف ، وأخرجه الترمذي (٣٢٠٥ ، ٣٧٨٧) ، وابن عساكر في تاريخه ١٤/١٤٥ من طريق محمد بن سليمان به .

(٥) ذكره ابن كثير في تفسيره ٦/٤١٢ عن السدي به .

◈ **‘तफ्सीरे तिबरी’** में है :

→ उमर बिन अबी सलमा ﵁ कहते हैं: यह आयत हुजूर ﷺ पर नाज़िल हुई तो आप हज़रत उम्मे सलमा ﵂ के घर में थे ‘‘إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت ويطهركم تطهيراً’’ ( बेशक अल्लाह ﷻ चाहता है कि ऐ अह्ले बयत तुम से गंदगी को दूर कर दे और तुम्हे ख़ूब पाक कर दे), आप ﷺ ने हज़रत हसन ﵁ व हुसैन ﵁ और हज़रत फ़ातिमा ﵂ को बुलाया, और उन्हें अपने सामने बिठाया, हज़रत अली ﵁ को बुलाया और उन्हें अपने पीछे बिठाया, फिर आप ﷺ ने अपने और उनके ऊपर एक चादर डाली और कहा: **‘यह मेरे अह्ले बयत हैं, तो इनसे गंदगी दूर कर दे और इन्हे ख़ूब पाक कर दे,’** हज़रत उम्मे सलमा ﵂ ने कहा: ‘मैं भी इनके साथ हूँ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया: ‘तुम अपनी जगह रहो, तुम ख़ैर पर हो।’

→ अबू दीलम कहते हैं: ‘हज़रत अली बिन हुसैन (इमाम ज़ैनुल आबिदीन) ﵁ ने शाम के एक शख़्स से कहा: क्या तुमने सूरह अहज़ाब में यह आयत ‘‘إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت ويطهركم تطهيراً’’ नहीं पढ़ी, उस ने कहा: ‘क्या इस से तुम लोग मुराद हो?’ फ़रमाया: ‘हाँ’।

المجلد التاسع

العنكبوت - الصافات

١٤٢٩هـ - ٢٠٠٨م

كلية الدراسات العليا والبحث العلمي - جامعة الشارقة

إصدار 

كلية الدراسات العليا والبحث العلمي
هاتف: ٠٠٩٧١٦٠٥٠٥٠٥٥٠ فاكس: ٠٠٩٧١٦٠٥٠٥٠٥٥٠
E-mail: gs@sharjah.ac.ae

الطبعة الأولى

١٤٢٩هـ - ٢٠٠٨ م

جامعة الشارقة

ص ب: (٢٧٢٧٢)، الشارقة، الإمارات العربية المتحدة
هاتف: (٥٥٨٥٠٠٠-٦-٩٧١+) فاكس: (٥٥٨٥٠٩٩-٦-٩٧١+)
Web site: http://www.sharjah.ac.ae



وقيل: عُنِيَ بأهل البيت هنا النبي ﷺ[1] وعلي وفاطمة والحسن والحسين ﷺ، رواه الخدري[2]، عن النبي ﷺ[3] أنه قال "نَزَلَتِ الآيَةُ فِي خَمْسٍ: فِيَّ وَفِي عَلِيٍّ وَحَسَنٍ وَحُسَيْنٍ وَفَاطِمَةَ"[4]. وهو قول جماعة من الصحابة.

وقال عكرمة: عني بذلك أزواج النبي ﷺ[5][6].

ويلزم عكرمة أن يقرأ عنكن.

وقيل عني بذلك: نساؤه وأهله.

قوله تعالى (ذكره)[7]: ﴿وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ﴾[٣٤] إلى قوله: ﴿وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا﴾[٣٧].

أي: واذكرن نعمة الله عليكن إذ جعلكن في بيوت تتلى فيها (آيات)[8] الله والحكمة، أي: اشكرن الله على ذلك.

---

(١) ساقط من (ج).

(٢) هو أبو سعيد الخدري، وقد تقدمت ترجمته.

(٣) (ج) ﷺ.

(٤) أورده الهيثمي في مجمع الزوائد، كتاب المناقب باب فضل أهل البيت ﷺ ٩/ ١٧٠. والطبري في جامع البيان ٢٢/ ٦، والواحدي في أسباب النزول ٢٣٩. وقد ضعف الهيثمي هذا الحديث من حيث سنده لأن فيه بكير بن يحيى بن زبان، وهو ضعيف.

(٥) ساقط من (ج).

(٦) انظر: جامع البيان ٢٢/ ٨، والمحرر الوجيز ١٣/ ٧٢.

(٧) ساقط من (ج).

(٨) تأكلت مع (ج).

◈ अबू मुहम्मद मक्की बिन अबी तालिब क़ैसी की "الهداية إلى بلوغ النهاية" में है:

→ कहा गया है: इस आयत (انما يريد الله) में अह्ले बयत से मुराद नबी ﷺ , अली رضی اللہ عنہ, फ़तिमा رضی اللہ عنہا और हसनो हुसैन رضی اللہ عنہم हैं ।

→ इस रिवायत को हज़रत अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ ने हुज़ूर ﷺ से रिवायत किया है के आप ﷺ ने फ़रमाया: यह आयत 5 (पांच) लोगों के बारे में नाज़िल हुई है: मेरे, अली رضی اللہ عنہ , हसनो हुसैन رضی اللہ عنہم और फ़ातिमा رضی اللہ عنہا के।

٢٦٣٨٨ ـ حدثنا عبدالله بن نمير قال ثنا عبدالملك ـ يعني ابن أبي سليمان ـ عن عطاء بن أبي رباح قال حدثني من سمع أم سلمة تذكر أن النبي ﷺ كان في بيتها، فأتته فاطمة ببرمة فيها خزيرة، فدخلت بها عليه، فقال لها «ادعي زوجك وابنيك» قالت: فجاء علي والحسين والحسن فدخلوا عليه، فجلسوا يأكلون من تلك الخزيرة وهو على منامة له على دكان تحته كساء له خيبري، قالت: وأنا أصلي في الحجرة، فأنزل الله عز وجل هذه الآية ﴿إِنَّمَا يُرِيدُ اللهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيراً﴾، قالت: فأخذ فضل الكساء فغشاهم به، ثم أخرج يده فألوى بها إلى السماء، ثم قال «اللهم هؤلاء أهل بيتي وخاصتي؛ فأذهب عنهم الرجس وطهرهم تطهيراً، اللهم هؤلاء أهل بيتي وخاصتي؛ فأذهب عنهم الرجس وطهرهم تطهيراً» قالت: فأدخلت رأسي البيت، فقلت: وأنا معكم يا رسول الله؟ قال «إنك إلى خير، إنك إلى خير» قال عبدالملك: وحدثني أبو ليلى عن أم سلمة مثل حديث عطاء سواء، قال عبدالملك: وحدثني داود بن أبي عوف أبو[1] الجحاف عن حوشب عن أم سلمة ... بمثله سواء.

٢٦٣٨٩ ـ حدثنا أبو أسامة قال ثنا هشام عن أبيه عن زينب ابنة

---

(٢٦٣٨٨) إسناده صحيح، برغم جهالة الراوي عن أم سلمة لأنه وصله في آخره، وهو حسن عند الترمذي ٥/٦٩٠ رقم ٣٨٧١ في المناقب أيضا بل قال: هو أحسن شيء في الباب.

(٢٦٣٨٨م) إسناده صحيح، وهو وصل لسابقه. وأبو ليلى هو الكندي وهو ثقة من كبار التابعين وداود بن أبي عوف موثق وحديثه في السنن.

(١) (أبو) سقط من طبعة الحلبي.

(٢٦٣٨٩) إسناده صحيح، رواه البخاري ٣/٣٢٨ رقم ١٤٦٧، ومسلم ٢/٦٩٥ رقم ١٠٠١، وابن ماجة ١/٥٨٧ رقم ١٨٣٥ كلهم في الزكاة.

( ٢٤٤ )

# المُسْنَد

للإمام

أحمد بن محمد بن حنبل

١٦٤ ـ ٢٤١

شرحه وصنع فهارسه

حمزة أحمد الزين

الجزء الثامن عشر

من الحديث ٢٥٤٨٠

إلى الحديث ٢٧٥١٩

دار الحديث

القاهرة

◈ सहाबा की एक जमाअत का यही क़ौल है।

→ **'मुस्नद अहमद'** में है: हज़रत उम्मे सलमा ﵂ फ़रमाती हैं :

→ नबी ﷺ के पास हज़रत फ़ातिमा ﵂ सुरीद का प्याला लेकर आईं, आप ﷺ ने फ़रमाया के जाओ, अपने शौहर और दोनों बेटो को बुलाकर लाओ, हज़रत उम्मे सलमा ﵂ फ़रमाती हैं कि फिर हज़रत अली ﵁, हसनो हुसैन ﵄ आये और उस सुरीद में से खाने लगे, आप ﷺ के नीचे एक खैबरी चादर थी,फ़रमाती हैं: 'मैं हुजरे में नमाज़ पढ़ रही थी, तो अल्लाह ﷻ ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई "إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت ويطهركم تطهيراً" (बेशक अल्लाह ﷻ चाहता है कि अय अह्ले बयत तुमसे गंदगी को दूर कर दे और तुम्हे ख़ूब पाक कर दे), फ़रमाती हैं: आप ﷺ ने चादर के बचे हुए कोने से उन को ढांप दिया, फिर अपना हाथ निकाल कर आसमान की तरफ़ इशारा किया और कहा': **'ऐ अल्लाह ﷻ! यह मेरे अह्ले बयत और मेरे ख़ास लोग हैं, तू इनसे गंदगी दूर कर दे और इन्हे ख़ूब पाक फ़रमा दे, ऐ अल्लाह ﷻ! यह मेरे अह्ले बयत और मेरे ख़ास लोग हैं, तू इनसे गंदगी दूर कर दे और इन्हे ख़ूब पाक फ़रमा दे।'**

→ हज़रत उम्मे सलमा ﵂ ने कहा: ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ! मैं भी आप लोगों के साथ हूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: 'तुम भी ख़ैर पर हो, तुम भी ख़ैर पर हो।'

# تفسير البغوي

«معالم التنزيل»

للإمام محيي السنة أبي محمد الحسين بن مسعود البغوي
( المتوفى ـ ٥١٦هـ)

المجلد الثاني

حققه وخرج أحاديثه
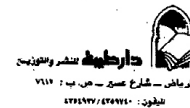
محمد عبد الله النمر عثمان جمعة ضميرية سليمان مسلم الحرش

دار طيبة للنشر والتوزيع
الرياض ـ شارع عسير ـ ص. ب: ٧٦١٢
تليفون: ٤٣٥٩٧٤٠ / ٤٣٥٤٩٣٧



﴿فَمَنْ حَآجَّكَ فِيهِ مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ ٱلْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا۟ نَدْعُ أَبْنَآءَنَا وَأَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ ٱللَّهِ عَلَى ٱلْكَـٰذِبِينَ ﴿٦١﴾﴾

قوله تعالى: ﴿الحق من ربك﴾ أي هو الحق وقيل جاءك الحق من ربك ﴿فلا تكونن من الممترين﴾ الشاكّين، الخطاب مع النبي ﷺ والمراد أمته.

قوله عز وجل: ﴿فمن حاجك فيه﴾ أي جادلك في عيسى أو في الحق ﴿من بعد ما جاءك من العلم﴾ بأن عيسى عبد الله ورسوله ﴿فقل تعالوا﴾ وأصله تعاليوا تفاعلوا من العلو فاستثقلت الضمة على الياء فحذفت، قال الفراء: بمعنى تعال كأنه يقول: ارتفع. قوله ﴿ندع﴾ جزم لجواب الأمر وعلامة الجزم سقوط الواو ﴿أبناءنا وأبناءكم ونساءنا ونساءكم وأنفسنا وأنفسكم﴾ قيل: أبناءنا أراد الحسن والحسين، ونساءنا فاطمة. وأنفسنا عنى نفسه وعلياً رضي الله عنه والعرب تسمي ابن عم الرجل نفسه، كما قال الله تعالى: «ولا تلمزوا أنفسكم» (١١ ـ الحجرات) يريد إخوانكم وقيل هو على العموم الجماعة أهل الدين ﴿ثم نبتهل﴾ قال ابن عباس رضي الله عنهما: أي نتضرع في الدعاء، وقال الكلبي: نجتهد ونبالغ في الدعاء، وقال الكسائي وأبو عبيدة: نلتعن والابتهال، الالتعان يقال: عليه بهلة الله أي لعنته: ﴿فنجعل لعنة الله على الكاذبين﴾ منا ومنكم في أمر عيسى، فلما قرأ رسول الله ﷺ هذه الآية على وفد نجران ودعاهم إلى المباهلة، قالوا: حتى نرجع وننظر في أمرنا ثم نأتيك غداً، فخلا بعضهم ببعض فقالوا للعاقب وكان ذا رأيهم: يا عبد المسيح ما ترى؟ قال: والله لقد عرفتم يا معشر النصارى أن محمداً نبي مرسل، والله مالاعن قوم نبياً قط فعاش كبيرهم ولا نبت صغيرهم، ولئن فعلتم ذلك لتهلكن فإن أبيتم إلا الإقامة على ما أنتم عليه من القول في صاحبكم فوادعوا الرجل وانصرفوا إلى بلادكم، فأتوا رسول الله ﷺ وقد غدا رسول الله ﷺ محتضناً للحسين آخذاً بيد الحسن وفاطمة تمشي خلفه وعلي خلفها وهو يقول لهم: «إذا أنا دعوت فأمّنوا» فقال أسقف نجران: يا معشر النصارى إني لأرى وجوهاً لو سألوا الله أن يزيل جبلاً من مكانه لأزاله فلا تبتهلوا فتهلكوا ولا يبقى على وجه الأرض منكم نصراني إلى يوم القيامة، فقالوا يا أبا القاسم: قد رأينا أن لا نلاعنك وأن نتركك على دينك ونثبت على ديننا، فقال رسول الله ﷺ: «فإن أبيتم المباهلة فأسلموا يكن لكم ما للمسلمين وعليكم ما عليهم» فأبوا فقال: «فإني أنابذكم» فقالوا: ما لنا بحرب العرب طاقة، ولكنا نصالحك على أن لا تغزونا ولا تخيفنا ولا تردنا عن ديننا على أن نؤدي إليك كل عام ألفي حلة، ألفاً في صفر وألفاً في رجب، فصالحهم رسول الله ﷺ على ذلك وقال: «والذي نفسي بيده إن العذاب قد تدلى على أهل نجران ولو تلاعنوا لمسخوا قردة وخنازير ولاضطرم عليهم الوادي ناراً، ولاستأصل الله نجران وأهله حتى الطير على الشجر، ولما حال الحول على النصارى كلهم حتى هلكوا»[١].

---

(١) قال ابن حجر في الكافي الشاف أخرجه أبو نعيم في دلائل النبوة من طريق محمد بن مروان السدي عن الكلبي عن أبي صالح عن ابن عباس بطوله، وابن مروان متروك متهم بالكذب.
ثم أخرج أبو نعيم نحوه عن الشعبي مرسلاً ومنه: (فإن أبيتم المباهلة فأسلموا.....) انظر الكافي الشاف ص٢٦.
وأخرجه الطبري في التفسير ٦ /٤٧٩ ـ ٤٨٠ من طريق ابن اسحاق عن محمد بن جعفر ابن الزبير في قوله تعالى: (إن هذا لهو القصص الحق) فذكره مرسلاً.
وانظر: الدر المنثور للسيوطي: ٢/٢٢٩ ـ ٢٣٣، وابن كثير: ١ /٣٧١ ـ ٣٧٢.

◈ **'तफ्सीर बग़ावी'** में आयत मुबाहिला :-

''فمن حاجك فيه من بعد ما جاءك من العلم فقل تعالوا ندع أبناءنا وأبناء
كم ونساءنا ونساءكم وأنفسنا وأنفسكم ،ثم نبتهل فنجعل لعنة الله على الكاذبين''

(इसलिए जो शख़्स आपके पास उस इल्म के आ जाने के बाद भी आपसे उसमें झगड़े तो आप कह दें के आओ हम तुम अपने अपने फ़रज़न्दों को और हम तुम अपनी अपनी औरतों को और हम तुम ख़ास अपनी अपनी जानो को बुला लें,फिर हम आजिज़ी के साथ इल्तजा करें और झूठों पर अल्लाह ﷻ की लानत करें) के ज़ेल में है:

→ रसूलल्लाह ﷺ हज़रत हुसैन رضي الله عنه को गोद में उठाये हुए और हज़रत हसन رضي الله عنه का हाथ पकडे हुए आए, फ़ातिमा رضي الله عنها आप के पीछे चल रही थीं, और अली رضي الله عنه फ़ातिमा رضي الله عنها के पीछे थे, आप ﷺ ने उन से फ़रमाया: 'जब मैं (बद) दुआ करूँ तो तुम आमीन कहना'।

# أسباب النزول

المسمى

«لُبَاب النُّقُول في أسباب النُّزول»

للإمام الحافظ الحجة القدوة

جلال الدين أبي عبد الرحمن السيوطي

رحمة الله تعالى عليه

ت ٩١١هـ

مؤسسة الكتب الثقافية

عبدالله بن أبي فحالفهم إلى رسول الله [ﷺ] وتبرأ من حلف الكفار وولايتهم، قال فيه وفي عبدالله بن أبي نزلت القصة في المائدة: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلْيَهُودَ وَٱلنَّصَٰرَىٰٓ أَوْلِيَآءَ﴾[1] الآية.

**قوله تعالى: ﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ﴾ [المائدة: ٥٥] الآية.**

[٣٦٠] أخرج الطبراني في الأوسط بسند فيه مجاهيل عن عمار بن ياسر قال: وقف على علي بن أبي طالب سائل وهو راكع في تطوع فنزع خاتمه فأعطاه السائل، فنزلت: ﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ﴾[2] الآية.

[٣٦١] وله شاهد قال عبد الرزاق: حدثنا عبد الوهاب بن مجاهد عن أبيه عن ابن عباس في قوله: ﴿إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ﴾[3] الآية، قال نزلت في علي بن أبي طالب وروى ابن مردويه من وجه آخر عن ابن عباس مثله، وأخرج أيضاً عن علي مثله. وأخرج ابن جرير عن مجاهد وابن أبي حاتم عن سلمة بن كهيل مثله، فهذه شواهد يقوي بعضها بعضاً[4].

**قوله تعالى: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ دِينَكُمْ﴾ [المائدة: ٥٧] الآية.**

[٣٦٢] روى أبو الشيخ وابن حبان عن ابن عباس قال: كان رفاعة بن زيد بن التابوت وسويد بن الحارث قد أظهرا الإسلام ونافقا، وكان رجل من المسلمين يوادهما، فأنزل الله: ﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ دِينَكُمْ﴾[5] إلى

---

[٣٥٩] (١) سورة المائدة: الآية (٥١).

[٣٦٠] (٢) سورة المائدة: الآية (٥٥).

[٣٦١] (٣) سورة المائدة: الآية (٥٥).

(٤) قلت وروى الواحدي في أسباب النزول ص (١١٤)، من طريق محمد بن السائب عن أبي صالح عن ابن عباس قال: أقبل عبدالله بن سلام ومعه نفر من قومه قد آمنوا فقالوا يا رسول الله إن منازلنا بعيدة وليس لنا مجلس ولا متحدث وإن قومنا لما رأونا آمنا بالله ورسوله وصدقناه رفضونا وآلوا على أنفسهم أن لا يجالسونا ولا يناكحونا ولا يكلمونا فشق ذلك علينا فقال لهم النبي ﷺ: ﴿إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا﴾ الآية ثم إن النبي ﷺ خرج إلى المسجد والناس بين قائم وراكع فنظر سائلاً فقال: «هل أعطاك أحد شيئاً؟» قال: نعم خاتم من ذهب قال: «من أعطاكه؟» قال: ذلك القائم ـ وأومأ بيده إلى علي بن أبي طالب (رضي الله عنه) فقال: «على أي حال أعطاك؟» قال: أعطاني وهو راكع فكبر النبي ﷺ ثم قرأ ﴿ومن يتول الله ورسوله والذين آمنوا فإن حزب الله هم الغالبون﴾.

[٣٦٢] (٥) سورة المائدة: الآية (٥٧).

◈ अल्लामा सुयूती رحمه الله की **'अस्बाबुन नुजूल'** में है:

→ हज़रत अम्मार बिन यासिर رضي الله عنه फ़रमाते हैं: एक साइल हज़रत अली رضي الله عنه के पास आकर खड़ा हुआ, आप रुकूअ में थे, तो उसे अपनी अंगूठी उतार कर दे दी, तो यह आयत नाज़िल हुई إنما وليكم الله ورسوله ।

→ मुजाहिद ने हज़रत इब्न अब्बास رضي الله عنه से मज़कूरा आयत के बारे में नक़ल किया है के हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में नाज़िल हुई

→ इब्न मरदविया رحمه الله ने एक दूसरी सनद से भी हज़रत इब्न अब्बास رضي الله عنه का यह क़ौल नक़ल किया है। इसी तरह यह बात उन्होंने खुद हज़रत अली رضي الله عنه से भी नक़ल की है। और इब्न जरीर رحمه الله ने मुजाहिद رحمه الله से और इब्न अबी हातिम رحمه الله ने सल्लमा बिन कहील رضي الله عنه से इसी तरह रिवायत किया है, इस तरह यह रिवायतें शवाहिद हैं,जिन से एक दूसरे की तक़वियत होती है।

◈ **हाशिया में है:**

→ मैं कहता हूँ: वाहिदी की 'असबाबुनुजूल' में है: हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम رضي الله عنه और उनकी क़ौम की एक जमाअत आई, यह लोग इस्लाम ला चुके थे, तो उन्होंने कहा: 'ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! हमारे घर दूर हैं हमारी ना कोई मजलिस है और ना कोई हम से गुफ़्तगू करने वाला,: हमारी क़ौम ने जब देखा कि हम ने अल्लाह ﷻ और उस के रसूल ﷺ की तस्दीक़ की, तो हमें ठुकरा दिया और उन्होंने यह क़सम खाई है कि हमारे साथ ना बैठें गए, ना हम से निकाह करेंगे और ना हम से बात करेंगे, तो रसूलल्लाह ﷺ ने कहा "إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا" फिर नबी ﷺ मस्जिद की तरफ गए, कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे थे, कोई सजदा कर रहा था कोई रुकूअ, के इतने में आप ﷺ एक साइल को देखा आप ने पूछा: 'क्या तुझे किसी ने कुछ दिया' उसने कहा: 'हाँ सोने की अंगूठी', आप ﷺ ने पूछा 'किस ने दी ?' उस ने कहा: 'उस रुकूअ करने वाले ने'- और हज़रत अली رضي الله عنه की तरफ इशारा किया- आप ﷺ ने पूछा: 'इसने किस हालत में दी है?' उसने जवाब दिया: 'रुकूअ की हालत में दी है', आप ﷺ ने तकबीर कही और फिर यह आयत पढ़ी "ومن يتول الله ورسوله والذين آمنوا ،فإن حزب الله هم الغالبون"।

# تحفة الأحوذي

## بشرح جامع الترمذي

للامام الحافظ أبي العلى محمد عبد الرحمن بن عبد الرحيم المباركفورى

١٢٨٣ هـ — ١٣٥٣ هـ

أشرف على مراجعة أصوله وتصحيحه

عبد الرحمن محمد عثمان

الجـــزء التاسع

دار الفكر

للطباعة والنشر والتوزيع



٣٩٦٣ — حدثنا محمودُ بنُ غَيْلانَ ، أخبرنا أبو أحمدَ الزُّبَيْرِيُّ ، أخبرنا سُفْيَانُ عن زُبَيْدٍ عن شَهْرِ بنِ حَوْشَبٍ عن أُمِّ سَلَمَةَ « أَنَّ النَّبِيَّ صلى اللهُ عليه وسلم جَلَّلَ عَلَى الحَسَنِ وَالحُسَيْنِ وَعَلِيٍّ وَفَاطِمَةَ كِسَاءً ثُمَّ قال : اللَّهُمَّ هَؤُلَاءِ أَهْلُ بَيْتِي وحَامَّتِي ، أَذْهِبْ عَنْهُمُ الرِّجْسَ وطَهِّرْهُمْ تَطْهِيراً . فقالتْ أُمُّ سَلَمَةَ : وَأَنَا مَعَهُمْ يارسولَ اللهِ ؟ قال : إِنَّكِ عَلَى خَيْرٍ » .

هذا حديثٌ حسنٌ صحيحٌ ، وَهُوَ أَحْسَنُ شَيْءٍ رُوِيَ في هذا البابِ .

وفي البابِ عن أنسٍ وَعُمَرَ بنِ أبي سَلَمَةَ وَأَبِي الحَمْرَاءِ .

---

قوله : ( عن زبيد ) بضم الزاى وفتح الموحدة مصغراً وهو ابن الحارث اليامى .

قوله : ( جلل على الحسن والحسين وعلى وفاطمة كساء ) أى غطاهم بكساء ( وحامتى ) قال فى النهاية : حامة الإنسان خاصته ومن يقرب منه وهو الحيم أيضاً ( إنك على خير ) تقدم معناه فى تفسير الأحزاب فى شرح حديث عمر بن أبى سلمة .

قوله : ( هذا حديث حسن صحيح ) وأخرجه أحمد وابن جرير .

قوله : ( وفى الباب عن أنس وعمر بن أبى سلمة وأبى الحمراء ) أما حديث أنس وحديث عمر بن أبى سلمة فأخرجها الترمذى فى تفسير سورة الأحزاب ، وأما حديث أبى الحمراء فأخرجه ابن جرير وابن مردويه .

◈ **‘तख़फ़ा अल अहवज़ी शरह तिर्मिज़ी’** में है:

→ हज़रत उम्मे सलमा ﵂ फरमाती हैं: रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ﵁, हज़रत फ़ातिमा ﵂ , हज़रत हसन ﵁ और हज़रत हुसैन ﵁ पर एक चादर डाली, फिर कहा: ऐ अल्लाह ﷻ! यह मेरे अह्ले बयत और मेरे ख़ास लोग हैं, तू इन से गंदगी दूर कर दे और इन्हे ख़ूब पाक फ़रमा दे, हज़रत उम्मे सलमा ﵂ ने कहा: ‘मैं भी आप लोगों के साथ हूँ ? आप ﷺ ने फ़रमाया: ‘तुम भी ख़ैर पर हो’।

→ **यह हदीस हसन सहीह है,इस बाब की यह सब से अहसन रिवायत है।**

→ यह हदीस आयत ‘‘إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت ويطهركم تطهيراً’’ (बेशक अल्लाह ﷻ चाहता है कि अह्ले बयत तुम से गंदगी को दूर कर दे और तुम्हे ख़ूब पाक कर दे)" के ज़ैल में है।

وابن عمر كانوا أعلى حالاً في العلم والشرف وعلو الدرجة من أنس وابن المغفل، والغالب على الظن أن علياً وابن عباس وابن عمر كانوا يقفون بالقرب من رسول الله ﴿ﷺ﴾ ، وكان أنس وابن المغفل يقفان بالبعد منه ، وأيضاً أنه عليه السلام ما كان يبالغ في الجهر امتثالاً لقوله تعالى ( ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها ) وأيضاً فالإنسان أول ما يشرع في القراءة إنما يشرع فيها بصوت ضعيف ثم لا يزال يقوى صوته ساعة فساعة ، فهذه أسباب ظاهرة في أن يكون علي وابن عباس وابن عمر وأبو هريرة سمعوا الجهر بالتسمية من رسول الله ﴿ﷺ﴾ وأن أنساً وابن المغفل ما سمعاه . الرابع : قال الشافعي : لعل المراد من قول أنس كان رسول الله ﴿ﷺ﴾ يستفتح الصلاة بالحمد لله رب العالمين أنه كان يقدم هذه السورة في القراءة على غيرها من السور فقوله الحمد لله رب العالمين المراد منه تمام هذه فجعل هذه اللفظة إسماً لهذه السورة . الخامس : لعل المراد من عدم الجهر في حديث ابن المغفل عدم المبالغة في رفع الصوت ، كما قال تعالى ( ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها ) . السادس : الجهر كيفية ثبوتية ، والإخفاء كيفية عدمية ، والرواية المثبتة أولى من النافية . السابع : أن الدلائل العقلية موافقة لنا ، وعمل علي بن أبي طالب عليه السلام معنا ، ومن اتخذ علياً إماماً لدينه فقد استمسك بالعروة الوثقى في دينه ونفسه .

وأما التمسك بقوله تعالى ( واذكر ربك في نفسك تضرعاً وخيفة ) فالجواب أنا نحمل ذلك على مجرد الذكر ، أما قوله بسم الله الرحمن الرحيم فالمراد منه قراءة كلام الله تعالى على سبيل العبادة والخضوع ، فكان الجهر به أولى .

المسئلة العاشرة : في تفاريع التسمية وفيه فروع : ـ

الفرع الأول : قالت الشيعة : السنة هي الجهر بالتسمية ، سواء كانت في الصلاة الجهرية أو السرية ، وجمهور الفقهاء يخالفونهم فيه .

الفرع الثاني : الذين قالوا التسمية ليست آية من أوائل السور اختلفوا في سبب إثباتها في المصحف في أول كل سورة وفيه قولان : ( الأول ) أن التسمية ليست من القرآن ، وهؤلاء فريقان : منهم من قال إنها كتبت للفصل بين السور ، وهذا الفصل قد صار الآن معلوماً فلا حاجة إلى إثبات التسمية ، فعلى هذا لو لم تكتب لجاز ، ومنهم من قال : إنه يجب إثباتها في المصاحف ، ولا يجوز تركها أبداً . والقول الثاني أنها من القرآن ، وقد أنزلها الله تعالى ، ولكنها آية مستقلة بنفسها ، وليست آية من السورة ، وهؤلاء أيضاً فريقان : منهم من قال : أن الله تعالى كان ينزلها في أول كل سورة على حدة ومنهم من قال : لا ، بل أنزلها مرة واحدة ،

◈ **अल्लामा फ़ख़र राज़ी** की **'तफ्सीर कबीर'** में है:

→ जिस ने अली ؓ को अपने दीन का इमाम बनाया तो उसने अपने दीन और अपने लिए मज़बूत रस्सी (कड़े) को पकड़ लिया।

# تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثامن والثلاثون

عبيد الله بن العباس - عثمان بن عطاء بن ميسرة

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع



محمّد[١] بن يحيى ابن أخي طاهر العلوي، وأبُو الحسَن عَلي بن جابارة القزويني[٢]، وأبُو الحسَين أحمَد بن يحيى الدينوري.

وقدم دمشق.

أَخْبَرَنَا أبُو غالب، وأبُو عبد الله ابنا البنّا، قالا: أنا أبُو عَلي الحسَن بن غالب بن عَلي المقرىء ـ قراءة عليه ـ قال يحيى وأنا حاضر: نا أبُو بكر محمّد بن أحمَد بن محمّد المفيد بجَرْجَرَايا[٣] ـ إملاء ـ نا أبُو عمرو عثمان بن الخطاب يعرف بأبي الدنيا الأشجّ، قال: سمعت عَلي بن أبي طالب قال:

إنه لعهد النبي الأمي ﷺ إليّ: أنه لا يحبّك إلاّ مؤمن ولا يبغضك إلاّ منافق.

قال: وسمعت عَلي بن أبي طالب قال: لما نزلت ﴿وتَعِيها أُذُنٌ واعية﴾[٤] قال النبي ﷺ: «سألتُ الله عز وجل أنْ يجعلها أُذُنك يا عَلي»[٧٦٨٦].

وذكر المفيد مع هذين الحديثين اثني عشر حديثاً.

أَخْبَرَنَا أبُو عبد الله محمّد بن الفضل الفقيه، وأبُو المُظَفَّر عَبْد المنعم بن عَبْد الكريم، وأبُو القاسم زاهر بن طاهر، قالوا: أنا أبُو عثمان سعيد بن محمّد بن أحمَد، أنا أبُو الحسَن عَلي بن أبي جَابارة القزويني ـ بها ـ قال: لقيت عَلى بن[٥] عثمان الخَطّابي المَغْرِبي وسأله بعض الناس: كم بعد الشيخ؟ قال: ثلاثمائة سنة إلاّ خمس سنين، قيل: فكم تذكر من الصحابة؟ قال: كلهم خلا النبي ﷺ، وفاطمة، قيل: فتذكر عَلي بن أبي طالب؟ قال: كيف لا وأنا من تربيته، كنت رسولاً فيما بينه وبين عُثْمَان، فحملني على دابّته، وهذه الشجّة التي ترونها على وجهي أصابتني من ركاب أمير المؤمنين عَلي بن أبي طالب يوم خرج إلى قتال أهل النهروان، قال: وكان بين يديه شيخان قال: هما ابناي وهما شيخان، وهو كهل.

أنْبَانا أبُو الحسَن عَلي بن عبد الله بن محمّد بن عَبْد الباقي بن محمّد بن عبد الله بن محمّد بن موسى بن عيسى بن عبد الله بن محمّد بن أبي جرادة العُقَيلي[٦]، حَدَّثني أبُو الفتح

---

(١) بالأصل: «وأبو الحسن محمد» والمثبت: «والحسن بن محمد» عن تاريخ بغداد والأنساب (الأشج).

(٢) من قوله: المفيد إلى هنا ليس في م.

(٣) جرجرايا: بلد من أعمال النهروان الأسفل بين واسط وبغداد من الجانب الشرقي (معجم البلدان).

(٤) سورة الحاقة، الآية: ١٢.

(٥) كذا بالأصل وم: علي بن عثمان (؟).

(٦) قارن مع المشيخة ١٤٤/ أ.

→ **इब्न असाकिर** ﷬ की **"तारीख़ दिमश्क़"** में है:

→ अबू उमर व उस्मान बिन खत्ताब मारुफ बा अबी दुनिया अशज कहते हैं:

→ मैंने हज़रत अली ﷺ से सुना:जब यह आयत "وتعيها أذن واعية" (और ताकि याद रखनेवाले कान उसे याद रखें) नाज़िल हुई तो नबी ﷺ ने फ़रमाया : 'ए अली ﷺ ! मैं ने अल्लाह ﷻ से दुआ की है कि वह ऐसा तेरे कानों को बना दे।'

# تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الحادي والأربعون

عقيل بن أحمد الوراق - علي بن صالح

دار الفكر

للطباعة والنشر والتوزيع



## ٤٨٩٥ ـ علي بن حَوْشَب
## أبو سُلَيمان الفَزاري ـ ويقال: السُّلَمي ـ[١]

من أهل دمشق.

روى عن أبي سَلاَّم الأَسود، ومكحول، وأبي قَبيل، وأبيه حَوْشَب.

روى عنه: الوليد بن مسلم، ويَحْيَىٰ بن صالح الوُحاظي[٢]، وأبو تَوْبَة الربيع بن نافع، وزيد بن يَحْيَىٰ بن عُبيد.

أَخْبَرَنا أبو المُظَفَّر بن القُشَيري، وأبو القاسم الشَّحَّامي، قالا: أنا أبو سعد الأديب، أنا مُحَمَّد بن بِشر بن العباس، نا أبو لبيد مُحَمَّد بن إدريس، نا سويد بن سعيد، نا الوليد بن مسلم، عَن عَلي بن حَوْشَب الفَزَاري أنه سمع مكحُولاً يحدّث عن بُرَيدة قال: تلا رَسُول الله ﷺ هذه الآية ﴿وتعيها أذن واعية﴾[٣] فقال النبي ﷺ: «سألت الله أن يجعلها أذنك» قال علي[٤]: فما نسيت شيئاً بعد ذلك[٨٣٢٨].

أَنْبَأنا أبو القاسم عَلي بن إبْرَاهيم، أنا أبو القاسم بن الفرات، نا عَبْد الوهاب الكِلاَبي، نا أبو الحسَن بن جَوْصَا، نا مُحَمَّد بن وزير، نا الوليد، نا عَلي بن حَوْشَب الفَزاري.

أنه سمع أبا سَلاَّم الأسود يحدّث عن عُبَادة بن الصّامت قال: بصر رَسُول الله ﷺ برجلٍ في مُؤخر المسجد، عليه ملحفة معصفرة، قال: «ألا رجلٍ يستر بيني وبين هذه النار»؟ ففعل ذلك رجل.

تابعه سُلَيمان بن عَبْد الرَّحمن، عَن الوليد.

أَنْبَأنا أبو عَلي الحداد، أنا أبو نُعَيم، نا.

ح وَأَخْبَرَنا أبو الفتح أحْمَد بن مُحَمَّد بن أحْمَد الحداد ـ إجازة ـ أنا أبو الحسَن عَبْد الرَّحمن بن مُحَمَّد بن عُبَيد الله الهمداني.

---

(١) انظر ترجمته وأخباره في:
تهذيب الكمال ١٣/ ٢٥٩ وتهذيب التهذيب ٤/ ١٩٩ وتقريب التهذيب، والمعرفة والتاريخ ١/ ٥٣٥ و ٦٤٢ و ٢/ ٣٩٥ والتاريخ الكبير ٦/ ٢٧٢ والجرح والتعديل ٦/ ١٨٢.

(٢) اللفظة غير مقروءة بالأصل، واستدركت على هامشه.

(٣) سورة الحاقة، الآية: ١٢.

(٤) يعني علي ابن أبي طالب رضي الله عنه، راجع أسباب النزول للواحدي ص ٢٤٥.

◈ इब्न असाकिर ﵀ की **‘तारीख़ दिमश्क़’** में है :

→ बुरैदह ﵁ कहते हैं : रसूलल्लाह ﷺ ने आयत ‘‘وتعيها أذن واعية’’ (और ताकि याद रखनेवाले कान उसे याद रखें) पढ़ी, फिर फ़रमाया: ‘ए अली! मैंने अल्लाह ﷻ से दुआ की है के वह ऐसा तेरे कानों को बना दे’। हज़रत अली ﵁ फ़रमाते हैं: ‘उसके बाद फिर मैं कभी कुछ ना भुला’।

# سورة الحاقة

(٦٩)

## قوله تعالى: ﴿الحاقة﴾ آية ١

[١٨٩٥٨] عن ابن عباس في قوله: ﴿الحاقة﴾ قال: من أسماء يوم القيامة(١).

## قوله تعالى: ﴿سبع ليال﴾ آية ٧

[١٨٩٥٩] عن الربيع بن أنس في قوله: ﴿سخرها عليهم سبع ليال وثمانية ايام﴾ قال: كان أولها الجمعة(٢).

## قوله تعالى: ﴿ريح﴾ آية ٦

[١٨٩٦٠] حدثنا ابي، حدثنا محمد بن يحيي بن الضريس العبيدي حدثنا ابن فضيل عن مسلم، عن مجاهد، عن ابن عمر قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم «مافتح الله على عاد من الريح التي أهلكوا فيها إلا مثل موضع الخاتم، فمرت بأهل البادية فحملتهم ومواشيهم وأموالهم فجعلتهم بين السماء والأرض. فلما رأى ذلك أهل الحاضرة الريح وما فيها قالوا: هذا عارض ممطرنا فألقت أهل البادية ومواشيهم على أهل الحاضرة»(٣).

## قوله تعالى: ﴿أذن واعية﴾ آية ١٢

[١٨٩٦١] حدثنا أبو زرعة الدمشقي، حدثنا العباس بن الوليد بن صبح الدمشقي حدثنا زيدبن يحيي، حدثنا علي بن حوشب سمعت مكحولاً يقول: لما نزل علي رسول الله صلى الله عليه وسلم ﴿وتعيها أذن واعيه﴾ قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: «سألت ربي أن يجعلها أذن عليٍّ» فكان عليٌّ يقول: ماسمعت من رسول الله صلى الله عليه وسلم شيئاً قط فنسيته(٤).

[١٨٩٦٢] عن بريدة قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لعلي: «إن الله

(١) ـ (٢) الدر ٨ / ٢٦٤ ـ ٢٦٥ .
(٣) ابن كثير ٨ / ٢٣٦
(٤) ابن كثير ٨ / ٢٣٨.



امرني أن أدنيك ولا أقصيك وأن أعلمك وأن تعي، وحق لك أن تعي» فنزلت هذه الآية ﴿وتعيها أذن واعية﴾(١).

## قوله تعالى: ﴿وانشقت السماء فهي يومئذ واهية﴾ آية ١٦

[١٨٩٦٣] قال سماك، عن شيخ من بني أسد عن علي قال: تنشق السماء من المجرة(٢).

## قوله تعالى: ﴿واهية﴾

[١٨٩٦٤] عن ابن عباس في قوله: ﴿فهي يومئذ واهية﴾ قال متخرقة(٣).

## قوله تعالى: ﴿والملك على أرجائها﴾ آية ١٧

[١٨٩٦٥] عن ابن عباس في قوله:

ثمانية﴾ قال: ثمانية صفوف من الملائكة لا يعل

[١٨٩٦٦] حدثنا أبو سعيد يحيي بن س

السمح البصري، حدثنا قبيل حيي بن هاني

العرش ثمانية، مابين موق أحدهم إلى مؤخر

[١٨٩٦٧] حدثنا أبى قال: كتب إلى أح

حدثني أبى، حدثنا إبراهيم بن طهمان، عن

عن جابر قال: قال رسو ل الله صلى الله

ملك من حملة العرش، بعد مابين شحمة أذنه

[١٨٩٦٨] حدثنا أبو زرعة، حدثنا يحيي

جعفر عن سعيد بن جبير في قوله: ﴿ويح

قال: ثمانية من الملائكة(٧).

[١٨٩٦٩] عن ابن زيد قال: لم يسم

وميكائيل ليس من حملة العرش(٨).

تفسير القرآن العظيم

مسندًا

عن رسول الله ﷺ والصحابة والتابعين

تأليف

الإمام الحافظ عبد الرحمن بن محمد

ابن إدريس الرازي ابن أبي حاتم

المتوفى سنة ٣٢٧هـ

تحقيق

أسعد محمد الطيب

المجلد العاشر

إعداد: مركز الدراسات والبحوث بمكتبة نزار الباز

مكتبة نزار مصطفى الباز

مكة المكرمة - الرياض

(١) ـ (٤) الدر ٨ / ٢٦٨ ـ ٢٦٩ .
(٥) ابن كثير ٨/ ٢٣٩.
(٦) ـ (٧) ابن كثير ٨ / ٢٣٩ وقال هذا اسناد جيد
(٨) الدر ٨/ ٢٧١.

◈ अल्लामा राज़ी बिन अबी हातिम ﷺ की **‘तफ्सीर’** में है :

→ जब आयत ‘‘وتعيها أذن واعية’’ (और ताकि याद रखनेवाले कान उसे याद रखें) नाज़िल हुई तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: कि ‘मैंने अल्लाह ﷻ से दुआ की है वह ऐसा अली ﷺ के कानों को बना दे’।

→ हज़रत अली ﷺ फ़रमाते थे: ‘उस के बाद फिर मैंने रसूलल्लाह ﷺ से सुना हुआ कुछ भी ना भुला’।

→ हज़रत बुरैदह ﷺ कहते हैं: रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ﷺ से फ़रमाया: ‘मुझे अल्लाह ﷻ ने हुक्म दिया है कि मैं तुम्हे क़रीब करूँ, दूर ना करू, तुम्हे सिखाऊँ और तुम याद रखो, और तुम्हे हक़ है कि याद रखो फिर यह आयत ‘‘وتعيها أذن واعية’’ नाज़िल हुई।

# الجامع لأحكام القرآن

## والمبين لما تضمنه من السنة وآي الفرقان

تأليف

أبي عبد الله محمد بن أحمد بن أبي بكر القرطبي

( ت ٦٧١ هـ )

تحقيق

الدكتور عبد الله بن عبد المحسن التركي

شارك في تحقيق هذا الجزء

محمد رضوان عرقسوسي

الجزء الحادي والعشرون

مؤسسة الرسالة



خيرُهما؛ قاله ابن عباس ومجاهد[1].

وقيل: إنَّ السائلَ هنا هو الحارثُ بن النعمان الفِهريّ. وذلك أنَّه لمَّا بلغَه قول النبيِّ ﷺ في عليٍّ ﵁: «مَنْ كنتُ مولاه فعليٌّ مولاه» ركبَ ناقته، فجاء حتى أناخ راحلته بالأبطح[2]، ثم قال: يا محمد، أمرتنا عن الله أنْ نشهد أنْ لا إله إلَّا الله وأنَّك رسولُ الله، فقبلناه منك، وأنْ نصلِّي خمساً، فقبلناه منك، ونُزكِّي أموالنا، فقبلناه منك، وأنْ نصومَ شهر رمضان في كلِّ عام، فقبلناه منك، وأنْ نَحُجَّ، فقبلناه منك، ثمَّ لم ترضَ بهذا حتى فَضَّلْتَ ابنَ عمِّك علينا! أفهذا شيءٌ منك أم من الله؟! فقال النبيُّ ﷺ: «والله الذي لا إله إلَّا هو، ما هو إلَّا من الله» فولَّى الحارثُ وهو يقول: اللهم إنْ كان ما يقول محمدٌ حقًّا، فأمطرْ علينا حجارةً من السماء، أو ائتنا بعذابٍ أليم. فوالله ما وصلَ إلى ناقته حتى رماه الله بحجر، فوقع على دماغه فخرج من دبره فقتلَه؛ فنزلت: ﴿سَأَلَ سَآئِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ﴾ الآية[3].

وقيل: إنَّ السائلَ هنا أبو جهل، وهو القائلُ لذلك، قاله الربيع. وقيل: إنَّه قولُ جماعةٍ من كفار قريش[4]. وقيل: هو نوحٌ عليه السلام سأل العذابَ على الكافرين. وقيل: هو رسولُ الله ﷺ أي: دعا عليه الصلاة والسلام بالعقاب، وطلب أنْ

---

(١) معاني القرآن للفراء ٣/ ١٨٢ دون نسبة، وأخرجه الحاكم في مستدركه ٢/ ٥٠٢ عن سعيد بن جبير. ونسبه لابن عباس ومجاهد الماورديُّ في النكت والعيون ٦/ ٨٩، وابن الجوزي في زاد المسير ٨/ ٣٥٧.

(٢) الأبطح: يضاف إلى مكة وإلى منى، لأن المسافة بينه وبينهما واحدة، وربما كان إلى منى أقرب. وهو المحصب، وهو خيف بني كنانة. معجم البلدان ١/ ٧٤.

(٣) النكارة في الخبر ظاهرة، و أخرجه الطبرسي في مجمع البيان ٢٩/ ٥٣ - ٥٤، وفي إسناده انقطاع، ومن لم نعرفهم، وذكره المناوي في فيض القدير ٦/ ٢١٨ وعزاه للثعلبي؛ قال ابن تيمية في مقدمة أصول التفسير ٧٦: الثعلبي في نفسه كان فيه خير ودين، ولكنه كان حاطب ليل، ينقل ما وجد في كتب التفسير من صحيح وضعيف وموضوع. اهـ. وقال الألوسي في روح المعاني ٢٩/ ٥٥: وأنت تعلم أن ذلك القول منه عليه الصلاة والسلام في أمير المؤمنين كرم الله وجهه كان في غدير خم وذلك في أواخر سني الهجرة فلا يكون ما نزل مكياً على المشهور في تفسيره، وقد سمعت ما قيل في مكية هذه السورة. اهـ.

وقوله ﷺ: «من كنت مولاه فعليٌّ مولاه» سلف ١/ ٣٩٨.

(٤) النكت والعيون ٦/ ٩٠.

◈ **'तफ्सीर कुरतबी'** में है:

→ कहा गया है कि हारिस बिन नौमान फ़हरि को जब रसूलल्लाह ﷺ का यह इरशाद पहुँचा जो आप ﷺ ने हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में कहा था कि "मैं जिस का मौला हूँ अली رضي الله عنه भी उसका मौला है" तो वह अपनी ऊंटनी पर सवार होकर आया, इबतह में अपनी ऊंटनी बिठाई और कहा: 'ऐ मुहम्मद! आप ﷺ ने हमें यह हुक्म दिया कि हम यह गवाही दें कि अल्लाह ﷻ के सिवा कोई माबूद नहीं और आप ﷺ अल्लाह ﷻ के रसूल हैं, तो हम ने क़बूल किया, और यह हुक्म दिया कि 5 (पांच) वक़्त की नमाज़ पढ़ें, हम ने क़बूल किया, और यह कि अपने मालों की ज़कात दें तो भी हम ने क़बूल किया, और हर साल रमज़ान के रोज़े रखने का हुक्म दिया हम ने उसे भी क़बूल किया, यह हुक्म दिया कि हज करें, सो उसे भी माना, फिर भी तुम उस पर राज़ी नहीं हुए, हत्ता कि अब तुम ने अपने चचाज़ाद भाई को हम पर फ़ज़ीलत दी, तो क्या यह आपकी तरफ से है या अल्लाह ﷻ की तरफ से? आप ﷺ ने फ़रमाया: 'उस ज़ात की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं! यह अल्लाह ﷻ की तरफ से है', हारिस मुँह मोड़ कर चल दिया और कह रहा था: 'ऐ अल्लाह ﷻ! अगर यह बात सच है जो मुहम्मद ﷺ केह रहे हैं तो हम पर आस्मान से पत्थर बरसा या अज़ाबे अलीम ले आ', अल्लाह ﷻ की क़सम! अभी वह अपनी ऊंटनी तक भी ना पहुँचा था कि अल्लाह ﷻ ने उस पर पत्थर बरसाए, एक पत्थर उसके दिमाग़ से घुसकर पीछे के रास्ते से निकल गया और उसकी जान ले ली, तो यह आयत नाज़िल हुई "سأل سائل بعذاب واقع" (एक सवाल करने वाले ने उस अज़ाब का सवाल किया जो आनेवाला है)।

# الكشف والبيان

المعروف

## تفسير الثعلبي

للإمام الهمام أبي إسحاق أحمد المعروف بالإمام الثعلبي

ت ٤٢٧هـ


دراسة وتحقيق

الإمام أبي محمد بن عاشور

مراجعة وتدقيق

الأستاذ نظير الساعدي


الجزء العاشر


دار إحياء التراث العربي

بيروت - لبنان




﴿للكافرين﴾ وهذا قول الحسن وقتادة قالا: كان هذا بمكّة، لما بعث الله تعالى محمداً ﷺ إليهم وخوّفهم بالعذاب والنكال، قال المشركون بعضهم لبعض: من أهل هذا العذاب اسألوا محمداً لمن هو وعلى مَنْ ينزل وبمَنْ يقع، فبيّن الله سبحانه وأنزل سأل سائل عذاباً واقعاً للكافرين أي على الكافرين، اللام بمعنى على، وهو النضر بن الحرث حيث دعا على نفسه وسأل العذاب فقال: اللّهمّ إن كان هذا هو الحقّ لأنّه نزل به ما سأل يوم بدر، فقتل صبراً ولم يقتل من الأسرى يومئذ غيره وغير عقبة بن أبي معيط، وهذا قول ابن عباس ومجاهد، وسئل سفيان بن عيينة عن قول الله سبحانه: ﴿سأل سائل﴾ فيمن نزلت، فقال: لقد سألتني عن مسألة ما سألني أحد قبلك.

حدّثني أبي عن جعفر بن محمد عن آبائه، فقال: لما كان رسول الله ﷺ بغدير خم، نادى بالناس فاجتمعوا، فأخذ بيد عليّ عليه السلام فقال: «مَنْ كنتُ مولاه فعليٌّ مولاه»[1].

فشاع ذلك وطار في البلاد، فبلغ ذلك الحرث بن النعمان الفهري فأتى رسول الله ﷺ على ناقة له حتّى أتى الأبطح، فنزل عن ناقته وأناخها وعقلها، ثمّ أتى النبيّ ﷺ وهو في ملأ من أصحابه فقال: يا محمد أمرتنا عن الله أن نشهد أن لا إله إلاّ الله وأنّك رسول الله فقبلناه منك، وأمرتنا أن نصلّي خمساً فقبلناه منك، وأمرتنا بالزكاة فقبلنا، وأمرتنا بالحجّ فقبلنا، وأمرتنا أن نصوم شهراً فقبلنا، ثمّ لم ترض بهذا حتّى رفعت بضبعي ابن عمّك ففضلته علينا وقلت: من كنت مولاه فعلي مولاه، فهذا شيء منك أم من الله تعالى؟

فقال: «والّذي لا إله إلاّ هو هذا من الله» فولّى الحرث بن النعمان يريد راحلته وهو يقول: اللهمّ إن كان ما يقوله حقاً فأمطر علينا حجارة من السماء، أو ائتنا بعذاب أليم، فما وصل إليها حتّى رماه الله بحجر فسقط على هامته وخرج من دبره فقتله، وأنزل الله سبحانه: ﴿سأل سائل بعذاب واقع للكافرين ليس له دافع﴾ [٣٢][2].

ومَنْ قرأ بغير همز فله وجهان: أحدهما أنّه لغة في السؤال، تقول العرب: سأل سائل وسال سال مثل نال ينال، وخاف يخاف، والثاني: أن يكون من السيل، قال زيد بن ثابت وعبد الرحمن بن زيد بن أسلم، سال واد من أودية جهنم يقال له سائل.

﴿من الله ذي المعارج﴾. قال ابن عباس: يعني ذي السماوات، وقال ابن كيسان: المعارج الفتق الذي بين سمائين وأرضين، قتادة: ذي الفواصل والنعم، سعد بن جبير: ذي الدرجات، القرطبي: ذي الفضائل العالية، مجاهد: معارج الملائكة.

---

١) مسند أحمد: ١ / ٨٤، و٥ / ٣٤٧، والمستدرك: ٣ / ١١٠، ومصنّف ابن أبي شيبة: ٧ / ٤٩٥.

٢) تفسير القرطبي: ١٨/٢٧٩ مورد الآية.

◈ **'तफ्सीर सआलबी'** में है:

→ अबू जाफ़र बिन मुहम्मद इब्न अबा से रिवायत करते हुए कहते हैं: जब रसूलल्लाह ﷺ ग़दीर ख़ुम में थे तो आप ﷺ ने हज़रत अली رضي الله عنه का हाथ पकड़कर फ़रमाया: 'मैं जिसका मौला हूँ अली رضي الله عنه भी उसका मौला है, यह बात सारे मुल्क में फेल गई, हारिस बिन नौमान तक भी पहुंची, वह अपनी ऊंटनी पर सवार होकर रसूलल्लाह ﷺ के पास आया, इबतह में अपनी ऊंटनी से उतरा, उसे बिठाया और बांध कर नबी ﷺ के पास पहुँचा, उस वक्त आप सहाबा की एक जमाअत में बैठे हुए थे, उस ने कहा: ऐ मुहम्मद ﷺ ! आपने हमें यह हुक्म दिया के हम गवाही दें कि अल्लाह ﷻ के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह ﷻ के रसूल हैं, तो हम ने क़बूल किया, और यह हुक्म दिया कि 5 (पांच) वक्त की नमाज़ पढ़ें, हम ने क़बूल किया, और यह के अपने मालों की ज़कात दें तो भी हम ने क़बूल किया, और हर साल रमज़ान के रोज़े रखने का हुक्म दिया हम ने उसे भी क़बूल किया, यह हुक्म दिया कि हज करें, सो उसे भी माना, फिर भी तुम उस पर राज़ी नहीं हुए, हत्ता कि अब तुम ने अपने चचाज़ाद भाई को हम पर फ़ज़ीलत दी, तो क्या यह आपकी तरफ से है या अल्लाह ﷻ की तरफ से ? आप ﷺ ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं! यह अल्लाह ﷻ की तरफ से है, हारिस मुँह मोड़ कर चल दिया और कह रहा था: ऐ अल्लाह ﷻ! अगर यह बात सच है जो मुहम्मद ﷺ केह रहे हैं तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या अज़ाब अलीम ले आ, अल्लाह ﷻ की क़सम! अभी वह अपनी ऊंटनी तक भी ना पहुँचा था कि अल्लाह ﷻ ने उस पर पत्थर बरसाए, एक पत्थर उस की खोपड़ी पर लगा और पीछे के रास्ते से निकल गया और उस की जान ले ली, तो यह आयत नाज़िल हुई "سأل سائل بعذاب واقع" (एक सवाल करनेवाले ने उस अज़ाब का सवाल किया जो आने वाला है)।

# فتح القدير

## الجامع بين فني الرواية والدراية من علم التفسير

تأليف

**محمد بن علي بن محمد الشوكاني**

المتوفى بصنعاء ١٢٥٠ هـ

حققه وخرج أحاديثه

**الدكتور عبد الرحمن عميرة**

وضع فهارسه وشارك في تخريج أحاديثه

**لجنة التحقيق والبحث العلمي بدار الوفاء**

الجزء الخامس

---



الكفارات عتق رقبة (١) . وأخرج الحارث بن أبي أسامة عن عائشة قالت: لما حلف أبو بكر الا ينفق على مسطح فأنزل الله : ﴿ قد فرض الله لكم تحلة أيمانكم ﴾ فأحلّ يمينه وأنفق عليه . وأخرج ابن عديّ وابن عساكر عن عائشة في قوله : ﴿ وإذ أسر النبيّ إلى بعض أزواجه حديثا﴾ قالت : أسرّ إليها أن أبا بكر خليفتي من بعدي. وأخرج ابن عدّي ، وأبو نعيم في الصحابة ، والعشاري في فضائل الصدّيق ، وابن مردويه وابن عساكر من طرق عن عليّ وابن عباس قال: والله إن إمارة أبي بكر وعمر لفي الكتاب :﴿ وإذ أسّر النبيّ إلى بعض أزواجه حديثا ﴾ قال لحفصة : أبوك وأبو عائشة واليا الناس بعدي ، فإياك أن تخبري أحدا بهذا . قلت : وهذا ليس فيه أنه سبب نزول قوله : ﴿ يأيها النبيّ لم تحرّم ما أحل الله لك ﴾ بل فيه أن الحديث الذي أسرّه ﷺ هو هذا فعلى فرض أن له إسنادا يصلح للاعتبار هو معارض بما سبق من تلك الروايات الصحيحة وهي مقدّمة عليه ومرجحة بالنسبة إليه .

وأخرج ابن جرير وابن مردويه عن ابن عباس في قوله : ﴿ فقد صغت قلوبكما ﴾ قال: زاغت وأثمت . وأخرج ابن المنذر عنه قال : مالت . وأخرج ابن عساكر من طريق عبد الله بن بريدة عن أبيه في قوله : ﴿ وصالح المؤمنين ﴾ قال : أبو بكر وعمر . وأخرج ابن عساكر عن ابن مسعود مثله . وأخرج الطبراني وابن مردويه ، وأبو نعيم في فضائل الصحابة من وجه آخر عنه مثله . وأخرج لابن مردويه عن ابن عمر وابن عباس مثله . وأخرج الحاكم عن أبي أمامة مرفوعا مثله (٢) . وأخرج ابن أبي حاتم ، قال السيوطي : بسند ضعيف (٣) ، عن عليّ مرفوعا قال : هو عليّ بن أبي طالب . وأخرج ابن مردويه عن أسماء بنت عميس سمعت رسول الله ﷺ يقول : « ﴿وصالح المؤمنين ﴾ : عليّ بن أبي طالب » . وأخرج ابن مردويه وابن عساكر عن ابن عباس في قوله : ﴿ وصالح المؤمنين ﴾ قال : هو عليّ بن أبي طالب . وأخرج الطبراني وابن مردويه عن بريدة في قوله : ﴿ ثيبات وأبكارا﴾ قال :وعد الله نبيه ﷺ في هذه أن يزوّجه بالثيب آسية امرأة فرعون، وبالبكر مريم بنت عمران .

﴿ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٨﴾ ﴾ .

---

(١) صححه الحاكم ٢ / ٥٩٣ ، ٥٩٤ على شرط البخاري ووافقه الذهبي .
(٢) صححه الحاكم ٣ / ٦٩ وقال الذهبي : « قلت : موسى واه » .
(٣) السيوطي في الدر المنثور ٦ / ٢٤٤ وقال ابن كثير ٧ / ٥٦ : « إسناده ضعيف وهو منكر جدا »

◈ अल्लामा शौकानी ﷫ की **'फतहल क़दीर'** में आयत ''وإن تظاهرا عليه فإن الله هو مولاه وجبرئيل وصالح المؤمنين، والملائكة بعد ذلك ظهير'' (और अगर तुम नबी के ख़िलाफ़ एक दूसरे की मदद करोगी, पास यक़ीनन उसका कारसाज़ अल्लाह ﷻ है, और जिब्राईल ؑ हैं, और नेक अह्ले ईमान, और उनके अलावा फ़रिश्ते भी मदद करने वाले हैं) के ज़ैल में है:

→ इब्न मरदविया ﷫ ने रिवायत की है, हज़रत अस्मा बिन्त उमेस ؓ फ़रमाती हैं: मैंने हुज़ूर ﷺ को फ़रमाते हुए सुना ''وصالح المؤمنين'' से मुराद अली ؓ हैं।

→ इब्न मरदविया और इब्न असाकिर ने हज़रत इब्न अब्बास ؓ से नक़ल किया है कि : ''وصالح المؤمنين'' से मुराद अली ؓ हैं।

# السُّنَّة

لأبي بكر أحمد بن محمد
ابن هارون بن يزيد الخلال
المتوفى سنة ٣١١هـ

(١ - ٣)

دراسة وتحقيق
الدكتور عطية الزهراني

دار الراية
للنشر والتوزيع

٧٣٦ ـ أخبرنا محمد بن علي قال : ثنا مهنى قال : ثنا يوسف بن يعقوب صاحب السلعة (١) قال : ثنا سليمان التيمي (٢) عن أبي مجلز (٣) ، عن قيس بن عباد (٤) قال : قال علي أنى من أول من يجثو للخصومة بين يدي الله عز وجل يوم القيامة (٥) .

٧٣٧ ـ وأخبرني حرب (٦) قال : ثنا سعيد بن منصور (٧) قال : ثنا صالح بن موسى الطائي (٨)، عن معاوية بن إسحاق (٩)، عن عائشة بنت طلحة (١٠)، عن عائشة أم المؤمنين قالت : إني لفي بيتي ورسول الله ﷺ وأصحابه في الفناء (١١) وبيني وبينهم الستر إذ أقبل طلحة فقال رسول الله ﷺ : « من سره أن ينظر إلى رجل يمشي على الأرض قد قضى نحبه فلينظر إلى طلحة » (١٢).

٧٣٨ ـ أخبرنا الدوري (١٣) قال : ..............................

---

(١) السدوسي أبو يعقوب السلمي الضبعي ، صدوق من التاسعة ، تقريب ٢/٣٨٤ .
(٢) ابن طرخان التيمي أبو المعتمر .
(٣) لاحق بن حميد .
(٤) القيسي الضبعي أبو عبد الله .
(٥) إسناده حسن ، والحديث أخرجه البخاري ، كتاب المغازي ، باب قتل أبي جهل حديث (٣٩٦٥) فتح الباري ٧/٢٩٦ .
(٦) ابن إسماعيل الكرماني .
(٧) ابن شعبة الخراساني .
(٨) صوابه : صالح بن موسى بن إسحاق الطلحي التيمي الكوفي : متروك من الثامنة ، تقريب ١/٣٦٣ .
(٩) ابن طلحة بن عبيد الله التيمي أبو الأزهر ، صدوق ربما وهم ، تقريب ٢/٢٥٨ .
(١٠) عائشة بنت طلحة بن عبيد الله .
(١١) في الأصل : في الفنى.
(١٢) إسناده لا يصح لأن فيه صالح بن موسى متروك الحديث . قال الهيثمي : رواه أبو يعلى والطبراني في الأوسط وفيه صالح بن موسى وهو متروك، مجمع الزوائد ٩/١٤٨ .
(١٣) عباس بن محمد الدوري .

٤٦٩

◈ **अबू बकर अहमद बिन मुहम्मद बिन हारुन बिन यज़ी ख़ालाल ﷺ की ''السنة'' में है:**

→ हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं: 'क़यामत के दिन अल्लाह ﷻ के सामने फ़ैसले के लिए सब से पहले मुझे लाया जायेगा (अंबिया वग़ैरा के बाद)।

◈ **मुहक़्क़िक़ डॉक्टर अतिया ज़हरानी कहते हैं : इस की सनद हसन है।**

رضي الله عنها[1].

٨١ ـ و أنبأني الإمام الحافظ أبوالعلاء الحسن بن أحمد العطار الهمداني إجازة، أخبرنا الحسن بن أحمد الحداد، أخبرنا أحمد بن عبدالله الحافظ، أخبرنا الحسن بن علي بن الخطاب، حدثنا محمّد بن عثمان بن أبي شيبة، ٥ حدثنا أحمد بن يونس، حدثنا أبوبكر بن عياش، عن نصير، عن سليمان الأحمسي، عن أبيه، عن علي قال: والله مانزلت آية إلّا وقد علمت فيم أنزلت، واين نزلت، انّ ربّي وهب لي قلباً عقولاً ولساناً سؤولاً[2].

٨٢ ـ وأخبرنا الشيخ الإمام الزاهد الحافظ أبوالحسن عليّ بن أحمد العاصمي الخوارزمي، أخبرنا شيخ القضاة اسماعيل بن أحمد الواعظ، ١٠ أخبرنا والدي أبوبكر أحمد بن الحسين البيهقي، أخبرنا أبوعبدالله الحافظ، حدثنا أبوالعباس محمّد بن يعقوب، حدثنا العباس بن محمّد بن حاتم الدوري، حدثنا أحمد بن يونس، حدثنا أبوبكر بن عياش، عن نصير، عن سليمان الأحمسي، عن أبيه، عن علي قال علي رضي الله عنه: مانزلت آية الا وقد علمت فيما نزلت، واين أنزلت وعلى من نزلت، إنّ ربي وهب لي ١٥ لساناً طلقاً وقلباً عقولاً[3].

٨٣ ـ و بهذا الاسناد عن أحمد ... الحافظ، حدثنا أبوالعباس محمّد ... الدوري، حدثنا يحيى بن معين، ... ١٩ سعيد، عن سعيد بن المسيب قال: ما ...

(١) تاريخ مدينة دمشق ترجمة الإمام علي عليه ... وروى نظيره أحمد بن حنبل في فضائل الصحا...

(٢) رواه ابونعيم في حلية الاولياء ١/٦٧.

(٣) انظر الطبقات الكبرى لابن سعد ٢/٣٣٨.

المناقب
تأليف
الموفق بن أحمد بن محمد المكي
الخوارزمي

ابن محمد بن عمر بن علي بن أبي طالب حدثني أبي عن أبيه جعفر عن أبيه محمد بن عبد الله عن أبيه محمد عن أبيه عمر عن أبيه علي . قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : « يا علي إن الله أمرني أن أدنيك وأعلمك لتعي ، وأنزلت هذه الآية وتعيها أذن واعية فأنت أذن واعية لعلمي » . حدثنا الحسن بن علي بن الخطاب ثنا محمد بن عثمان بن أبي شيبة ثنا أحمد بن يونس ثنا أبو بكر بن عياش عن نصير عن سليمان الأحمسي عن أبيه عن علي ، قال والله ما نزلت آية إلا وقد علمت

(١) ل ز : المسكنة . (٢) كذا في الأصلين : ولعله يناله على تأويل القرآن .



فيم أنزلت ، وأين أنزلت ، إن ربي وهب لي قلبا عقولا ، ولسانا سؤولا

حدثنا محمد بن أحمد بن الحسن ثنا جعفر ... ابن مرة عن أبي البختري قال سئل ... أعطيت ، وإذا سكت ابتديت . حدثنا ... محمد بن الحسين بن حميد ثنا محمد بن ... عن جده عيسى بن زيد عن اسماعيل ... ابن عمر عن قد عن علي . قال : أنا ... فلان وفلان » حدثنا أبو بكر بن خلاد ... ابن حفص الطنافسي ثنا زياد بن عبد ... عبد الرحمن بن معمر عن سليمان ـ ...

حلية الأولياء
وطبقات الأصفياء

الجزء الأول

◈ मौक़फ़ बिन अहमद मक्की की **'मनाक़िब'** में है:

→ हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं: 'कोई आयत नहीं नाज़िल हुई, मगर मैं जानता हूँ किस बारे में नाज़िल हुई, कहा नाज़िल हुई, और किस पर नाज़िल हुई, मेरे रब ने मुझे बोलनेवाली ज़बान और समझनेवाला दिल दिया है।'

◈ **'हुलयतुल अवलिया'** में है:

→ सुलेमान अहमस अपने वालिद के हवाले से हज़रत अली ﷺ का क़ौल नक़ल करते हैं: कोई आयत नहीं नाज़िल हुई मगर मैं जानता हूँ किस बारे में नाज़िल हुई, और कहाँ नाज़िल हुई, मेरे रब ने मुझे बोलनेवाली ज़बान और समझनेवाला दिल दिया है।

جرير عن سعيد بن جبير فى قوله : ﴿ وكونوا مع الصادقين ﴾ قال : مع أبى بكر وعمر . وأخرج ابن جرير وابن أبى حاتم وأبو الشيخ وابن عساكر عن الضحاك فى الآية قال: مع أبى بكر وعمر وأصحابهما . وأخرج ابن مردويه عن ابن عباس قال : مع على بن أبى طالب . وأخرج ابن عساكر عن أبى جعفر قال : مع الثلاثة الذين خلفوا .

﴿ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ الْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ (١٢٠) وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (١٢١) ﴾ .

فى قوله : ﴿ ما كان لأهل المدينة ﴾ إلخ زيادة تأكيد لوجوب الغزو مع رسول الله ﷺ وتحريم التخلف عنه ، أى ما صح وما استقام لأهل المدينة ﴿ ومن حولهم من الأعراب ﴾ كمزينة وجهينة وأشجع وأسلم وغفار ﴿ أن يتخلفوا عن رسول الله ﴾ ﷺ فى غزوة تبوك ، وإنما خصهم الله سبحانه لأنهم قد استنفروا فلم ينفروا ، بخلاف غيرهم من العرب فإنهم لم يستنفروا مع كون هؤلاء لقربهم وجوارهم أحق بالنصرة والمتابعة لرسول الله ﷺ ﴿ ولا يرغبوا بأنفسهم عن نفسه﴾ أى وما كان لهم أن يرغبوا بأنفسهم عن نفسه فيشحون بها ويصونونها ، ولا يشحون بنفس رسول الله ويصونونها كما شحوا بأنفسهم وصانوها ، يقال : رغبت عن كذا، أى ترفعت عنه ، بل واجب عليهم أن يكابدوا معه المشاق ، ويجاهدوا بين يديه أهل الشقاق ، ويبذلوا أنفسهم دون نفسه ، وفى هذا الإخبار معنى الأمر لهم مع ما يفيده إيراده على هذه الصيغة من التوبيخ لهم والتقريع الشديد . والتهييج لهم ، والإزراء عليهم . والإشارة بقوله: ﴿ذلك ﴾ إلى ما يفيده السياق من وجوب المتابعة لرسول الله ﷺ ، أى ذلك الوجوب عليهم بسبب أنهم مثابون على أنواع المتاعب وأصناف الشدائد . والظمأ : العطش . والنصب: التعب . والمخمصة : المجاعة الشديدة التى يظهر عندها ضمور البطن . وقرأ عبيد بن عمير «ظماء » بالمد . وقرأ غيره بالقصر ، وهما لغتان مثل خطأ وخطاء . و « لا » فى هذه المواضع زائدة للتأكيد . ومعنى ﴿ فى سبيل الله ﴾ فى طاعة الله .

قوله : ﴿ ولا يطؤون موطئا يغيظ الكفار ﴾ أى لا يدوسون مكانا من أمكنة الكفار بأقدامهم أو بحوافر خيولهم أو بأخفاف رواحلهم ، فيحصل بسبب ذلك الغيظ للكفار . والموطئ : اسم مكان ، ويجوز أن يكون مصدرا ﴿ ولا ينالون من عدو نيلا ﴾ أى يصيبون من عدوهم قتلا أو أسرا أو هزيمة أو غنيمة ، وأصله : من نلت الشيء أنال ، أى أصيب . قال الكسائى : هو من قولهم : أمر منيل منه ، وليس هو من التناول ، إنما التناول من نلته بالعطية . قال غيره :

◈ अल्लामा शौकानी ﷺ की **‘फ़तहलक़दीर’** में:

“يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله وكونوا مع الصادقين” (ऐ ईमानवालो! अल्लाह ﷻ से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ) के ज़ैल में है:

→ इब्न मरदविया ﷺ ने इब्न अब्बास ﷺ से रिवायत किया है: **‘या’नि अली बिन अबी तालिब ﷺ के साथ हो जाओ’।**

أخبرتنا أبو الحسن بن قُبَيس، نا ـ وأبو النجم بدر بن عَبْد الله، أنا ـ أبو بكر الخطيب[1]، نا عَبْد الله بن عَلي بن مُحَمّد بن بشران، أنا عَلي بن عمر الحافظ، أنا أبو نصر حبشون بن موسى بن أيوب الخلال، نا عَلي بن سعيد الرّملي، نا ضَمْرَة بن ربيعة القرشي، عَن ابن شَوْذَب، عَن مطر الورّاق، عَن شَهر بن حَوْشَب، عَن أبي هريرة قال:

من صام يوم ثماني عشرة من ذي الحجة كُتب له صيام ستين شهراً، وهو يوم غدير خُمّ لمّا أخذ النبي ﷺ بيد عَلي بن أبي طالب فقال: «ألستُ وليّ المؤمنين؟» قالوا: بلى يا رَسُول الله، قال: «مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه»، فقال عمر بن الخطّاب: بَخٍ بَخٍ لك يا ابن أبي طالب، أصبحتَ مولاي، ومولى كل مسلم، فأنزل الله عز وجل: ﴿اليوم أكملتُ لكم دينكم﴾[2] ومن صام يوم سبعة وعشرين من رجب كُتب له صيام ستين شهراً، وهو أول يوم نزل جبريل[3] بالرسالة.

قال الخطيب: اشتهر هذا الحديث برواية حَبْشون، وكان يقال: إنه تفرد به، وقد تابعه عليه أحْمَد بن عَبْد الله بن النّيري[4]، فرواه عن عَلي بن سعيد.

[قال الخطيب:] أخبرنيه الأزهري، نا مُحَمّد بن عَبْد الله ابن أخي ميمي، نا أحْمَد بن عَبْد الله بن العباس بن سالم بن مهران المعروف بابن النيري[4]. إملاء ـ نا عَلي بن سعيد الشامي، نا ضَمْرَة بن ربيعة، عَن ابن شَوْذَب، عَن مطر، عَن شهر بن حوشب، عَن أبي هريرة قال: من صام يوم ثمانية عشر من ذي الحجة وذكر مثل ما تقدم أو نحوه.

أخبرناه عالياً أبو بكر بن المَزْرَفي[5]، نا أبو الحسَين بن المهتدي، نا عمر بن أحْمَد، نا أحْمَد بن عَبْد الله بن أحْمَد، نا عَلي بن شعيب الرّقّي، نا ضَمْرَة عن ابن شَوْذَب، عَن مطر الوراق، عَن شَهر بن حَوْشَب، عَن أبي هريرة قال:

لما أخذ رَسُول الله ﷺ بيد عَلي بن أبي طالب فقال: «ألستُ أولى بالمؤمنين؟» قالوا: نعم يا رَسُول الله، قال: فأخذ بيد عَلي بن أبي طالب فقال: «مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه». فقال له عمر بن الخطاب: بَخٍ بَخٍ لك يا ابن أبي طالب، أصبحتَ مولاي، ومولى كلّ

(١) رواه الخطيب البغدادي في تاريخ بغداد ٨/ ٢٩٠ ضمن ترجمة حبشون بن موسى بن أيوب، أبي نصر الخلال. والبداية والنهاية بتحقيقنا ٧/ ٣٨٦.
(٢) سورة المائدة، الآية: ٣.
(٣) في تاريخ بغداد: نزل جبريل على محمد ﷺ بالرسالة.
(٤) بالأصل: «اليسري» ورسمها في م: «السرى» والمثبت عن « ز »، وتاريخ بغداد.
(٥) كذا بالأصل وم، وفي المطبوعة: المزرقي، تصحيف.



مسلم، قال: فأنزل الله عز وجل: ﴿اليوم أكملتُ لكم دينكم﴾ قال أبو هريرة: وهو يوم غدير خم، من صام ـ يعني ـ ثمانية عشر من ذي الحجة كتب الله له صيام ستين شهراً.

وأخبرناه أبو القاسم بن السَمَرْقندي، أنا أبو الحسَين بن النّقُور، أنا مُحَمّد بن عَبْد الله بن الحسَين الدّقّاق، نا أحْمَد بن عَبْد الله بن أحْمَد بن العباس بن سالم بن مهران المعروف بابن النيري البزاز ـ إملاء ـ لثلاث بقين من جُمَادى الآخرة سنة ثمان عشرة وثلاثمائة، نا عَلي بن سعيد الشامي، نا ضَمْرَة بن ربيعة، عَن ابن شَوْذَب، عَن مطر الورّاق، عَن شهر بن حَوْشَب، عَن أبي هريرة قال:

مَنْ صام يوم ثمانية عشر من ذي الحجة كتب الله له صيام ستين شهراً، وهو يوم غدير خُمّ، لمّا أخذ رَسُول الله ﷺ بيد عَلي بن أبي طالب فقال: «ألستُ مولى المؤمنين؟» قالوا: نعم يا رَسُول الله، فأخذ بيد عَلي بن أبي طالب فقال: «مَنْ كنتُ مولاه فعليّ مولاه»، فقال له عمر بن الخطاب: بَخٍ بَخٍ يا ابن أبي طالب، أصبحتَ مولاي ومولى كلّ مسلم.

قال[1]: فأنزل الله تبارك وتعالى ﴿اليوم أكملت لكم دينكم﴾[2] وقال[1] أيضاً: من صام يوم سبع عشرة أو سبع وعشرين من رجب كتب له صيام ستين شهراً، وهو اليوم الذي هبط فيه جبريل على النبي ﷺ بالرسالة أول يوم هبط فيه[٨٧٣٩].

ورُوي عن أبي هريرة عن عمر:

أخبرناه أبو القاسم زاهر بن طاهر قال: قُرئ [...] سعيد أحْمَد بن إبْرَاهيم بن أبي العباس الدّنْدَاقاني [...] إبْرَاهيم، نا أحْمَد بن روح الحافظ، نا أحْمَد بن يَحْيَى [...] الثقفي، نا شاذان، نا عِمْرَان بن مسلم، عَن سهيل، [...] الخطاب قال: قال رَسُول الله ﷺ: «مَنْ كنت مولاه فعـ[...]

أخبرنا أبو القاسم بن أبي بكر، أنا أبو القاسم بن [...] عَبْد الله بن عدي الجُرْجاني[5]، نا ابن بَدْرَان[6]، نا الـ[...]

(١) القائل أبو هريرة.
(٢) سورة المائدة، الآية: ٣. (٣) في المطبوعة: البجيري.
(٤) هذه النسبة ضبطت عن الأنساب نسبة إلى الدندانقان وهي بليدة على عشرة فراسخ من مرو في الرمل. (الأنساب).
(٥) رواه ابن عدي في الكامل في ضعفاء الرجال ٦/ ٣٨١ ضمن ترجمة مالك بن الحسن بن الحويرث.
(٦) كذا بالأصل وم و« ز »، والمطبوعة، وفي ابن عدي: ابن زيدان.

◈ **इब्न असाकिर** ﷺ की **'तारीख़ दिमश्क़'** में है: हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं:

→ जिसने 18 (अठारह) ज़िलहिज्जा का रोज़ा रखा उसके लिए साठ (60) महीने के रोज़े लिखे जाएँगे, और यह दीन ग़दीर ख़ुम वाला है, जब रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ؓ का हाथ पकड़कर इरशाद फ़रमाया: 'क्या मैं मो'मिनीन का वाली नहीं हूँ'? लोगों ने कहा: 'क्यों नहीं ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ? आप ﷺ ने फ़रमाया: 'मैं जिस का मौला हूँ अली ؓ भी उस का मौला है', हज़रत उमर ؓ ने फ़रमाया: 'ऐ इब्न अबी तालिब ؓ ! मुबारक हो, तुम ने सुबह व शाम इस हाल में की कि तुम हर मुसलमान के मौला थे, फिर यह आयत नाज़िल हुई ''اليوم أكملت لكم دينكم''।

→ दूसरी रिवायत में है: जब रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ؓ का हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया: 'क्या मैं मो'मिनीन का वाली नहीं हूँ'? लोगों ने कहा: 'हाँ, ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ? आप ﷺ ने हज़रत अली ؓ का हाथ पकडे हुए फ़रमाया: 'मैं जिस का मौला हूँ अली भी ؓ उसका मौला है', हज़रत उमर ؓ ने फ़रमाया: 'ऐ इब्न अबी तालिब ؓ! मुबारक हो, तुम ने सुबह व शाम इस हाल में की कि तुम हर मुसलमान के मौला थे', फिर यह आयत नाज़िल हुई ''اليوم أكملت لكم دينكم''। हज़रत अबू हुरैरह ؓ फ़रमाते हैं: **'और यह दिन ग़दीर ख़ुम वाला है, और जिसने 18 (अठारह ज़िल्हिज्जा)-या'नी ग़दीर ख़ुम के-रोज़ रखा उस के लिए 60 (साठ) महीने के रोज़े लिखे जायेगे'।**

→ एक और रिवायत में है: जिस ने 18 (अठारह) ज़िलहिज्जा का रोज़ा रखा उस के लिए अल्लाह ﷻ साठ महीने के रोज़े लिखेगा, और यह दिन ग़दीर ख़ुम वाला है,जब रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ؓ का हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया: 'क्या मैं मो'मिनीन का मौला नहीं हूँ ? लोगों ने कहा: 'हाँ, ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ? आप ﷺ ने फ़रमाया: 'मैं जिस का मौला हूँ अली ؓ भी उसका मौला है', हज़रत उमर ؓ ने फ़रमाया: 'ऐ इब्न अबी तालिब ؓ! मुबारक हो, तुमने सुबह व शाम इस हाल में की कि तुम हर मुसलमान के मौला थे, फिर यह आयत नाज़िल हुई ''اليوم أكملت لكم دينكم''।

بغية الرائد
في تحقيق
# مجمع الزوائد ومنبع الفوائد

للحافظ نور الدين علي بن أبي بكر الهيثمي
المتوفى ٨٠٧ هـ

تحقيق
عبد الله محمد الدرويش

## الجزء التاسع

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع



«أيها النَّاسُ مَنْ أَبْغَضَنَا أَهْلَ البَيْتِ حَشَرَهُ اللَّهُ يَوْمَ القِيامَةِ يَهُودِيًّا» فقلت: يا رسول الله، وإن صام وصلّى؟ قال: «وَإِنْ صَامَ وَصَلَّى وزَعَمَ أَنَّهُ مُسْلِمٌ؟ احْتَجَرَ بِذَلِكَ مِنْ سَفْكِ دَمِهِ، وَأَنْ يُؤَدِّيَ الجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ. مُثِّلَ لِي أُمَّتِي فِي الطِّينِ، فَمَرَّ بِي أَصْحَابُ الرَّايَاتِ، فَاسْتَغْفَرْتُ لِعَلِيٍّ وشِيعَتِهِ».

رواه الطبراني في الأوسط، وفيه: من لم أعرفهم.

١٥٠١٠ ـ وعن أبي جميلة: أن الحسن بن علي حين قُتل علي، استُخلف فبينا هو يصلّي بالنَّاس إذ وثب إليه(١) رجل فطعنه بخنجر في وركه، فتمرَّض منها أشهراً، ثم قام فخطب على المِنبر، فقال: يا أهل العراق، اتقوا الله فينا، فإنا أمراؤكم وضِيفانكم، ونحن أهل البيت الذين قال الله عز وجل: ﴿إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ البَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيراً﴾(٢) فما زال يومئذ يتكلم حتى ما ترى(٣) في المسجد إلّا باكياً.

رواه الطبراني ورجاله ثقات.

١٥٠١١ ـ وعن عبد الله بن عباس، أن رسول الله ﷺ قال:

«بُغْضُ بَنِي هَاشِمٍ والأَنْصَارِ كُفْرٌ وَبُغْضُ العَرَبِ نِفَاقٌ».

رواه الطبراني، وفيه: من لم أعرفهم.

١٥٠١٢ ـ وعن سلمان قال:

أنزلوا آلَ محمد بمنزلة الرَّأس من الجسد، وبمنزلة العينين من الرأس، فإن الجسد لا يهتدي إلا بالرأس، وإن الرأس لا يهتدي إلا بالعينين.

رواه الطبراني، وفيه: زياد بن المنذر، وهو متروك.

---

١٥٠١٠ ـ ١ ـ في الكبير رقم (٢٧٦١): عليه.
٢ ـ سورة الأحزاب، الآية: ١٣.
٣ ـ في الكبير: يرى.
١٥٠١١ ـ رواه الطبراني في الكبير رقم (١١٣١٢) بسند ضعيف جداً.
١٥٠١٢ ـ رواه الطبراني في الكبير رقم (٢٦٤٠).

◈ इमाम हैसमी ﷺ की **'मजमा अल जवाइद व मम्ब अल फ़वाइद'** में है:

→ (हज़रत अली ﷺ ने फ़रमाया): हम अह्ले बयत हैं जिन के बारे में अल्लाह ﷻ का इरशाद है: ए अह्ले बयत! बेशक अल्लाह ﷻ चाहता है तुमसे गंदगी दूर कर दे और तुम्हे खूब पाक कर दे। ("إنـمـا يـريـد الـلـه ليـذهب عنكم الرجس أهل البيت ويطهركم تطهيراً")

عبد الرحمن بن زيد بن أسلم يقول في قوله تعالى: ﴿أمة مقتصدة﴾ قال: المقتصدة أهل طاعة الله وهؤلاء أهل الكتاب.

[٦٦٠٥] حدثنا محمد بن يحيي، ثنا العباس بن الوليد، ثنا يزيد عن سعيد عن قتادة ﴿منهم أمة مقتصده﴾ يقول: على كتابه.

قوله تعالى: ﴿وكثير منهم﴾

[٦٦٠٦] حدثنا أبى ثنا أبو حذيفه، ثنا شبل عن ابن أبي نجيح عن مجاهد ﴿وكثير منهم﴾ يهود ساء مايعملون.

قوله تعالى: ﴿ساء مايعملون﴾

[٦٦٠٧] حدثنا محمد بن يحيي ثنا العباس، ثنا يزيد عن سعيد عن قتادة قال: ثم ذم أكثر القوم فقال: ﴿وكثير منهم ساء مايعملون﴾

قوله تعالى: ﴿ياأيها الرسول﴾ آية ٦٧

[٦٦٠٨] قرأت على محمد بن الفضل، ثنا محمد بن علي، ثنا محمد بن مزاحم، ثنا بكير بن معروف عن مقاتل بن حيان قوله: ﴿ياأيها الرسول﴾ يقول: يامحمد.

قوله تعالى: ﴿بلغ ماأنزل إليك من ربك﴾

[٦٦٠٩] حدثنا أبى ثنا عثمان بن حرزاد، ثنا إسماعيل بن زكريا، ثنا علي بن عابس عن الأعمش ابني الحجاب، عن عطية العوفي عن أبى سعيد الخدري قال: نزلت هذه الآية ﴿ياأيها الرسول بلغ ماأنزل إليك من ربك﴾ في علي بن أبي طالب.

[٦٦١٠] قرأت على محمد، ثنا محمد عن بكير بن معروف عن مقاتل ﴿ياأيها الرسول بلغ ماأنزل إليك من ربك﴾ يقول: بلغ ماأرسلت به، يحرضه علي أن يبلغ الرسالة عن ربه.

◈ हाफ़िज़ राज़ी बिन अबी हातिम ﷬ की **'तफ्सीर'** में है:

→ आयत ''يا أيها الرسول بلغ ماأنزل إليك من ربك'' (ए रसूल ﷺ ! जो तुम्हारी तरफ तुम्हारे रब की जानिब से उतारा गया है उसे पहुँचा दो) हज़रत अली ﷺ के बारे में नाज़िल हुई।

عن

حقائق غوامض التنزيل وعيون الأقاويل

في وجوه التأويل

للعلامة جار الله أبي القاسم محمود بن عمر الزمخشري

(٤٦٧-٥٣٨ هـ)

تحقيق وتعليق ودراسة

الشيخ عادل أحمد عبد الموجود — الشيخ علي محمد معوض

شارك في تحقيقه

الأستاذ الدكتور فتحي عبد الرحمن أحمد حجازي

أستاذ البلاغة والنقد بكلية اللغة العربية جامعة الأزهر

الجزء الثالث

مكتبة العبيكان

فإن قلت: كيف قيل: ﴿وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ﴾، والمؤمن يخشى المحاذير، ولا يتمالك ألا يخشاها؟

قلت: هي الخشية والتقوى في أبواب الدين، وألا يختار على رضا الله رضا غيره لتوقع مخوف، وإذا اعترضه أمران: أحدهما: حق الله، والآخر: حق نفسه، أن يخاف الله، فيؤثر حق الله على حق نفسه، وقيل: كانوا يخشون الأصنام، ويرجونها، فأريد نفي تلك الخشية عنهم، ﴿فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَن يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ﴾: تبعيد للمشركين عن مواقف الاهتداء[1]، وحسم لأطماعهم من الانتفاع[2]، بأعمالهم التي استعظموها وافتخروا بها، وأملوا عاقبتها، بأن الذين آمنوا وضموا إلى إيمانهم العمل بالشرائع مع استشعار الخشية والتقوى، اهتداؤهم دائر بين عسى ولعل، فما بال المشركين يقطعون أنهم مهتدون ونائلون عند الله الحسنى، وفي هذا الكلام ونحوه لطف للمؤمنين في ترجيح الخشية على الرجاء ورفض الاغترار بالله تعالى.

﴿أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوُونَ عِندَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾﴾

السقاية والعمارة: مصدران من سقى وعمر، كالصيانة والوقاية، ولا بد من مضاف محذوف تقديره: ﴿أَجَعَلْتُمْ﴾: أهل، ﴿سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ﴾: وتصدقه قراءة ابن الزبير، وأبي وجزة السعدي[3] ـ وكان من القراء ـ: سقاة الحاج، وعمرة المسجد الحرام، والمعنى: إنكار أن يشبه المشركون بالمؤمنين؛ وأعمالهم المحبطة بأعمالهم المثبتة، وأن يسوى بينهم، ويجعل تسويتهم ظلماً بعد ظلمهم بالكفر، وروي أن المشركين قالوا لليهود: نحن سقاة الحجيج، وعمار المسجد الحرام، أفنحن أفضل أم محمد وأصحابه؟ فقالت لهم اليهود: أنتم أفضل، وقيل: إن علياً ـ رضي الله عنه ـ قال للعباس: يا عم، ألا تهاجرون، ألا تلحقون برسول الله ـ ﷺ ـ فقال: ألست في أفضل من الهجرة: أسقي حاج بيت الله، وأعمر المسجد الحرام، فلما نزلت، قال العباس/ ٢٨٨أ: ما أراني إلا تارك سقايتنا، فقال عليه السلام: «أقيموا على سقايتكم؛ فإن لكم فيها خيراً» (٦٧١).

---

٦٧١ ـ أخرجه عبد الرزاق في تفسيره (٢/ ٢٦٨ ـ ٢٦٩) من معمر عن الحسن فذكره. =

(١) قال محمود: «في هذه الآية تبعيد للمشركين... إلخ» قال أحمد: وأكثرهم يقول إن «عسى» من الله واجبة بناء منهم على أن استعمالها غير مصروفة للمخاطبين، والحق فيما قال الزمخشري، ولكن الخطاب مصروف إليهم أي فحال هؤلاء المؤمنين حال مرجوة، والعاقبة عند الله معلومة، ولله عاقبة الأمور.

(٢) قوله: «من الانتفاع» لعله «في» كعبارة النسفي (ع).

(٣) قوله: «وأبي وجزة السعدي» في الصحاح: أنه شاعر ومحدث (ع).

◈ **‘तफ्सीर क्शाफ़’** में है:

→ हज़रत अली ﷺ ने हज़रत अब्बास ﷺ से कहा: ‘चाचा! क्या तुम हिजरत नहीं करोगे, क्या रसूलल्लाह ﷺ से नहीं मिलोगे?’ उन्होंने फ़रमाया: क्या मैं हिजरत से अफ़ज़ल काम में नहीं हूँ, हाजियों को पानी पिलाता हूँ, और मस्जिदे हराम को आबाद करता हूँ, फिर जब “أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله واليوم الآخر وجاهد فى سبيل الله،لا يستوٗن عند الله” (क्या तुम ने हाजियों को पानी पीला देना और मस्जिदे हराम की ख़िदमत करना उसके बराबर कर दिया है जो अल्लाह ﷻ पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाऐ, और अल्लाह ﷻ की राह में जिहाद किया, यह अल्लाह ﷻ के नज़दीक बराबर नहीं) नाज़िल हुई तो हज़रत अब्बास ﷺ ने फ़रमाया: मेरा ख़्याल है के सक़ाया (की ज़िम्मेदारी) छोड़ दूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: सक़ाया में लगे रहो, उस में तुम्हारे लिए ख़ैर है।

تراث الإسلام

# تفسير الطبري

## جامع البيان عن تأويل آي القرآن

لأبي جعفر محمد بن جرير الطبري

٢٢٤ - ٣١٠ هـ

١٤

حققه وخرج أحاديثه

محمود محمد شاكر


الناشر
مكتبة ابن تيمية
القاهرة ت ٨٦٤٢٤٠




أعمل عملاً بعد الإسلام ، إلا أن أعمر المسجد الحرام ! وقال آخر : الجهاد فى سبيل الله أفضل مما قلتم ! فزجرهم عمر وقال : لا ترفعوا أصواتكم عند منبر رسول الله صلى الله عليه وسلم = وذلك يوم الجمعة = ولكن إذا صلى الجمعة دخلنا عليه ! فنزلت : « أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام » إلى قوله : « لا يستوون عند الله » . ٦٨/١٠

١٦٥٦١ — حدثنا الحسن بن يحيى قال ، أخبرنا عبد الرزاق قال ، أخبرنا معمر ، عن عمرو ، عن الحسن قال : نزلت فى على ، وعباس ، وعثمان ، وشيبة ، تكلموا فى ذلك ، فقال العباس : ما أرانى إلاّ تارك سقايتنا ! فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم : أقيموا على سقايتكم ، فإن لكم فيها خيراً .

١٦٥٦٢ — . . . . قال أخبرنا عبد الرزاق قال ، أخبرنا ابن عيينة ، عن إسمعيل ، عن الشعبى قال : نزلت فى على ، والعباس ، تكلما فى ذلك .

١٦٥٦٣ — حدثنى يونس قال ، أخبرنا ابن وهب قال ، أخبرت عن أبى صخر قال : سمعت محمد بن كعب القرظى يقول : افتخر طلحة بن شيبة من بنى عبد الدار ، وعباس بن عبد المطلب ، وعلى بن أبى طالب ، فقال طلحة ، أنا صاحب البيت ، معى مفتاحه ، لو أشاء بِتُّ فيه ! وقال عباس : أنا صاحب السقاية والقائم عليها ، ولو أشاء بِتُّ فى المسجد ! وقال على : ما أدرى ما تقولان ، لقد صليت إلى القبلة ستة أشهر قبل الناس ، وأنا صاحب الجهاد ! فأنزل الله : « أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام » ، الآية كلها .

١٦٥٦٤ — حدثنا محمد بن عبد الأعلى قال ، حدثنا محمد بن ثور ، عن معمر ، عن الحسن قال : لما نزلت : « أجعلتم سقاية الحاج » ، قال العباس :

---

(١) الأثر : ١٦٥٦٠ — « يحيى بن أبى كثير الطائى » ، ثقة ، روى له الجماعة ، روى عن زيد بن سلام بن أبى سلام ، وأرسل عن أبى سلام الحبشى وغيره . وهذا من مرسله عن النعمان بن بشير ، أو عن أبى سلام . وقد مضى برقم : ٩١٨٩ ، ١١٥٠٥ — ١١٥٠٧ .

◈ **'तफ़्सीर तिबरी'** में है:

→ हज़रत हसन ﵁ कहते हैं: ("أجعلتم سقاية الحاج") हज़रत अली ﵁, हज़रत अब्बास ﵁ हज़रत उस्मान और शैबा के बारे में उतरी।

→ शाअ़बी ﵀ कहते हैं: अली ﵁ और अब्बास ﵁ के बारे में उतरी, दोनों में कुछ गुफ़्तुगू हुई थी।

→ एक रिवायत में है : तल्हा बिन शैबा जो अब्दुलदार में से थे, हज़रत अब्बास ﵁ और हज़रत अली ﵁ ने एक दूसरे पर फ़ख्र जताया, तल्हा ने कहा: 'मैं काबा का मालिक हूँ, चाबियाँ मेरे पास हैं, अगर मैं चाहूँ तो इस में रात बसर कर सकता हूँ', अब्बास ﵁ ने कहा मैं सक़ाया का ज़िम्मेदार व निगरा हूँ, अगर चाहूँ तो मस्जिद (हराम) में रात बसर कर सकता हूँ, अली ﵁ ने फ़रमाया: मैं नहीं जानता कि तुम दोनों क्या कहते हो,मैंने तो लोगों से 6 (छ:) महीने पहले क़िब्ले की तरफ रुख़ करके नमाज़ पढ़ी है और मैं जिहाद वाला हूँ', तो अल्लाह ﷻ ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई "أجعلتم سقاية الحاج"।

حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿١٨﴾ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ

وفيه قول آخر: أن معنى قوله: ﴿ شاهدين على أنفسهم بالكفر ﴾ هو أنك تقول لليهودى: ما أنت؟ فيقول: يهودى، وتقول للنصرانى: ما أنت؟ فيقول: نصرانى، وكذلك المجوسى والمشرك.

قوله تعالى: ﴿ أولئك حبطت أعمالهم وفي النار هم خالدون ﴾ الحبوط: هو البطلان، وخالدون: دائمون.

قوله تعالى: ﴿ إنما يعمر مساجد الله ﴾ سبب نزول الآية: أن العباس - رضي الله عنه - لما أسر يوم بدر عيّره أصحاب رسول الله ﷺ بترك الإسلام والهجرة، فقال: نحن عمار المسجد الحرام وسقاة الحجيج.

وفي رواية: أنه لما أسلم قال للمسلمين: لئن سبقتمونا بالإسلام فقد كنا نعمر المسجد الحرام، ونسقي الحجيج، فأنزل الله تعالى هذه الآية ﴿ إنما يعمر مساجد الله من آمن بالله واليوم الآخر وأقام الصلاة وآتى الزكاة ولم يخش إلا الله ﴾ معناه: لم يترك الإيمان بالله من خشية أحد ﴿ فعسى أولئك أن يكونوا من المهتدين ﴾ وعسى من الله واجب. فإن قال قائل: أتقولون: إن كل مَن عمر مسجدا يكون هكذا على ما قال الله تعالى؟

قلنا: معنى الآية - والله أعلم -: أن من كان بهذه الأوصاف كان أهل عمارة المسجد الحرام، ولا يعمر المسجد الحرام إلا من استجمع هذه الأوصاف، وعمارة المسجد الحرام بذكر الله، والرغبة إليه، والدعاء، والصلاة وغيره.

قوله تعالى: ﴿ أجعلتم سقاية الحاج و عمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله واليوم الآخر وجاهد في سبيل الله لا يستوون عند الله ﴾ أكثر المفسرين على أن هذه الآية نزلت في علي والعباس - رضي الله عنهما - وكان الذي عيّر العباس بترك الإسلام





والهجرة هو علي - رضي الله عنه - فقال العباس: نحن عمار المسجد الحرام، وسقاة الحجيج، فقال الله تعالى ﴿ أجعلتم سقاية الحاج ﴾ ومعناه: أجعلتم أهل سقاة الحاج وأهل عمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله. وقرئ: «أجعلتم سُقَاة الحاج وعَمَرة المسجد الحرام»(١) وعلى هذه القراءة لا يحتاج إلى تقدير الأهل ﴿ لا يستوون عند الله ﴾ معناه: لا يستوى من عبد الله وهو مؤمن، ومن عمر المسجد وهو مشرك ﴿ والله لا يهدى القوم الظالمين ﴾ وقد وردت أخبار في الترغيب في عمارة المساجد:

روى أبو سعيد الخدر ... تاد

المساجد؛ فاشهدوا له با ... من

بالله ﴾»(٢).

وروى أبو هريرة - ر ... سى

المسجد أعد الله له نزلا ...

وروى جابر - رضى ا ... نة،

من دخله كان ضيف الل ... ال:

يارسول الله، وما الرتاع؟

وقد صح عن النبى ... فى

الجنة»(٥).

تفسير القرآن

الإمام العلامة شيخ الإسلام حجة أهل السنة والجماعة

أبي المظفر السمعاني

منصور بن محمد بن عبد الجبار التميمي المروزي الشافعي

(٤٢٦-٤٨٩)

المجلد الثاني

من المائدة إلى هود

تحقيق

أبي تميم ياسر بن إبراهيم

دار الوطن

---

(١) انظر النشر (٢/ ٢٧٨).

(٢) رواه الترمذى (٥/ ١٤ ... سن

غريب، وابن ماجة (١/ ١٢ ... ٧)،

وابن خزيمة (٢/ ٣٧٩/ رق ... ال:

هذه ترجمة للمصريين لم ي ... ر.

ورواه (٢/ ٣٣٢) وقال: ص

ورواه البيهقى (٣/ ٦٦).

(٣) متفق عليه. رواه البخارى (١/ ١٢٦ رقم ١١١)، ومسلم (٣/ ١٢٨٥ - ١٠٦ رقم ١٠٦).

(٤) رواه الخطيب فى تاريخه (٩/ ٢٠٨) عن جابر بنحوه، وعزاه فى الكنز (٧/ ٥٨١/ رقم ٢٠٣٤٨) للصرفى فى فوائده، والحاكم فى تاريخه، والخطيب.

(٥) متفق عليه من حديث جابر، رواه البخارى (١/ ٦٤٨/ رقم ٤٥٠)، ومسلم (٥/ ٢٠/ رقم ٥٣٣).

◈ अबू मुज़फ्फर समआनी ﷬ की तफ़सीर में है:

→ अक्सर मुफ़स्सिरीन की राय है यह आयत (''أجعلتم سقاية الحاج'') हज़रत अली ﷡ और हज़रत अब्बास ﷡ के बारे में उतरी, हज़रत अब्बास ﷡ को इस्लाम क़बूल ना करने और हिजरत ना करने पर हज़रत अली ﷡ ने आर दिलाया तो अब्बास ﷡ ने कहा था : 'हम मस्जिद हराम को आबाद करते हैं और हाजियों को पानी पिलाते हैं', तो अल्लाह ﷻ ने यह आयत उतारी :

''أجعلتم سقاية الحاج وعمارة المسجد الحرام كمن آمن بالله واليوم الآخر وجاهد في سبيل الله،لا يستؤن عند الله''

(क्या तुम ने हाजियों को पानी पीला देना और मस्जिदे हराम की ख़िदमत करना उसके बराबर कर दिया है जो अल्लाह ﷻ पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए, और अल्लाह ﷻ की राह में जिहाद किया, यह अल्लाह ﷻ के नज़दीक बराबर नहीं।)

قال السدى: ما ينبغى لهم أن يعمروها، وأما قوله:﴿ شاهدين على أنفُسِهم بالكُفر﴾:فإن النصرانى يُسأل: ما أنت؟ فيقول: نصرانى، واليهودى. فيقول: يهودى، والصابئ يقول: صابئ، والمشرك يقول إذا سألته ما دينك ؟ فيقول : مشرك، ولم يكن ليقوله أحد إلا العرب [1].

﴿ أجَعَلْتم سِقايَةَ الحاجِّ وعِمارَةَ المَسجدِ الحَرام كَمَن آمَنَ بِاللّه واليومِ الآخرِ وجاهد فى سبيلِ اللّه لا يَستَوونَ عِندَ اللّه ﴾ ١٩

| قال السدى: افتخر علىٌّ، والعباس، وشَيْبَة بن عُثمان، فقال العباس: أنا أفضلكم، أنا أسقى حجاج بيت الله، وقال شيبة: أنا أعمر مسجد الله، وقال علىٌّ: أنا هاجرت مع الرسول ﷺ وأجاهد معه فى سبيل الله. فأنزل الله تعالى قوله: ﴿ يبشرهم ربهم برحمة منه ورضوان وجنات لهم فيها نعيم مقيم ﴾ الآية ٢١. |
| --- |

﴿ وتِجارةٌ تَخشَونَ كَسادَها ومَساكِنُ تَرضَونَها ﴾ ٢٤

قال السدى: تخشون أن تكسب فتبيعوها، وقوله:﴿ومساكنُ ترضونها ﴾ هى القصور والمنازل [2].

﴿ لقد نَصَرَكُمُ اللّهُ فى مَواطِنَ كثيرةٍ ويومَ حُنَينٍ إذ أعجَبَتكُم كَثرَتُكُم فلم تُغنِ عنكم شيئا ﴾ ٢٥

قال السدى: إن رجلا من أصحاب الرسول ﷺ يوم حنين قال: يا رسول الله، لن نُغلب اليوم من قِلّة، وأعجبته كثرة الناس، وكانوا اثنى عشر ألفا، فسار رسول ﷺ، فوكِلُوا إلى كلمة الرجل، فانهزموا عن الرسول ﷺ غير العباس وأبى سفيان بن الحارث، وأيمن ابن أم أيمن قُتل يومئذ بين يديه، فنادى الرسول ﷺ: « أين الأنصار، أين الذين بايعوا تحت الشجرة »؟ فتراجع الناس، فأنزل الله الملائكة بالنصر، فهزموا المشركين يومئذ[3].

﴿ وعذَّبَ الذين كَفَروا وذلك جزاءُ الكافرين ﴾ ٢٦

قال السدى فى قوله تعالى:﴿ وعذب الذين كفروا ﴾: قتلهم بالسيف.

---

(١) جامع البيان ١٤/١٦٦، تفسير القرآن العظيم ٢/٣٤٠.

(٢) جامع البيان ١٤/١٧٢، الجامع لأحكام القرآن ٤/٢٩٣١، تفسير القرآن العظيم ٢/٣٤٢.

(٣) جامع البيان ١٤/١٨٩، الدر المنثور ٣/٢٢٥، فتح القدير ٢/٣٤٩.

٢٩٠
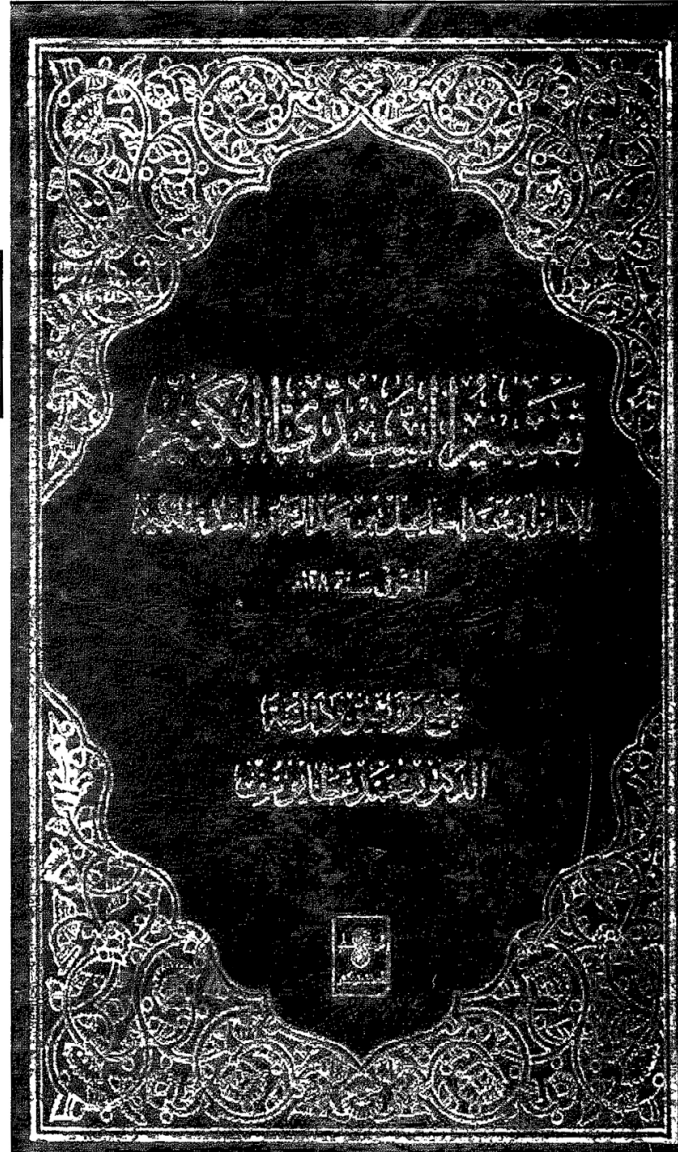
◈ **इमाम सुद्दी (Al-Suddi) कबीर के 'तफ्सीर' में हैं :**

→ इमाम सुद्दी ﷺ फरमाते है : अली ﷺ, अब्बास ﷺ और शैबा ने एक दूसरे पर फख्र किया, अब्बास ﷺ ने कहा : ' मैं तुम सबसे अफजल हूँ, क्योंकि मैं हाजीयों को पानी पिलाता हूँ', शैबा ने कहा : 'मैं मस्जिदे हराम को आबाद करता हूँ' हजरत अली ﷺ ने कहा : ' मैं ने रसूलल्लाह ﷺ के साथ हिजरत की और उनके साथ राहे खुदा में जिहाद करता हूँ' तो अल्लाह ﷻ ने ये आयत नाजिल की يبشرهم ربهم برحمة منه ورضوان وجنات لهم فيها نعيم مقيم (उनका रब उन्हे खुशखबरी देता है अपनी रहमत की और खुशनुदी की, और जन्नतों की, जिनमें उनके लिये हंमेशा की नेअमते है।')

## قوله تعالى

مناقب امير المؤمنين

علي بن أبي طالب عليه السلام

... الآية

الغندجانيُّ حدَّثنا هلال
عليُّ بن موسى الرِّضا
محمد بن عليّ الباقر عن
ﷺ وإنّي لأدناهم في
ن بعدي كفّاراً يضرب
عرفني في الكتيبة الّتي
و عليٌّ ثلاثاً، فرأينا أنّ
﴿فإمّا نذهبنَّ بك فإنّا
ك الذي وعدناهم فإنّا
ني ما يوعدون ربِّ فلا
ستمسك بالّذي أوحي
م للسّاعة ﴿وإنّه لذكر
بي طالب.

## قوله تعالى

## ﴿ اني جاعلك للناس إماماً﴾ .. الآية

٣٢٢ ـ أخبرنا أبو محمد الحسن بن أحمد بن موسى الغندجاني

---

(١) أيمُ الله، أصله أيمنُ الله: اسم وضع للقسم، والتقدير: أيمنُ الله قسمي. و(الأيمن) جمع يمين [illegible]
قيل إنما سميت بذلك لأنهم كانوا إذا تحالفوا ضرب كل امرىء منهم يمينه على يمين صاحبه.

(٢) سورة الزخرف: ٤١

(٣) سورة الزخرف: ٤٢.

(٤) سورة المؤمنون: ٩٣ـ ٩٤.

(٥) سورة الزخرف: ٤٣

(٦) سورة الزخرف: ٤٤.



أخبرنا أبو الفتح هلال بن محمد الحفّار حدَّثنا إسماعيل بن عليّ بن رزين قال: حدَّثني أبي وإسحاق بن إبراهيم الدُّبريُّ قالا: حدَّثنا عبد الرزاق قال: حدَّثني أبي عن مينا مولى عبد الرَّحمن بن عوف عن عبد الله ابن مسعود قال: قال رسول الله ﷺ: أنا دعوة أبي إبراهيم، قلنا: يا رسول الله وكيف صرت دعوة أبيك إبراهيم؟ قال: أوحى الله عزَّ وجلَّ إلى إبراهيم: ﴿إنّي جاعلك للنّاس إماماً﴾[1] فاستخفَّ إبراهيم الفَرح قال: يا ربِّ! ومن ذرّيّتي أئمّة مثلي! فأوحى الله إليه أن يا إبراهيم إنّي لا أُعطيك عهداً لا أفي لك به، قال: يا ربِّ ما العهد الذي لا تفي لي به؟ قال: لا أُعطيك لظالم من ذرّيّتك. قال إبراهيم عندها: «واجنبني وبنيَّ أن نعبد الأصنام ربِّ إنهنَّ أضللن كثيراً من النّاس»[2] قال النبيُّ ﷺ: فانتهت الدَّعوة إليَّ وإلى عليٍّ لم يسجد أحد منّا لصنم قطُّ، فاتَّخذني الله نبيّاً، واتَّخذ عليّاً وصيّاً.

## قوله ﷺ لعليّ:

٣٢٣ـ أخبرنا أبو الحسن عليُّ بن الحسين الصوفيُّ إذناً قال: حدَّثنا أبو عبد الله محمد بن عليّ السّقطي حدَّثنا محمد بن الحسين الزّعفرانيُّ قال: حدَّثنا أحمد بن القاسم بن مساور قال: حدَّثنا إسحاق بن بشر قال: حدَّثنا جعفر بن سعيد الكاهليُّ عن الأعمش عن أبي وائل عن عبد الله بن مسعود قال: رأيت رسول الله ﷺ آخذاً بيد عليٍّ وهو يقول: هذا وليّي وأنا وليُّه، سالمتُ من سالم وعاديتُ من عادى.

## قوله ﷺ

## يا علي من فارقني فقد فارقك

٣٢٤ـ أخبرنا عليُّ بن الحسين الصوفيُّ إذناً قال: حدَّثنا محمد بن

---

(١) سورة البقرة: ١٢٤

(٢) سورة ابراهيم: ٣٥.

◈ **'मनाक़िब अमीरुल मो'मिनीन'** में हैं :

→ हज़रत इब्ने मसउद ﷺ फ़रमाते हैं: रसूलल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: 'मैं हज़रत इब्राहिम ؑ की दुआ हूँ', हमने कहा: 'ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ आप हज़रत इब्राहिम ؑ की दुआ कैसे हैं?' आप ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह ﷻ ने हज़रत इब्राहीम ؑ की तरफ वही की कि "إنى جاعلك للناس إماماً" मैं तुम्हे लोगों का इमाम बनाऊंगा, हज़रत इब्राहिम ؑ खुश होकर बोले कि 'या अल्लाह ﷻ ! मेरी जुर्रियत को भी मेरी तरह इमाम बनाना', तो अल्लाह ﷻ ने उन की तरफ वही की कि ऐ इब्राहिम ؑ ! मैं तुझ से ऐसा अहद नहीं कर सकता जो पूरा ना करूँ', हज़रत इब्राहिम ؑ ने पूछा: ए रब वो कोन सा अहद है जो तू मेरे लिए पूरा नहीं कर सकता', तो अल्लाह ﷻ ने फ़रमाया: 'मैं तेरी जुर्रियत में से ज़ालिमों को इमाम नहीं बनाऊंगा', उस वक़्त हज़रत इब्राहिम ؑ ने कहा: कि ऐ अल्लाह ﷻ! मुझे और मेरे बेटों को बचा इस बात से कि हम बुतो की पूजा करें,ऐ मेरे रब! इन बुतों ने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया है, (या'नी गुमराही का सबब हैं) हुजूर ﷺ फ़रमाते हैं : **'यह दुआ मुझ तक और अली ؓ तक पहुँची,हम में से किसी ने कभी किसी बुत को सजदा नहीं किया, अल्लाह ﷻ ने मुझे नबी और अली ؓ को वसी बनाया।'**

# مجمع الزوائد ومنبع الفوائد

تأليف

الحافظ نور الدين علي بن أبي بكر بن سليمان الهيثمي المصري

المتوفى سنة ٨٠٧هـ

تحقيق

محمد عبد القادر أحمد عطا

الجزء التاسع

منشورات محمد علي بيضون

دار الكتب العلمية

رواه أبو يعلى، وفيه جماعة اختلف فيهم، ولم أعرفهما.

١٤٦٦٢ - وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ: وَالَّذِي أَحْلِفُ بِهِ إِنْ كَانَ عَلِيٌّ لَأَقْرَبَ النَّاسِ عَهْدًا بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ، قَالَتْ: عُدْنَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ غَدَاةً بَعْدَ غَدَاةٍ، يَقُولُ: «جَاءَ عَلِيٌّ؟»، مِرَارًا، قَالَتْ: وَأَظُنُّهُ كَانَ بَعَثَهُ فِي حَاجَةٍ، قَالَتْ: فَجَاءَ بَعْدُ فَظَنَنْتُ أَنَّ لَهُ إِلَيْهِ حَاجَةً، فَخَرَجْنَا مِنَ الْبَيْتِ فَقَعَدْنَا عِنْدَ الْبَابِ، فَكُنْتُ مِنْ أَدْنَاهُمْ إِلَى الْبَابِ، فَأَكَبَّ عَلَيْهِ عَلِيٌّ فَجَعَلَ يُسَارُّهُ وَيُنَاجِيهِ، ثُمَّ قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ يَوْمِهِ ذَلِكَ، فَكَانَ أَقْرَبَ النَّاسِ بِهِ عَهْدًا[4].

(١) أخرجه الطبراني في الكبير برقم (٧٢١٧).

(٢) أخرجه الطبراني في الكبير برقم (١١١٥٣).

(٣) أخرجه الطبراني في الكبير برقم (١١٦٧٨).

(٤) أخرجه الإمام أحمد في المسند (٦/٣٠٠). والطبراني في الكبير (٢٣/٣٧٥)، وأورده المصنف=



رواه أحمد، وأبو يعلى إلا أنه قال فيه: كان رسول الله ﷺ يوم قبض في بيت عائشة، والطبراني باختصار، ورجالهم رجال الصحيح، غير أم موسى، وهي ثقة.

## ٥٢ - باب فيما أوصى به رضي الله عنه

١٤٦٦٣ - عَنْ ذُؤَيْبٍ، أن النبي ﷺ لما حضر، قالت صفية: يا رسول الله، لكل امرأة من نسائك أهل تلجأ إليهم، وإنك أجليت أهلي، فإن حدث حدث، فإلى من؟ قال: «إلى عليّ بن أبي طالب»[1].

رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح.

١٤٦٦٤ - وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كنا نتحدث أن رسول الله ﷺ عهد إلى علي سبعين عهدًا لم يعهدها إلى غيره[2].

رواه الطبراني في الصغير وفيه من لم أعرفهم.

١٤٦٦٥ - وَعَنْ عَلِيٍّ، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ: ﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ﴾ [الشعراء: ٢١٤] قال: جَمَعَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ، فَاجْتَمَعَ ثَلَاثُونَ رَجُلًا، فَأَكَلُوا وَشَرِبُوا، قَالَ: فَقَالَ لَهُمْ: «مَنْ يَضْمَنُ عَنِّي دَيْنِي وَمَوَاعِيدِي، وَيَكُونُ مَعِي فِي الْجَنَّةِ، وَيَكُونُ خَلِيفَتِي فِي أَهْلِي؟»، فَقَالَ رَجُلٌ - لَمْ يُسَمِّهِ شَرِيكٌ -: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَنْتَ كُنْتَ بَحْرًا، مَنْ يَقُومُ بِهَذَا؟ قَالَ: ثُمَّ قَالَ لِآخَرَ، فَعَرَضَ ذَلِكَ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ، فَقَالَ عَلِيٌّ: أَنَا[3].

رواه أحمد وإسناده جيد، وقد تقدمت لهذا الحديث طرق في علامة النبوة في آية في الطعام.

١٤٦٦٦ - وَعَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ: دعا رسول الله ﷺ العباس بن عبد المطلب، فقال: «اضْمَنْ عَنِّي دَيْنِي وَمَوَاعِيدِي»، قال: لا أطيق ذلك، فوقع به ابنه عبد الله ابن عباس، فقال: فعل الله بك من شيخ يدعوك رسول الله ﷺ ليقضي عنه دينه

=في زوائد المسند برقم (٣٦٠٠)، والمتقي الهندي في كنز العمال برقم (٣٦٤٠٩)، والحاكم في المستدرك (٣/١٣٨).

(١) أخرجه الطبراني في الكبير برقم (٤٢١٤).

(٢) أخرجه الطبراني في الصغير (٢/٦٩).

(٣) أخرجه الإمام أحمد في المسند (١/١١١)، وأورده المصنف في زوائد المسند برقم (٣٦٢٣)، وفي كشف الأستار برقم (٢٤١٨).

◈ **इमाम अल हैसमी ؒ की 'मजमउल ज़वाइद व मम्बउल फवाइद'** में है:

→ हज़रत उम्मे सलमा ؓ फ़रमाती हैं : 'उस ज़ात की क़सम जिस की मैं क़सम खाती हूँ हज़रत अली ؓ हुज़ूर ﷺ के सब से ज़्यादा क़रीब थे (आप ﷺ की वफ़ात के वक़्त), 'फ़रमाती हैं': हम ने सुबह के बाद सुबह आप ﷺ की अयादत की, आप ﷺ बार बार पूछते रहे: अली ؓ आ गये?' 'फ़रमाती हैं': मेरा ख़्याल है आप ﷺ ने उन्हें किसी काम से भेजा था, फिर हज़रत अली ؓ आ गये तो मैं समझी कि आप ﷺ को उन से कोई ज़रुरत है, हम घर से निकल कर दरवाज़े पर आकर बैठ गए, मैं दरवाज़े के सब से ज़्यादा क़रीब थी, हज़रत अली ؓ आप ﷺ पर झुक कर सरगोशी[1] करने लगे, फिर उसी दिन रसूलल्लाह ﷺ की रुह परवाज़ कर गई, तो अली ؓ हुज़ूर ﷺ के सब से ज़्यादा क़रीब थे।

→ इस के रिजाल सहीह के रिजाल हैं सिवाऐ उम्मे मूसा के वह भी सिक्का **(Trustworthy)** हैं।

→ हज़रत अली ؓ फ़रमाते हैं जब आयत "وأنذر عشيرتك الأقربين" (और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को आगाह करिये) नाज़िल हुई तो नबी ﷺ ने अपने घरवालों को जमा किया, तीस लोग जमा हुए, खाया और पिया, इसके बाद आप ﷺ ने उन से फ़रमाया: मेरी तरफ से मेरे क़र्ज़ और मेरे वादों की ज़मानत कौन लेगा? (इसके बदले) वह जन्नत में मेरे साथ होगा और मेरे घरवालों में मेरा जांनशीन? 'एक शख़्स ने कहा' ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! आप तो समन्दर हैं, उस को कौन अन्जाम दे सकता है? 'रावी कहते हैं : फिर आप ﷺ ने यह बात दूसरे के सामने पेश की तो हज़रत अली ؓ ने कहा': 'मैं'!

1) सरगोशी : A soft- bw noise (धीमी आवाज़ से गुफ़्तगु या सवाल-ओ-जवाब करना।)

# تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩هـ - ٥٧١هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

## الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع



أخْبَرَنا أبُو القَاسِم بن السَّمَرْقَنْدي، أنا أبُو القَاسم إسْمَاعيل بن مَسْعَدة، أنا أبُو القَاسم حمزة بن يوسف، أنا أبُو أحْمَد عَبْد الله بن عدي الجُرْجاني [١]، نا مُحَمَّد بن أحْمَد بن أبي مقاتل، نا الفضل بن يوسف الفُضَيلي [٢]، نا عَلي بن ثابت الدهّان، نا مُحَمَّد بن إسْمَاعيل بن رجاء الزبيدي، عَن سالم بن أبي حفصة، عَن أبي الزبير [٣]، عَن جابر قال:

لما كان يوم الطائف ناجى رَسُول الله ﷺ علياً طويلاً، فلحق أبا [٤] بكر وعمر، فقالا: طالت مناجاتك علياً يا رَسُول الله، قال: «ما أنا أناجيه ولكن الله انتجاه» [٨٨٦٩].

قال الشيخ [٥]: لا أعلم رواه عن أبي الزبير عن سالم بن أبي حفصة من رواية مُحَمَّد بن إسْمَاعيل بن رجاء عنه.

قلت [٦]: رواه عن أبي الزبير جماعة.

أخْبَرَنا أبُو بكر مُحَمَّد بن عَبْد الباقي، أنا أبُو مُحَمَّد الجوهري، أنا أبُو بكر مُحَمَّد بن عُبَيْد الله بن الشِّخّير، نا مُحَمَّد بن مُحَمَّد الباغندي، حدّثني أحْمَد بن يَحْيَى الصّوفي، نا مِخْوَل بن إبْرَاهيم، نا عَبْد الجبار بن العبّاس، عَن عمار الذهبي [٧]، عَن أبي الزبير، عَن جابر بن عَبْد الله.

أن النبي ﷺ انتجى علياً طويلاً فقال أصحابه: ما أكثر ما يناجيه، فقال: «ما أنا انتجيته، ولكن الله انتجاه» [٨٨٧٠].

أخْبَرَنا أبُو القَاسِم بن السَّمَرْقَندي، أنا عاصم بن الحسَن، أنا أبُو عمر [٨] بن مهدي، أنا أبُو العبّاس بن عقدة، نا أحْمَد بن يَحْيَى - هو ابن زكريا الصّوفي - نا عَبْد الرّحمن بن

---

(١) رواه ابن عدي في الكامل في ضعفاء الرجال ٦/٢٤٧ ضمن ترجمة محمد بن إسماعيل بن رجاء بن ربيعة الزبيدي. طبعة دار الفكر.

(٢) كذا بالأصل وم و« ز »، والمطبوعة، وفي ابن عدي: القصابي.

(٣) في ابن عدي: عن الزبير.

(٤) كذا بالأصل وم و« ز » وابن عدي، وفي المطبوعة: أبو بكر.

(٥) بالأصل، وم، و« ز »، والمطبوعة: قال أبي، تصحيف والتصويب عن ابن عدي، وقد وهم محقق المطبوعة فاعتبر أن القائل هو ابن عساكر فكتب: قال ابن عساكر قال أبي...

(٦) العبارة التالية، تعقيب للمصنف على ما ذكره أبو عبد الله بن عدي.

(٧) كذا بالأصل وم، وفي المطبوعة: عمار الدهني.

(٨) الأصل: أبو عمرو، تصحيف، والتصويب عن م، والسند معروف.



شريك بن عَبْد الله النّخعي، نا أبي، نا الأجلح بن عَبْد الله الكِنْدي، عَن أبي الزبير، عَن جابر قال:

قام [١] رَسُول الله ﷺ [إلى] عَلي بن أبي طالب يوم الطائف وأطال [٢] مناجاته، فرأى الكراهية في وجوه رجال، فقالوا: قد أطال مناجاته منذ اليوم، فقال: «ما أنا انتجيته، ولكن الله انتجاه» [٨٨٧١].

أخْبَرَنا أبُو القَاسِم بن السَّمَرْقَنْدي، وأبُو البركات بن المبارك، قالا: أنا أبُو الحسَين بن النَّقُّور، أنا أبُو طاهر المُخَلِّص، أنا أبُو حامد [٣] مُحَمَّد بن هارون الحَضْرَمي، حدّثنا أبُو هشام مُحَمَّد بن يزيد بن رفاعة، نا مُحَمَّد بن فُضَيل، نا الأعمش، عَن أبي الزبير، عَن جابر قال:

لما كان يوم الطائف دعا رَسُول الله ﷺ علياً فناجاه طويلاً، فقال بعض أصحابه: لقد أطال نجوى ابن عمه، قال: «ما أنا انتجيته ولكن الله انتجاه» [٨٨٦٩].

كذا قال [٤]، وإنما هو الأجلح.

أخبرتنا به أم المجتبى العلوية قالت: قُرئ على إبْرَاهيم بن منصور، أنا أبُو بكر بن المقرئ، أنا أبُو يَعْلَى، نا أبُو هشام الرفاعي، حَدّثنا ابن فُضَيل، نا الأجلح، عَن أبي الزبير، عَن جابر قال:

لما كان يوم الطائف ناجى رَسُول الله ﷺ علياً، فأطال نجوَاه، فقال بعض أصحابه: فقد أطال نجوى ابن عمه، فبلغه ذلك، فقال: «ما أنا انتجيته، بل الله انتجاه» [٨٨٧٠].

أخْبَرَنا أبُو البركات الربذي [٥]، أنا أبُو الفرج الشاهد، أنا أبُو الحسَين النحوي، أنا أبُو عَبْد الله المحاربي، نا عبّاد بن يعقوب، أنا أبُو عَبْد الرّحمن عَن سالم بن أبي حفصة، وإبْرَاهيم بن حمّاد، عَن أبي الزبير، عَن جابر قال:

لما أن كان يوم الطائف خلا رَسُول الله ﷺ بعليّ، فناجاه طويلاً، وأبو بكر وعمر ينظران والناس، قال: ثم انصرف إلينا فقال الناس: قد طالت مناجاتك اليوم يا رَسُول الله، فقال رَسُول الله ﷺ: «ما أنا انتجيته، ولكن الله انتجاه» [٨٨٧١].

---

(١) كذا بالأصل وم «قال» وفي المطبوعة: قام، وهو ما أثبت باعتبار السياق والزيادة التالية عن المطبوعة لتقويم المعنى، واللفظة «إلى» مستدركة فيها بين معكوفتين.

(٢) كذا بالأصل وم، وفي « ز »: فأطال. (٣) الأصل: بن محمد.

(٤) يعني: الأعمش، والصواب أنه الأجلح لا الأعمش.

(٥) كذا بالأصل وم، وفي المطبوعة: الزبدي.

◈ इब्ने असाकिर ﷫ की **'तारीख़ दिमश्क़'** में है:

→ अबू ज़ुबैर ﷫ कहते हैं की हज़रत जाबिर ﷜ फ़रमाते हैं: 'ताइफ़ के दिन रसूल ﷺ ने हज़रत अली ﷜ से बहुत देर तक सरगोशी[1] की, आप ﷺ से हज़रत अबू बकर ﷜ और हज़रत उमर ﷜ की मुलाक़ात हुई तो उन दोनों ने कहा: ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! अली ﷜ के साथ आपकी सरगोशी[1] बहुत लंबी हुई ? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: 'मैंने उस से सरगोशी[1] नहीं की, बल्कि अल्लाह ﷻ ने की (या'नी मैंने अल्लाह ﷻ के हुक्म से की)'।

→ मैं (इब्न असाकिर) कहता हूँ: अबू ज़ुबैर ﷫ से इसे एक जमाअत ने रिवायत किया है।

→ अबू ज़ुबैर ﷫ कहते हैं कि हज़रत जाबिर ﷜ फ़रमाते हैं: नबी ﷺ ने अली ﷜ से देर तक सरगोशी[1] की तो आप ﷺ के सहाबा ने कहा: 'कितनी ज़्यादा हो गई आप ﷺ की सरगोशी[1] !!' तो आप ﷺ ने फ़रमाया: 'मैंने उससे सरगोशी[1] नहीं की, बल्कि अल्लाह ﷻ ने की (या'नी मैंने अल्लाह ﷻ के हुक्म से की)।'

→ अबू ज़ुबैर ﷫ से रिवायत है कि हज़रत जाबिर ﷜ फ़रमाते हैं: ताइफ़ के दिन आप ﷺ ने हज़रत अली ﷜ को बुलाया और बहुत देर तक उनसे सरगोशी[1] की, बाज़ सहाबा ने कहा: आप ﷺ ने अपने चचाज़ाद भाई के साथ लंबी सरगोशी[1] की, **'तो आप ﷺ ने फ़रमाया': मैंने उससे सरगोशी[1] नहीं की, बल्कि अल्लाह ﷻ ने की (या'नी मैंने अल्लाह ﷻ के हुक्म से की)।'**

→ अबू ज़ुबैर ﷫ से रिवायत है कि हज़रत जाबिर ﷜ फ़रमाते हैं: ताइफ़ के दिन आप ﷺ ने हज़रत अली ﷜ को बुलाया और बहुत देर तक उन से सरगोशी[1] की, बाज़ सहाबा ने कहा: आप ﷺ ने अपने चचाज़ाद भाई के साथ लंबी सरगोशी[1] की, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: मैंने उससे सरगोशी[1] नहीं की, बल्कि अल्लाह ﷻ ने की (या'नी मैंने अल्लाह ﷻ के हुक्म से की)।

→ अबू ज़ुबैर ﷫ से रिवायत है कि हज़रत जाबिर ﷜ फ़रमाते हैं: ताइफ़ के दिन आप ﷺ ने तन्हाई में हज़रत अली ﷜ से गुफ़्तुगू की और बहुत देर तक सरगोशी[1] करते रहे, हज़रत अबू बकर ﷜ और हज़रत उमर ﷜ और दीगर लोग देख रहे थे, रावी कहते हैं: फिर आप ﷺ हमारी तरफ वापस आए तो लोगों ने कहा: 'ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ आपकी सरगोशी[1] बहुत लंबी हुई? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: मैंने उससे सरगोशी[1] नहीं की, बल्कि अल्लाह ﷻ ने की। (या'नी मैंने अल्लाह ﷻ के हुक्म से की।)'

1) सरगोशी : A soft- bw noise (धीमी आवाज़ से गुफ़्तगु या सवाल-ओ-जवाब करना।)

# مِشْكَاةُ المَصَابِيح

تأليف

محمد بن عبد الله الخطيب التبريزي

تحقيق

محمد ناصر الدين الألباني

الجزء الثالث

المكتب الإسلامي



ﷺ : « أنت أخي في الدنيا والآخرة » . رواه الترمذي ، وقال : هذا حديثٌ حسن غريب [١] .

٦٠٨٥ - (٨) وعن أنس ، قال : كان عند النبي ﷺ طيرٌ ، فقال : « اللهم آتني بأحبِّ خلقِكَ إليكَ يأكل معي هذا الطير » فجاءه عليٌّ ، فأكل معه . رواه الترمذي وقال : هذا حديثٌ غريبٌ [٢] .

٦٠٨٦ - (٩) وعن علي [ رضي الله عنه ][٣] ، قال : كنتُ إذا سألتُ رسولَ اللهِ ﷺ أعطاني وإذا سكتُّ ابتدأني . رواه الترمذي ، وقال : هذا حديث « حسنٌ غريب » [٤] .

٦٠٨٧ - (١٠) وعنه ، قال : قال رسول الله ﷺ : « أنا دارُ الحكمةِ ، وعليٌّ بابها » . رواه الترمذي ، وقال : هذا حديث غريب [٥] ، وقال : روى بعضُهم هذا الحديثَ عن شريك ولم يذكروا فيه عن الصنابحيّ ، ولا نعرف هذا الحديث عن أحدٍ من الثقات غير شريك [٦]

٦٠٨٨ - (١١) وعن جابر ، قال : دعا رسولُ الله ﷺ عليًّا يومَ الطائف فانتجاه [٧] ، فقال الناس : لقد طال نجواه معَ ابنِ عمّه ، فقال رسول ﷺ : « ما انتجيتُه ، ولكن الله انتجاه » . رواه الترمذي [٨] .

---

(١) قلت : وإسناده ضعيف .

(٢) أي ضعيف ، وهو كما قال . وانظر كلام الامام ابن حجر على هذا الحديث في الرسالة الملحقة في آخر الكتاب

(٣) زيادة من مخطوطة الحاكم .

(٤) قلت : وسنده ضعيف لانقطاعه .

(٥) زاد في نسخة بولاق من السنن « منكر » قلت : وشريك سيىء الحفظ .

(٦) انظر كلام الامام ابن حجر على هذا الحديث في الرسالة الملحقة في آخر الكتاب .

(٧) من باب الافتعال من النجوى ، أي ساره وقال له نجوى .

(٨) وقال : « حسن غريب » . قلت : ورجاله ثقات ، إلا أن فيه عنعنة أبي الزبير .

◈ **मिश्क़ातुल मसाबिह में है:**

→ हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं: ताइफ़ के दिन आप ﷺ ने हज़रत अली ﷺ को बुलाया और बहुत देर तक उनसे सरगोशी की, बाज़ लोगों ने कहा: आप ﷺ ने अपने चचाज़ाद भाई के साथ लंबी सरगोशी की, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: मैंने इससे सरगोशी नहीं की बल्कि अल्लाह ﷻ ने की,(या'नी मैंने अल्लाह ﷻ के हुक्म से की)।

→ इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

◈ **अल्लामा अल्बानी फ़रमाते हैं:**

→ **तिर्मिज़ी ने हसन ग़रीब बताया है,मैं कहता हूँ: इस के रिजाल सीक़्क़ा (Trustworthy) हैं, मगर यह के इस में अबू ज़ुबैर लफ्ज़ अन से रिवायत करते हैं।**

# الجامع الصحيح

وهو

## سنن الترمذي

لأبي عيسى محمد بن عيسى بن سورة

٢٠٩ - ٢٩٧ هـ

من كان في بيته
هذا الكتاب فكأنما
في بيته نبي يتكلم

تحقيق وتعليق

**ابراهيم عطوه عوض**

المدرس في الأزهر الشريف

## الجزء الخامس

شركة مكتبة ومطبعة مصطفى البابي الحلبي وأولاده بمصر
محمد محمود الحلبي وشركاه خلفاء



بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عليه وسلَّمَ جَيْشَيْنِ وَأَمَّرَ عَلَى أَحَدِهِمَا عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَعَلَى الآخَرِ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ ، وَقَالَ : إِذَا كَانَ الْقِتَالُ فَعَلِيٌّ قَالَ : فَافْتَتَحَ عَلِيٌّ حِصْنًا فَأَخَذَ مِنْهُ جَارِيَةً ، فَكَتَبَ مَعِي خَالِدٌ كِتَابًا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَشِي بِهِ . قَالَ : فَقَدِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَ الْكِتَابَ ، فَتَغَيَّرَ لَوْنُهُ ، ثُمَّ قَالَ : مَا تَرَى فِي رَجُلٍ يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ وَيُحِبُّهُ اللهُ وَرَسُولُهُ ؟ قَالَ : قُلْتُ : أَعُوذُ بِاللهِ مِنْ غَضَبِ اللهِ وَغَضَبِ رَسُولِهِ ، وَإِنَّمَا أَنَا رَسُولٌ ، فَسَكَتَ .

قَالَ أَبُو عِيسَى : هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ لاَ نَعْرِفُهُ إِلاَّ مِنْ هَذَا الْوَجْهِ .

٣٧٢٦ – حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُنْذِرِ الْكُوفِيُّ . حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنِ الأَجْلَحِ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ قَالَ : دَعَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيًّا يَوْمَ الطَّائِفِ فَانْتَجَاهُ ، فَقَالَ النَّاسُ : لَقَدْ طَالَ نَجْوَاهُ مَعَ ابْنِ عَمِّهِ ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مَا انْتَجَيْتُهُ وَلَكِنَّ اللهَ انْتَجَاهُ .

قَالَ أَبُو عِيسَى : هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ لاَ نَعْرِفُهُ إِلاَّ مِنْ حَدِيثِ الأَجْلَحِ .

وَقَدْ رَوَاهُ غَيْرُ ابْنِ فُضَيْلٍ أَيْضًا عَنِ الأَجْلَحِ .

وَمَعْنَى قَوْلِهِ : وَلَكِنَّ اللهَ انْتَجَاهُ . يَقُولُ : اللهُ أَمَرَنِي أَنْ أَنْتَجِيَ مَعَهُ .

٣٧٢٧ – حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُنْذِرِ . حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ سَالِمِ ابْنِ أَبِي حَفْصَةَ عَنْ عَطِيَّةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ

◈ तिर्मिज़ी में है:

→ हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं: ताइफ़ के दिन आप ﷺ ने हज़रत अली ﷺ को बुलाया और बहुत देर तक उनसे सरगोशी की, बाज़ लोगों ने कहा: आप ﷺ ने अपने चचाज़ाद भाई के साथ लंबी सरगोशी की, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: मैंने उस से सरगोशी नहीं की बल्कि अल्लाह ﷻ ने की, (या'नी मैंने अल्लाह ﷻ के हुक्म से की)।

→ **इमाम तिर्मिज़ी ﷺ ने फ़रमाया है कि यह हदीस हसन ग़रीब है।**

# الكشف والبيان

المعروف

## تفسير الثعلبي

للإمام الهمام أبو إسحاق أحمد المعروف بالإمام الثعلبي

ت ٤٢٧هـ

دراسة وتحقيق

الإمام أبي محمد بن عاشور

مراجعة وتدقيق

الأستاذ نظير الساعدي

الجزء الثاني

دار إحياء التراث العربي

بيروت - لبنان



وقال الثعلبي: ورأيت في الكتب إن رسول الله ﷺ لما أراد الهجرة خلف علي بن أبي طالب بمكة لقضاء ديونه ورد الودايع التي كانت عنده فأمره ليلة خرج إلى الغار وقد أحاط المشركون بالدار أن ينام على فراشه ﷺ وقال له: «إتشح ببردي الحضرمي الأخضر، ونم على فراشي، فإنّه لا يخلص إليك منهم مكروه إنشاء الله، ففعل ذلك عليّ، فأوحى الله تعالى إلى جبرئيل وميكائيل إني قد آخيت بينكما وجعلت عمر أحدكما أطول من عمر الآخر فأيكما يؤثر صاحبه بالبقاء والحياة؟ فإختار كلاهما الحياة فأوحى الله تعالى إليهما: أفلا كنتما مثل علي بن أبي طالب ﷺ آخيت بينه وبين محمّد ﷺ فبات على فراشه [يفديه] نفسه ويؤثره بالحياة، إهبطا إلى الأرض فاحفظاه من عدوه، فنزلا فكان جبرئيل عند رأس علي وميكائيل عند رجليه، وجبرئيل ينادي: بخ بخ من مثلك يا بن أبي طالب، فنادي الله عزّ وجلّ الملائكة وأنزل الله على رسوله ﷺ وهو متوجه إلى المدينة في شأن علي ﷺ ﴿ومن النّاس من يشري نفسه ابتغاء مرضات الله﴾» [١٠٣][1].

قال ابن عبّاس: نزلت في علي بن أبي طالب حين هرب النبيّ ﷺ من المشركين إلى الغار مع أبي بكرالصديق ونام عليّ على فراش النبيّ ﷺ.

﴿يا أيها الذين آمنوا ادخلوا في السلم كافة﴾ نزلت في مؤمني أهل الكتاب عبد الله بن سلام النضري وأصحابه وذلك إنهم عظموا السبت وكرهوا لحم الابل وألبانها بعدما أسلموا وقالوا: يا رسول الله إن التوراة كتاب الله فدعنا فلنقم بها في صلاتنا بالليل فأنزل الله تعالى ﴿يا أيها الذين آمنوا ادخلوا في السلم كافة﴾ أي في الإسلام قاله قتادة والضحاك والسدي وابن زيد، يدلّ عليه قول الكندي: دعوت عشيرتي للسلم لما رأيتهم تولوا مدبرينا. أي دعوتهم إلى الإسلام لما إرتدوا، قال ذلك حين إرتدة كندة مع الأشعث بن قيس بعد وفاة رسول الله ﷺ. وقال طاووس: في الدين.

مجاهد: في أحكام أهل الإسلام وأعمالهم كافة أي جميعها. ربيع: في الطاعة.

سفيان الثوري: في أنواع البر كلها، وكلها متقاربة في المعنى وأصله من الاستسلام والانقياد ولذلك قيل للصلح سلم وقال زهير:

وقد قلتما إن ندرك السلم واسعاً بمال ومعروف من الأمر نسلم[2]

قال حذيفة بن اليمان: في هذه الآية الإسلام ثمانية أسهم: الصلاة سهم، والزكاة سهم،

---

(١) راجع أسد الغابة: ٤ / ٢٥، والمستدرك على الصحيحين: ٣ / ١٣٢، ومسند أحمد: ١ / ٣٣١، وتفسير الطبري: ٩ / ١٤٠.

(٢) تفسير الطبري: ٢ / ٤٤٠.

◈ **'तफ्सीर सआलबी'** में है :

→ सआलबी फ़रमाते हैं: मैंने किताबों में देखा है कि रसूलल्लाह ﷺ ने जब हिजरत का इरादा किया तो अपने क़र्ज़ और उन अमानतों को अदा करने के लिए जो आप ﷺ के पास थीं हज़रत अली رضی اللہ عنہ को मक्का में अपना जानशीन बनाया, आप ﷺ जिस रात ग़ार की तरफ गए तो हज़रत अली رضی اللہ عنہ को अपने बिस्तर पर सोने का हुक्म दिया, और फ़रमाया: 'मेरी सब्ज़ ख़ुज़रमी चादर ओढ़ लेना, और मेरे बिस्तर पर सोना, इन्शा अल्लाह ﷻ उनकी तरफ से तुम्हें कोई गज़नद नहीं पहुंचेगी', हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने ऐसा ही किया, अल्लाह ﷻ ने हज़रत जिब्राईल علیہ السلام और हज़रत मिकाइल علیہ السلام को वही भेजी कि 'मैंने तुम दोनों के दरमियान मवाख़ात करा दी है, और तुम में से एक की उम्र को दूसरे की उम्र से तवील रखा है, तो तुम में से कौन अपने साथी को ज़िन्दगी और बक़ा में तरजीह देगा ?' इन दोनों ने ज़िन्दगी को इख़्तियार किया, तो अल्लाह ﷻ ने दोनों की तरफ वही की : तुम अली बिन अबू तालिब رضی اللہ عنہ की तरह क्यों ना हुए!! मैंने उसके और मुहम्मद ﷺ के दरमियान मवाख़ात कराइ तो वह उनके बिस्तर पर सो गए अपनी जान को उन पर क़ुर्बान करते हुए और उन्हें ज़िन्दगी में तरजीह देते हुए, जाओ ज़मीन की तरफ, और उस (अली) رضی اللہ عنہ के दुश्मन से उसकी हिफाज़त करो', वह दोनों उतरे और जिब्राईल علیہ السلام हज़रत अली رضی اللہ عنہ के सरहाने खड़े हो गए और मिकाइल علیہ السلام पाँव के पास, और जिब्राईल علیہ السلام पुकार रहे थे: 'मुबारक हो, कौन तुम्हारे मिस्ल है ऐ इब्न अबी तालिब'! अल्लाह ﷻ ने फरिश्तों को पुकारा और अपने रसूल ﷺ पर जब कि आप ﷺ मदीना की तरफ जा रहे थे हज़रत अली رضی اللہ عنہ की शान में यह आयत उतरी ''ومن الناس من يشرى نفسه ابتغاء مرضات الله'' (और लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो अपनी जान को अल्लाह ﷻ की ख़ुशनूदी चाहते हुए बेच देते हैं)

→ हज़रत इब्न अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं:यह आयत हज़रत अली رضی اللہ عنہ के बारे में नाज़िल हुई जब कि नबी ﷺ हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ के साथ हिजरत करते हुए ग़ारे सौर पहुँचे और हज़रत अली رضی اللہ عنہ रसूलल्लाह ﷺ के बिस्तर पर सोये थे।